मूल्य ॥।) आने।] Price 12 annas.



अनुवाददीपिका।

अर्थात्

संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने की रीतियों का वर्णन।

प्रथम भाग।

वाराणसीस्थ राजकीय संस्कृत विद्यालय के अध्यापक

पण्डित शीतलाप्रसाद त्रिपाठी ने

बनाया।



SANSKRIT–HINDI COMPOSITION

BY

PANDIT SITALÂ PRASÂDA

SENIOR PROFESSOR SANSKRIT COLLEGE, BENARES.

Part I.

PRINTED AND PUBLISHED BY

E. J. LAZARUS & Co., BENARES.

UNDER THE DIRECTIONS OF THE DEPARTMENT OF PUBLIC INSTRUCTION, U. P. OF AGRA AND OUDH

1904.

मूल्य ॥।) आने।] Price 12 annas.







अनुवाददीपिका ।

अर्थात्

संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संकृत में अनुवाद करने की रीतियों का वर्णन ।

प्रथम भाग ।

वाराणसीस्थ राजकीय संस्कृत विद्यालय के अध्यापक

पण्डित शीतलाप्रसाद त्रिपाठी ने

बनाया ।



SANSKRIT–HINDI COMPOSITION

BY

PANDIT SITALÂ PRASÂDA

SENIOR PROFESSOR SANSKRIT COLLEGE, BENARES.

Part I.

PRINTED AND PUBLISHED BY

E. J. LAZARUS & Co., BENARES.

UNDER THE DIRECTIONS OF THE DEPARTMENT OF PUBLIC INSTRUCTION, U. P. OF AGRA AND OUDH

1903.

मूल्य ।।।) आने ।] Price 12 annas.





सूचना ।

संस्कृत पाठशालाओं के अध्यापकों को चाहिये कि प्रथमा परिक्षा के प्रथम विभाग अर्थात् चौथी श्रेणी के विद्यार्थियों को इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर उपसर्ग और अव्यय* रहित, प्रथम पाठ, मध्यम विभाग अर्थात् तीसरी श्रेणी के विद्यार्थियों को विभक्त्यर्थ† रहित दूसरा पाठ, और उच्च विभाग अर्थात् दूसरी और पहिली श्रेणी के विद्यार्थियों को विभक्त्यर्थ‡ रहित तीसरा और विभक्त्यर्थ§ रहित चौथा पाठ, पढ़ावें । और इस पहिली श्रेणी के विद्यार्थियों को इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर उन के निज पाठ के अन्त तक जितना पढ़ाया गया हो उस सब का अच्छा अभ्यास करावें । और पढ़ाने के समय संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने के लिये इस ग्रन्थ के वाक्यों से व्यतिरिक्त और भी सुगम २ वाक्य दिया करें जिस में उन की शक्ति बढ़े ।

प्रथमपरीक्षोत्तीर्ण मध्यमा परिक्षा के पहिले वर्ष के विद्यार्थियों को उपसर्ग अव्यय और सम्पूर्ण पाचवां पाठ, दूसरे वर्ष के विद्यार्थियों को दूसरे पाठ का विभक्त्यर्थ और सम्पूर्ण छठवां पाठ, तीसरे वर्ष के विद्यार्थियों को तीसरे पाठ का विभक्त्यर्थ और सम्पूर्ण सातवां पाठ, चौथे वर्ष के विद्यार्थियों को चौथे पाठ का विभक्त्यर्थ और सम्पूर्ण आठवां पाठ, पढ़ावें । और इन प्रत्येक वर्षों के विद्यार्थियों को भी इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर उन के निज २ पाठों के अन्त तक जितना पढ़ाया गया हो, प्रति वर्ष में, उस सम्पूर्ण का अच्छा अभ्यास करावें । और पूर्ववत् अनुवाद करने के लिये उत्तरोत्तर कुछ कठिन २ वाक्य भी दिया करें जिस में उन की शक्ति क्रम २ से बढ़ती जाय ।

* पृष्ठ १४ पंक्ति १ से पृष्ठ २० पंक्ति १४ तक उपसर्ग और अव्यय हैं ।
† पृष्ठ ५१ पंक्ति १४ से पृष्ठ ६० के अन्त तक विभक्त्यर्थ है ।
‡ पृष्ठ ७६ पंक्ति १ से पृष्ठ ८० के अन्त तक विभक्त्यर्थ है ।
§ पृष्ठ ९८ पंक्ति ५ से १०२पृष्ठ के अन्त तक विभक्त्यर्थ है ।



भूमिका ।

संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थी यद्यपि व्याकरण आदि शास्त्रों के अनेक ग्रन्थ पढ़ जाते हैं परन्तु संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने की बहुत ही अल्प सामर्थ्य रखते हैं। यदि उन को उक्त भाषाओं में से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने के लिये दो चार वाक्य भी दिये जायं तो उस की रीतियों के न जानने के कारण प्राय घबड़ा जाते हैं और यदि किसी प्रकार कुछ किया भी तो वह बहुधा अशुद्ध और असङ्गत होता है। इस परम न्यूनता के दूर करने के लिये वाराणसीस्थ राजकीय संस्कृतविद्यालय के प्रधानाधिपति विविधविद्याविचारवाचस्पति विद्वद्वर श्रीमान वेनिस साहेब महाशय के आज्ञानुसार मैंने इस ग्रन्थ के बनाने का आरम्भ किया और इस का नाम अनुवाददीपिका रक्खा। सम्प्रति इस का प्रथम भाग बन कर प्रकाशित हुआ है। इस भाग में संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के बहुत से ऐसे विषय लिखे गये हैं जो उन भाषाओं के परस्पर अनुवाद करने में अत्यन्त उपकारक हैं। यदि इस के पढ़ने से संस्कृत के छात्रों का कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपना परिश्रम सर्वथा सफल समझूंगा।



श्रीगणेशाय नमः ॥

अनुवाददीपिका ॥



सोरठा ।

हिय धरि नन्दकुमार, छात्रन के उपकार हित ।
बरनत मति अनुसार, कछुक रीति अनुवाद की ॥

इस पुस्तक में संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में उल्था करने की कुछ रीतें कही जायंगी ॥

संस्कृत के पण्डित छ कारक मानते हैं कर्त्ता कर्म्म करण सम्प्रदान अपादान और अधिकरण । परन्तु हिन्दी के वैयाकरण अपादान के आगे सम्बन्ध और अधिकरण के आगे सम्बोधन को जोड़ कर आठ कारक स्वीकार करते हैं ॥

संस्कृत में तीन लिङ्ग हैं पुलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक-लिङ्ग । परन्तु हिन्दी में दो ही लिङ्ग हैं पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग । संस्कृत के नपुंसकलिङ्ग के शब्द बहुधा हिन्दी के पुलिङ्ग शब्दों में अन्तर्गत हो जाते हैं ॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में शब्द के आगे सात विभक्तियां जोड़ी जाती हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी ॥

संस्कृत में तीन वचन हैं एकवचन द्विवचन और बहुवचन । परन्तु हिन्दी में दो ही वचन हैं एकवचन और बहुवचन । हिन्दी में बहुवचन ही से कहीं दो पदार्थ और कहीं दो से अधिक समझे जाते हैं । जैसे । बालकौ पठतः । लड़के पढ़ते हैं ।

बालकाः पठन्ति । लड़के पढ़ते हैं । यहां हिन्दी में बहुवचन ही से पहिले वाक्य में दो लड़के और दूसरे में दो से अधिक समझे जाते हैं । क्योंकि हिन्दी में द्विवचन नहीं होता । कहीं २ द्वित्वकी स्पष्टता के लिये विशेष्य के साथ "दोनों" अथवा "दो" शब्द को जोड़ते हैं । जैसे बालकौ क्रीड़तः । दोनों लड़के खेलते हैं । अथवा दो लड़के खेलते हैं । ऐसे ही कहीं २ बहुत्व की स्पष्टता के लिये "लोग" "सब" इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते हैं । जैसे । ब्राह्मणा भुञ्जते । ब्राह्मण लोग भोजन करते हैं । अश्वा धावन्ति । घोड़े सब दौड़ते हैं ॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में धातु दो प्रकार के होते हैं सकर्म्मक और अकर्मक । सकर्म्मक उस धातु को कहते हैं जिस के व्यापार और फल भिन्न २ स्थानों में हों । जैसे । यज्ञदत्तस्तण्डुलान् पचति । यज्ञदत्त चावल पकाता है । यहां पकाने का व्यापार अर्थात् काम यज्ञदत्त में है और उस का फल अर्थात् चावल का कोमल होना चावल में है । इस लिये संस्कृत में "पच" और हिन्दी में "पकाना" दोनों धातु सकर्म्मक हैं । और जिस के व्यापार और फल दोनों एक ही ठौर रहते हैं उस धातु को अकर्म्मक कहते हैं । जैसे । बालकः शेते । लड़का सोता है । यहां सोने का व्यापार अर्थात् काम लड़के में है और उसका फल भी लड़के ही में है । इस लिये संस्कृत में "शी" और हिन्दी में "सोना" दोनों धातु अकर्म्मक हैं ॥

संस्कृत में धातुओं को दश गणों में विभाग करते हैं । वे गण ये हैं । भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि और चुरादि । जो धातु जिस गण के आदि में पढ़ा रहता है वह उसी के नाम से पुकारा जाता है । हिन्दी में ऐसा विभाग नहीं है ॥

जैसे संस्कृत में सकर्म्मक धातु के आगे कर्ता और कर्म्म अर्थ में और अकर्म्मक धातु के आगे कर्त्ता और भाव अर्थ में लकार के स्थान में तिप् आदि प्रत्यय स्थापन करके कर्तृवाच्य-तिङन्तक्रिया कर्म्मवाच्यतिङन्तक्रिया और भाववाच्यतिङन्तक्रिया बनाई जाती हैं तैसे ही हिन्दी में भी कर्तृप्रधानक्रिया कर्म्मप्रधान-क्रिया और भावप्रधानक्रिया बनती हैं। भेद इतना है कि हिन्दी में लकारों का विधान नहीं होता॥

संस्कृत में कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया के धातु तीन प्रकार के होते हैं। परस्मैपदी आत्मनेपदी और उभयपदी। जिन धातुओं के आगे परस्मैपद अर्थात् तिप् आदि प्रत्यय स्थापन किये जाते हैं वे परस्मैपदी जिन के आगे आत्मनेपद अर्थात् त आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं वे आत्मनेपदी और जिन के आगे दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं वे उभयपदी कहाते हैं। हिन्दी में ये भेद नहीं हैं॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में क्रिया के मुख्य काल तीन हैं वर्त्तमान भूत और भविष्य। वर्त्तमान उस काल को कहते हैं जिस की क्रिया का आरम्भ तो हुआ हो पर उस की समाप्ति न हुई हो। जैसे। विष्णुमित्रो लिखति। विष्णुमित्र लिखता है। इस से ज्ञात होता है कि विष्णुमित्र ने लिखने का आरम्भ तो किया है पर उस का लिखना अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। अर्थात् वह लिखता जाता है। भूत उस काल को कहते हैं जिस की क्रिया की समाप्ति हुई हो। जैसे। यज्ञदत्तोऽलेखीत्। यज्ञदत्त ने लिखा। इस से समझ पड़ता है कि यज्ञदत्त ने लिखना समाप्त किया। भविष्य उस काल को कहते हैं जिस की क्रिया का आरम्भ होनेवाला हो। जैसे। रामदत्तो लेखिष्यति। रामदत्त लिखेगा। इस से प्रकाश होता है कि रामदत्त लिखने का आरम्भ करेगा॥

जैसे संस्कृत में जहां कर्ता का वाचक "युष्मद्" शब्द रहता है वहां कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया में मध्यमपुरुष जहां "अस्मद्" शब्द रहता है वहां उत्तमपुरुष और जहां उन दोनों से भिन्न कोई शब्द रहता है वहां प्रथमपुरुष होता है तैसे ही हिन्दी में जहां कर्त्ता का बोधक "तूं" शब्द रहता है वहां कर्तृप्रधानक्रिया में मध्यमपुरुष जहां "मैं" शब्द रहता है वहां उत्तमपुरुष और जहां उन दोनों से भिन्न कोई शब्द रहता है वहां प्रथमपुरुष होता है। और दोनों भाषाओं में कर्ता के अनुसार उक्त क्रियाओं के वचन होते हैं। अर्थात् संस्कृत में यदि कर्ता एकवचनान्त हो तो क्रिया एकवचनान्त यदि कर्ता द्विवचनान्त हो तो क्रिया द्विवचनान्त यदि कर्ता बहुवचनान्त हो तो क्रिया बहुवचनान्त होती है। और हिन्दी में यदि कर्त्ता एकवचनान्त हो तो क्रिया एकवचनान्त यदि कर्ता बहुवचनान्त हो तो क्रिया बहुवचनन्त होती है ॥

संस्कृत में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया के रूप नहीं पलटते। परन्तु हिन्दी में विधिक्रिया को और सम्भावनाक्रिया को और होना धातु की है, हैं, हो, हूं इन चार क्रियाओंको छोड़ कर इतर सकल कर्तृप्रधान क्रियाओं के रूप बदल जाते हैं। जैसे। बालकः पठति। लड़का पढ़ता है। बालिका पठति। लड़की पढ़ती है। यहां संस्कृत में कर्त्ता के लिङ्ग के अनुसार "पठति" क्रिया का रूप नहीं बदला। परन्तु हिन्दी में जहां पुल्लिङ्ग कर्ता है वहां "पढ़ता है" और जहां स्त्रीलिङ्ग कर्ता है वहां "पढ़ती है" होगया ॥

पहिला पाठ।

कर्त्ता कारक।

कर्ता उसे कहते हैं जिस में व्यापार हो अर्थात् जो प्रधानक्रिया को करे। जैसे। यज्ञदत्तः पचति। यज्ञदत्त पकाता है।

यहां यज्ञदत्त कर्त्ता है । क्योंकि पकाने का काम अर्थात् चूल्हे में लकड़ी रखना इत्यादि उसी के अधीन है ।

संस्कृत में कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया और हिन्दी में कर्तृ-प्रधानक्रिया के कर्त्ता के आगे प्रथमा विभक्ति जोड़ी जाती है । संस्कृ में प्रथमा विभक्ति के बहुधा विसर्ग आदि चिन्ह रहते हैं। परन्तु हिन्दी में उस का कोई चिन्ह नहीं रहता । जैसे । उक्त उदाहरण में संस्कृत में यज्ञदत शब्द के आगे विसर्ग चिन्ह है पर हिन्दी में उस का कोई चिन्ह नहों है। कभीं २ ने चिन्ह आता है इस की व्यवस्था आगे लिखेंगे ।

संस्कृत में प्रथमा विभक्ति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सु	औ	जस्

प्रथम आदि पुरुषों के सर्वनाम ॥

संस्कृत में तद् युष्मद् और अस्मद् शब्द हिन्दी में वह तूं और मैं शब्द ॥

पुल्लिङ्ग ॥

	प्र॰ पु॰	म॰ पु॰	उ॰ पु॰
एक॰	सः	त्वम्	अहम्
एक॰	वह	तूं	मैं
द्वि॰	तौ	युवाम्	आवाम्
बहु॰	वे दोनों	तुम दोनों	हम दोनों
बहु॰	ते	यूयम्	वयम्
बहु॰	वे	तुम	हम

ऊपर लिखे हुए शब्दों में से संस्कृत में युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में भी वैसे ही

होते हैं जैसे पुल्लिङ्ग में। हिन्दी में समस्त सर्वनामों के रूप पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में समान होते हैं॥

स्त्रीलिङ्ग।

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	सा	पुल्लिङ्गवत्	पुल्लिङ्गवत्
एकव॰	वह	"	"
द्विव॰	ते	"	"
बहुव॰	वे दोनों	"	"
बहुव॰	ताः	"	"
बहुव॰	वे	"	"

नपुंसकलिङ्ग।

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	तत्	पुल्लिङ्गवत्	पुल्लिङ्गवत्
एकव॰	वह	"	"
द्विव॰	ते	"	"
बहुव॰	वे दोनों	"	"
बहुव॰	तानि	"	"
बहुव॰	वे	"	"

संस्कृत में अस धातु। अदादि। परस्मैपदी। अकर्म्मक। वर्तमान काल। लट् लकार। कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया। हिन्दी में होना धातु। अकर्म्मक। वर्तमान काल। कर्तृप्रधानक्रिया।

संस्कृत में प्रथम आदि पुरुषों के परस्मैपदसञ्ज्ञक प्रत्यय।

	प्रथम पु॰	मध्यम पु.	उत्तम पु॰
एकव॰	तिप्	सिप्	मिप्

द्विव.	तस्	थस्	वस्
बहुव.	झि	थ	मस्

क्रियाओं के रूप ।

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	अस्ति	असि	अस्मि
एकव.	है	है	हूं
द्विव.	स्तः	स्थः	स्वः
बहुव.	हैं	हो	हैं
बहुव.	सन्ति	स्थ	स्मः
बहुव.	हैं	हो	हैं

जैसे संस्कृत में ऊपर लिखी हुई क्रियाओं के रूप कर्त्ता के लिङ्ग के अनुसार नहीं पलटते वैसे ही हिन्दी में भी नहीं पलटते । इस लिये एक २ संस्कृत क्रिया के नीचे एक ही एक हिन्दी क्रिया लिखी गई हैं । क्योंकि पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में उन के रूप तुल्य होते हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽस्ति	त्वमसि	अहमस्मि
तौ स्तः	युवां स्थः	आवां स्वः
ते सन्ति	यूयं स्थ	वयं स्मः

स्त्रीलिङ्ग ।

सास्ति	त्वमसि	अहमस्मि
ते स्तः	युवां स्थः	आवां स्वः
ताः सन्ति	यूयं स्थ	वयं स्मः

नपुंसकलिङ्ग ।

तदस्ति	त्वमसि	अहमस्मि
ते स्तः	युवां स्थः	आवां स्वः
तानि सन्ति	यूयं स्थ	वयं स्मः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

संस्कृत में भू धातु। भ्वादि। हिन्दी में होना धातु।

	प्रथम पु॰	मध्यम पु.	उत्तम पु॰
एकव॰	भवति	भवसि	भवामि
एकव॰	होता है	होता है	होता हूं
एकव.	होती है	होती है	होती हूं
द्विव.	भवतः	भवथः	भवावः
बहुव॰	होते हैं	होते हो	होते हैं
बहुव॰	होती हैं	होती हो	होती हैं
बहुव॰	भवन्ति	भवथ	भवामः
बहुव॰	होते हैं	होते हो	होते हैं
बहुव.	होती हैं	होती हो	होती हैं

संस्कृत में ऊपर लिखी हुई क्रियाओं के रूप कर्त्ता के लिङ्ग के अनुसार नहीं बदलते। परन्तु हिन्दी में यदि कर्त्ता पुल्लिङ्ग हो तो एकवचन में क्रिया के पूर्वभाग के अन्त का आकार वैसा ही बना रहता है बहुवचन में उस को ए होजाता है। और यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो एकवचन और बहुवचन दोनों में उस को दीर्घ ईकार होता है। इस कारण संस्कृत की एक एक क्रिया के नीचे हिन्दी की दो २ क्रिया लिखी गई हैं। एक पुल्लिङ्ग की दूसरी स्त्रीलिङ्ग की। वाक्यरचना में यथा उचित प्रयोग करना चाहिये।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह होता है	तूं होता है	मैं होता हूं
वे दोनों होते हैं	तुम दोनों होते हो	हम दोनों होते हैं
वे होते हैं	तुम होते हो	हम होते हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

वह होती है	तूं होती है	मैं होती हूं
वे दोनों होती हैं	तुम दोनों होती हो	हम दोनों होती हैं
वे होती हैं	तुम होती हो	हम होती हैं

नपुंसक के बदले में पुल्लिङ्ग ।

वह होता है	तूं होता है	मैं होता हूं
वे दोनों होते हैं	तुम दोनों होते हो	हम दोनों होते हैं
वे होते हैं	तुम होते हो	हम होते हैं

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो ।

संस्कृत में कृ धातु । तनादि । उभयपदी । सकर्म्मक । हिन्दी में करना धातु । सकर्म्मक ।

परस्मैपदी के रूप ॥

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	करोति	करोषि	करोमि
एकव॰	करता है	करता है	करता हूं
एकव॰	करती है	करती है	करती हूं
द्विव॰	कुरुतः	कुरुथः	कुर्वः
बहुव॰	करते हैं	करते हो	करते हैं

बहुव॰	करती हैं	करती हो	करती हैं
बहुव॰	कुर्वन्ति	कुरुथ	कुर्म्मः
बहुव॰	करते हैं	करते हो	करते हैं
बहुव॰	करती हैं	करती हो	करती हैं

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि
तौ कुरुतः	युवां कुरुथः	आवां कुर्वः
ते कुर्वन्ति	यूयं कुरुथ	वयं कुर्म्मः

स्त्रीलिङ्ग ।

सा करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि
ते कुरुतः	युवां कुरुथः	आवां कुर्वः
ताः कुर्वन्ति	यूयं कुरुथ	वयं कुर्म्मः

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि
ते कुरुतः	युवां कुरुथः	आवां कुर्वः
तानि कुर्वन्ति	यूयं कुरुथ	वयं कुर्म्मः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

संस्कृत में एध धातु । भ्वादि । आत्मनेपदी । अकर्म्मक । हिन्दी में बढ़ना धातु । अकर्म्मक ॥

संस्कृत में प्रथम आदि पुरुषों के आत्मनेपदसञ्ज्ञक प्रत्यय ।

	प्रथम पु	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	त	थास्	इट्
द्विव॰	आताम्	आथाम्	वहि
बहुव॰	झ	ध्वम्	महिङ्

क्रियाओं के रूप।

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	एधते	एधसे	एधे
एकव॰	बढ़ता है	बढ़ता है	बढ़ता हूं
एकव॰	बढ़ती है	बढ़ती है	बढ़ती हूं
द्विव॰	एधेते	एधेथे	एधावहे
बहुव॰	बढ़ते हैं	बढ़ते हो	बढ़ते हैं
बहुव॰	बढ़ती हैं	बढ़ती हो	बढ़ती हैं
बहुव॰	एधन्ते	एधध्वे	एधामहे
बहुव॰	बढ़ते हैं	बढ़ते हो।	बढ़ते हैं
बहुव॰	बढ़ती हैं	बढ़ती हो।	बढ़ती हैं

हिन्दी वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

वह बढ़ता है	तूं बढ़ता है	मैं बढ़ता हूं
वे दोनों बढ़ते हैं	तुम दोनों बढ़ते हो	हम दोनों बढ़ते हैं
वे बढ़ते हैं	तुम बढ़ते हो।	हम बढ़ते हैं

स्त्रीलिङ्ग।

वह बढ़ती है	तूं बढ़ती है	मैं बढ़ती हूं
वे दोनों बढ़ती हैं	तुम दोनों बढ़ती हो।	हम दोनों बढ़ती हैं
वे बढ़ती हैं	तुम बढ़ती हो।	हम बढ़ती हैं

नपुंसक के बदले पुल्लिङ्ग।

वह बढ़ता है	तूं बढ़ता है	मैं बढ़ता हूं
वे दोनों बढ़ते हैं	तुम दोनों बढ़ते हो।	हम दोनों बढ़ते हैं
वे बढ़ते हैं	तुम बढ़ते हो।	हम बढ़ते हैं

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत उल्था करो।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द।

राम=राम।

एक द्वि बहु

रामः। रामौ रामाः।

राम। दोनों राम। राम।

सर्व=सब।

सर्वः। सर्वौ। सर्वे।

एक=एक।

एकः।

संख्यावाची नित्य एकवचनान्त।

द्वि=दो।

द्वौ।

नित्य द्विवच०।

उभ=दो।

उभौ।

नित्य द्विवच०

अनेक=कई एक।

अनेके।

नित्य बहुवच।

त्रि=तीन।

त्रयः।

नित्य बहुवच०।

कतर= दो में से कौन।

कतरः। कतरौ। कतरे।

कतम=बहुतों में से कौन।

कतमः। कतमौ। कतमे।

अन्य=दूसरा।

अन्यः। अन्यौ। न्ये।

अन्यतर=दो में से एक।

अन्यतरः। अन्यतरौ। अन्यतरे।

इतर=दूसरा।

इतरः। इतरौ। इतरे।

पूर्व=अगला। पूरब का।

पूर्वः। पूर्वौ। पूर्वे। पूर्वाः।

मुनि=मुनि।

मुनिः। मुनी। मुनयः।

पति=स्वामी।

पतिः। पती। पतयः।

सखि=मित्र।

सखा। सखायौ। सखायः।

कति=के। कितने।

कति।

नित्य बहुवच०।

सुधी=पण्डित।

सुधीः। सुधियौ। सुधियः।

साधुः=सज्जन।

साधुः। साधू। साधवः।

स्वयम्भू=ब्रम्हा।

स्वयम्भूः। स्वयम्भुवौ। स्वयम्भुवः।

दातृ=दाता ।
दाता । दातारौ । दातारः ।

गो=बैल, स्त्रीलिङ्ग में गो=गाय गौ ।
गौः । गावौ । गावः ।

भ्रातृ-भाई ।
भ्राता । भ्रातरौ । भ्रातरः ।

धातु ॥

स्निह· दिवा· पर·अक·=प्रीति क· । स्निह्यति । स्निह्यतः । स्निह्यन्ति ।

सृज· तुदा· परस्मै·सक· सिरजना । सृजति । सृजतः । सृजन्ति ।

दा जुहो· उभय· सक=देना । ददाति । दत्तः । ददति ।

विद· अदा· पर· सक·=जानना । वेत्ति । वित्तः । विदन्ति ।

जल्प· भ्वा· परस्मै· सक·=बोलना । जल्पति । जल्पतः । जल्पन्ति ।

दिश· (उपपूर्वक·) तुदा·उभय·सक· =उपदेश क· । उपदिशति । उपदिशतः । उपदिशन्ति ।

चर·भ्वा·पर·सक=चलना । चरना । चरति । चरतः । चरन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

रामोऽस्ति । सर्वो भवति अनेके सन्ति । मुनिः करोति । पतिरेधते । सखा स्निह्यति । कति सन्ति । सुधीर्वेत्ति । साधुरुपदिशति । स्वयम्भूः सृजति । दाता ददाति भ्राता जल्पति । गौश्चरति । रामौ भवतः । मुनय उपदिशन्ति । साधवो जल्पन्ति । त्रयो भवन्ति । दातार एधन्ते । सर्वे सन्ति । पतयः स्निह्यन्ति । द्वौ स्तः । सखायौ भवतः । रामौ कुरुतः । मुनी वित्तः । दातारौ दत्तः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ॥

स्मरण रखना चाहिये कि भू आदि धातुओं के जो सत्ता अर्थात् होना आदि अर्थ लिखे हैं वे उपलक्षणमात्र हैं । स्थलविशेष में उन के और भी अर्थ होते हैं । जैसे । यागात् स्वर्गो भवति । यज्ञ से स्वर्ग होता है । यहां भू. धातु का अर्थ उत्पन्न होना है ॥

बहुत स्थानों में उपसर्गों के योग से धातुओं के अर्थ बदल जाते हैं। जैसे। भू धातु का अर्थ होना है परन्तु प्र उपसर्ग के संबन्ध से उस का अर्थ समर्थ होना हो जाता है। जैसे। यज्ञदत्त: प्रभवति। यज्ञदत्त समर्थ होता है। इत्यादि॥

उपसर्ग।

प्र=प्रकर्ष।
परा=विपरीत। उलटा।
अप=वियोग। त्याग।
सम्=भली भांति।
अनु=पीछे।
अव=निश्चय। अनादर।
निस्=निषेध। निश्चय।
निर्=निषेध। निश्चय। बाहर होना।
दुस्, दुर्=दुष्ट। निषेध। निन्दा।
वि=विगत। विशेष।
आङ्=थोड़ा। अभिव्याप्ति। मर्य्यादा।
नि=अत्यन्त।
अधि=अधिकता। अतिशय।
अपि=भी। प्रश्न।
अति=अतिशय। प्रशंसा।
सु=अच्छा। अत्यन्त। विना श्रम।
उद्=ऊपर। उत्कर्ष।
अभि=सम्मुख। चारो ओर से।
प्रति=सम्मुख। बदले में।
परि=सब ओर। छोड़ कर।
उप=समीप।

इन उपसर्गों के और भी अर्थ होते हैं वे आगे स्पष्ट होंगे।

अव्यय॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में बहुत से शब्द ऐसे हैं जिन में लिङ्ग संख्या और कारक के चिन्ह नहीं पाये जाते उन को अव्यय कहते हैं। जैसे।

स्वर्=स्वर्ग। परलोक।
अन्तर्=भीतर। चित्त।
प्रातर्=सबेरा।
पुनर्=फिर। विशेष
सनुतर्=गुप्त हो.।
उच्चैस्=ऊंचा। बड़ा।

नीचैस्=नीचा। अल्प। छोटा।
शनैस्=धीरे २। देर करके।
ऋधक्=सत्य। धीरे २।
ऋते=छोड़ कर। बिना।
युगपद्=एक ही काल में।
आरात्=दूर। समीप।
पृथक्=भिन्न। अनेक रूप। विना।
ह्यस्=पिछला दिन।
श्वस्=आगामी दिन।
दिवा=दिन।
रात्रौ=रात।
सायम्=सांझ। दिन का अन्त।
चिरम्=बहुत काल।
मनाक्, ईषत् } थोड़ा।
जोषम्=सुख। चुपचाप।
तूष्णीम्=चुपचाप। मौन।
बहिस्, अवस् } बाहर। बाहर का।
समया=समीप। मध्य।
निकषा=समीप।
स्वयम्=आप ही।
वृथा=व्यर्थ। निरर्थक।
नक्तम्=रात।
नञ्=निषेध। अभाव।

हेतौ=कारण।
इद्धा=प्रकाश।
अद्धा=स्पष्ट। निश्चय। साक्षात्।
सामि=आधा। जुगुप्सित।
वतिप्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय होते हैं। जैसे। ब्राह्मणवत्। क्षत्रियवत्। इत्यादि।
सना, सनत्, सनात् } नित्य।
उपधा=भेद।
तिरस्=अन्तर्धान। तिर्छा। अनादर।
अन्तरा=मध्य। विना।
अन्तरेण=छोड़ कर। विना।
ज्योक्=बहुत काल। प्रश्न। शीघ्र। अब।
कम्=जल। माथा। निन्दा। सुख।
शम्=सुख।
सहसा=अचानक। अविचार से।
विना=छोड़ कर।
नाना=अनेक। विना।
स्वस्ति=मङ्गल। स्वीकारसूचक।
स्वधा=पितरों को देने में।
अलम्=भूषण। बस। सामर्थ्य। निवारण। निषेध।

वषट्
श्रौषट् } देवताओं को हविर्दान में।
वौषट्

अथ=अनन्तर। आरम्भ। प्रश्न विकल्प।
आम्=शीघ्र। अल्प।
अन्यत्=अन्य। आम्=स्वीकार। हां।
अस्ति=होना। प्रतान्=ग्लानि। थकाहट।
उपांशु=अप्रकाश उच्चारण। गोप्य। प्रशान्=समान।
क्षमा=सहना। प्रतान् =विस्तार।
विहायसा=आकाश।
दोषा=रात।

मा
माङ् } निषेध। शङ्का।

मृषा
मिथ्या } झूठ।

मुधा=व्यर्थ।
पुरा=पहिले। पूर्व काल में।

यह स्वरादि आकृतिगण है अर्थात् इस रूप के और भी जो शब्द मिलें उन को भी अव्यय जानो। जैसे।

मिथो
मिथस् } एकान्त। साथ। अन्योन्य।

कामम्=स्वच्छन्दता।
प्रकामम्= अतिशय।
प्रायस्=बहुतायत से। बहुधा। भूयस्=फिर।
मुहुस्=फिर फिर। वार वार। साम्प्रतम्=उचित। अब।
प्रबाहुकम्=समान काल। ऊपर। परम्=किन्तु।
आर्य्यहलम्=बलात्कार से। साक्षात्=प्रत्यक्ष।
अभीक्ष्णम्=पुनः पुनः। अत्यन्त। साचि=तिर्छा।

सह
साकम् } साथ।
सार्द्धम्

सत्यम्=कुछ स्वीकार।

मङ्क्षु
आशु } शीघ्र।

नमस्=प्रणाम। संवत्=वर्ष।
हिरुक्=छोड़ कर। अवश्यम्= निश्चय।
धिक्= निन्दा। धिक्कारना। उषा= रात।

झटिति, झगिति, तरसा } शीघ्र ।

सुष्ठु=अच्छा ।

दुष्ठु=बुरा ।

सु=अच्छा ।

कु=निकम्मा । थोड़ा ।

अञ्जसा=यथार्थ । शीघ्र ।

मिथु=दोनों ।

अस्तम्=विनाश ।

स्थाने=उचित ।

वरम्=कुछ अच्छा ।

सुदि=शुक्ल पक्ष ।

वदि=कृष्ण पक्ष ।

इत्यादि ।

च=और । अर्थात् समुच्चय, अन्वाचय, इतरेतरयोग, समाहार ।

वा=विकल्प । उपमा । निश्चय ।

ह=प्रसिद्धि ।

अह=पूजा ।

एव=निश्चय । अनिश्चय ।

एवम्=ऐसे ही ।

नूनम्=निश्चय । वितर्क ।

शश्वत्=पुनःपुनः । नित्य । साथ ।

कूपत्=प्रश्न । प्रशंसा ।

कुवित्=बाहुल्य । प्रशंसा ।

नेत्=शङ्का । निषेध । विचार । समुच्चय ।

चेत्=यदि ।

चण्=यदि ।

कच्चित्=प्रश्न ।

यच=अमर्ष । निन्दा । आश्चर्य्य । अनिश्चय ।

नह=प्रत्यारम्भ ।

हन्त । हर्ष । खेद । कृपा । वाक्यारम्भ ।

माकिः, माकीम्, नकिः } छोड़ कर ।

यावत्, तावत् } समग्रता । अवधि । परिमाण । निश्चय ।

त्वै=विशेष । वितर्क ।

[समुच्चय । द्वै=वितर्क ।

रै=दान । अनादर ।

तुम्=तुकारना ।

तथाहि=देखो ।

खलु=निषेध । वाक्यालङ्कार । निश्चय ।

किल=वार्ता । मिथ्या ।

स्म=भूतकाल सूचक । पादपूरण ।

आदह=आरम्भ । हिंसा । निन्दा ।

जो शब्द उपसर्ग विभक्ति और स्वर के तुल्य हों उनको भी अव्यय जानो। जैसे। अवदत्तम्, यहां अव। अहं युः, अस्ति चीरा, यहां अहं और अस्ति। अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ, यहां अकार आदि वर्ण, क्रम से उपसर्ग विभक्ति और स्वर के सदृश हैं। वस्तुतः उपसर्ग विभक्ति और स्वर नहीं हैं।

पशु=भली भांति।
शुकम्=शीघ्र।
यथाकथा च=अनादर।
पाट्, प्याट्, अङ्ग, हैं, हे, भोः, अये — सम्बोधन में।
घ=हिंसा। विपरीत क्रम। पादपूरण।
विषु=अनेक।
एकपदे=अकस्मात्।
पुत्=कुत्सा निन्दा।
आतः=इस से भी।

—शब्दों को भी अव्यय जानो। जैसे।
यत्, तत् =हेतु।
आहोस्वित्-अथवा।
सीम=सब ओर से होना।
सुकम्=अतिशय।
अनुकम्=वितर्क्क।
शम्बद्=अन्तः करण। अनुकूलता।
व=पादपूरण। सादृश्य। की नाईं। तुल्य
दिष्ट्या=आनन्द।
चटु, चाटु =प्रिय वाक्य।
हूम्=घुड़कना।
इव=सादृश्य।
अद्यत्वे=अब।

यह चकार आदि भी आकृतिगण इति=कि। इस प्रकार से। है। अर्थात् इस रूप के और— समाप्ति। हेतु।

जिन तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों के आगे सब विभक्ति न आवें अर्थात् एकवचन ही आवे उन को भी अव्यय कहते हैं। इन तद्धित

प्रत्ययों का परिगणन कौमुदी में यों किया है। जैसा। तसिल् प्रत्यय से लेकर पाशप् के पूर्व तक। शस् प्रत्यय से लेकर "समासान्ताः" इस सूत्र के पूर्व तक। अम्। आम्। कृत्वसुच। सुच। धा। तसि। वति। ना नाञ्। उन में से थोड़े प्रसिद्ध शब्द नीचे लिखते हैं।

कुतः=कहां से। क्यों।
यतः=जहां से। क्योंकि।
ततः=वहां से। उस से।
अतः=यहां से। इस से।
इतः=इस से। यहां से। इधर।
बहुतः=बहुतों से।
परितः=सब ओर से।
अभितः=दोनों ओर से।
कुत्र=कहां। किस में।
यत्र=जहां। जिस में।
तत्र=वहां। उस में।
अत्र=यहां। इस में।
बहुत्र=बहुतों में।
इह=यहां। इस में।
क्व=कहां। किस में।
सदा, सर्वदा=सब काल में। नित्य।
एकदा=एक समय।
अन्यदा=अन्य समय में।
कदा=कब। किस समय।
तदा=तब। उस समय।
एतर्हि=इस काल में।

अधुना=अब। इस समय।
इदानीम्=अब।
तदानीम्=तब।
यर्हि=जब।
तर्हि=तब। तो।
कर्हि=कब।
परेद्यवि=दूसरा दिन।
अद्य=आज।
पूर्वेद्युः=पिछला दिन।
अन्येद्युः=अन्य दिन।
उभयेद्युः=दोनों दिन।
तथा=उस प्रकार से। तैसे।
यथा=जिस प्रकार से। जैसे।
इत्थम्=इस प्रकार से। ऐसे।
कथम्=किस प्रकार से। कैसे।
बहुशः=बहुत।
जैसे। बहुशो ददाति।
बहुत देता है। इत्यादि।
अल्पशः थोड़ा।
जैसे। अल्पशो ददाति।
थोड़ा देता है। इत्यादि।
आदितः=आदिमें। पहिले।

मध्यतः=बीच में । पृष्ठतः=पीछे ।
अन्ततः=अन्त में । पार्श्वतः=दहिने । बांयें ।

मकारान्त और एजन्त जो कृत् प्रत्यय वह जिस शब्द के अन्त में हो उस को भी अव्यय कहते हैं। जैसे । स्मारं स्मारम्, बार बार स्मरण करके । यहां स्मृ धातु से णमुल् प्रत्यय हुआ है ॥ जीवसे, जीना । यहां जीव धातु से असे प्रत्यय है ॥ पिबध्यै, पीना । यहां पा धातु से शध्यै प्रत्यय है ॥

क्त्वा, तोसुन् और कसुन् ये प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में हों उन को भी अव्यय कहते हैं। जैसे । कृत्वा, करके । यहां कृधातु से क्त्वा प्रत्यय है ॥ उदेतोः, उदय । यहां उत्पूर्वक इण् धातु से तोसुन् प्रत्यय है ॥ विसृपः, गमन । यहां विपूर्वक सृप् धातु से कसुन् प्रत्यय है ॥

अव्ययीभाव समास को भी अव्यय कहते हैं । जैसे । अधिहरि, हरि में । इत्यादि ॥

विशेषण और विशेष्य ।

जिस के कहने से किसी वस्तु में कुछ विशेष अर्थात् भेद पाया जाय उसे विशेषण और जिस में वह विशेष पाया जाय उसे विशेष्य कहते हैं । जैसे । नीलमुत्पलम् । काला कमल । यहां काला विशेषण और कमल विशेष्य है । क्योंकि काले के कहने से कमल में विशेष अर्थात् और कमलों से भेद पाया जाता है ।

विशेषण प्राय विशेष्य के पूर्व रहता है ।

जहां कहीं केवल विशेषण रहता है वहां विशेष्य ऊपर से समझा जाता है । जैसे । मूर्खा दुःखमनुभवन्ति । मूर्ख दुख भोगते हैं । यहां मनुष्य इस विशेष्य का ऊपर से बोध होता है ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्राय जो लिङ्ग

वचन और विभक्ति विशेष्य में रहती हैं वेई लिङ्ग वचन और विभक्ति विशेषण में भी आती हैं। जैसे। उत्तमः पुरुषः। अच्छा पुरुष। उत्तमा स्त्री। अच्छी स्त्री। उत्तमं कुलम्। अच्छा कुल। धनवान् मनुष्य। धनी मनुष्य। धनवन्तौ मनुष्यौ। दोनों धनी मनुष्य। धनवन्तो मनुष्याः। धनी मनुष्य। सुन्दरो बालकः। सुन्दर बालक। सुन्दरं बालकम्। सुन्दर बालक को। सुन्दरेण बालकेन। सुन्दर बालक से। इत्यादि॥

संस्कृत में जहां विशेषण और विशेष्य का समास नहीं होता वहां उन दोनों के आगे बहुधा विभक्ति के चिह्न रहते हैं। परन्तु हिन्दी में विशेष्य ही के आगे वे चिह्न रहते हैं विशेषण के आगे उन का लोप हो जाता है। जैसे। नीलमुत्पलमानय। काले कमल को लाओ। यहां संस्कृत में नील और उत्पल इन दोनों शब्दों के आगे द्वितीया विभक्ति के एकवचन के चिह्न हल् मकार हैं। परन्तु हिन्दी में केवल कमल शब्द के आगे द्वितीया का चिह्न "को" है। काला शब्द के आगे उसका लोप हुआ है। हिन्दी में काले को कमल को लाओ यह बोलना अशुद्ध है। हिन्दी में पुल्लिङ्ग विशेष्य का यदि आकारान्त विशेषण हो तो कर्त्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के केवल बहुवचन में और इतर सकल विभक्तियों के दोनों वचनों में विशेषण के अन्त आकार को एकार हो जाता है। जैसे। भला बालक। भले बालक। भले बालक को। भले बालकों को। भले बालक से। भले बालकों से इत्यादि॥

यदि स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो सब विभक्तियों के दोनों वचनों में विशेषण के अन्त आकार को दीर्घ ईकार होता है। और इस ईकार में विभक्ति के वचनों के कारण कुछ विकार नहीं होता। जैसे। अच्छी घोड़ी। अच्छी घोड़ियां। अच्छी घोड़ी को। अच्छीघोड़ियों को। अच्छीघोड़ी

से । अच्छी घोड़ियों से । इत्यादि । हिन्दी में अच्छियां घोड़ियां यह बोलना अशुद्ध है । एक पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग विशेष्य के जितने आकारान्त विशेषण होंगे उन सब के लिये पूर्वोक्त नियम जानो । जैसे छोटा मोटा काला पिल्ला । छोटे मोटे काले पिल्ले । छोटे मोटे काले पिल्ले को । इत्यादि । छोटी मोटी काली लाठी। छोटी मोटी काली लाठियां । छोटी मोटी काली लाठी को इत्यादि ।

आकारान्त से भिन्न समस्त विशेषण ज्यों के त्यों बने रहते हैं उन में कुछ विकार नहीं होता । जैसे। सुन्दर लड़का। सुन्दर लड़के । सुन्दर लड़के को । इत्यादि ।

क्रियाविशेषण ।

जिस के कहने से किसी क्रिया अर्थात् काम में कुछ विशेष पाया जाय उसे क्रियाविशेषण कहते हैं । जैसे । अश्वः शीघ्रं धावति । घोड़ा शीघ्र दौड़ता है । यहां शीघ्र इस के कहने से घोड़े के दौड़ने में शीघ्रता पाई जाती है ।

संस्कृत में क्रियाविशेषण में नपुंसकलिङ्ग और द्वितीया का एकवचन रहता है । जैसे । मन्दं व्रजति । धीरे चलता है । सुस्वरं पठति । अच्छे स्वर से पढ़ता है । मधुरं हसति । मधुर हंसता है । उच्चैर्वदति ।ऊंचे स्वर से बोलता है । सुखं स्वपिति । सुख से सोता है । इत्यादि ॥

उद्देश्य और विधेय ।

जिस के विषय में कुछ विधान करते हैं वह उद्देश्य और जो विधान किया जाता है वह विधेय कहलाता है । जैसे । सूर्य्यस्तपति । सूर्य्य तपता है । यहां सूर्य्य उद्देश्य और उस का तपना विधेय है । सूर्य्यो मन्दो भवति । सूर्य्य मन्द होता है । यहां सूर्य्य उद्देश्य और उस का मन्द होना विधेय है । ब्राह्मणः

शूद्रो भवति । ब्राह्मण शूद्र होता है । यहां ब्राह्मण उद्देश्य और उस का शूद्र होना विधेय है ।

वाक्य में सर्वदा उद्देश्यबोधक पद पहिले और विधेयबोधक पद उस के पीछे रहता है ।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमा=लक्ष्मी । रमा नाम स्त्री ।

रमा । रमे । रमाः ।

रमा । दोनों रमा । रमा ।

(सर्वा) ।

सर्वा सर्वे । सर्वाः ।

(त्रि) तिस्रः ।

मति=बुद्धि ।

मतिः । मती मतयः ।

नदी=नदी ।

नदी । नद्यौ । नद्यः ।

श्री=लक्ष्मी । शोभा ।

श्रीः । श्रियौ । श्रियः ।

स्त्री=स्त्री ।

स्त्री । स्त्रियौ । स्त्रियः ।

धेनु=दुधार गौ ।

धेनुः । धेनू धेनवः ।

वधूः=बहू ।

वधूः । वध्वौ । वध्वः ।

भ्रू=भौं ।

भ्रूः । भ्रुवौ । भ्रुवः ।

दुहितृ=लड़की । बेटी ।

दुहिता । दुहितरौ । दुहितरः ।

स्वसृ=बहन । भगिनी ।

स्वसा । स्वसारौ स्वसारः ।

द्यो=स्वर्ग । आकाश ।

द्यौः । द्यावौ । द्यावः ।

नौ=नाव ।

नौः । नावौ नावः ।

कोष ।

निर्म्मल=स्वच्छ । प्रसन्न=सन्तुष्ट ।

धातु ।

लस. विपूर्वक. भ्वा. पर. अक.=शो- भित हो. । विलास क. ।

विलसति । विलसतः । विलसन्ति ।

स्फुर. तुदा. पर. अक.=प्रकाशक. ।

स्फुरति । स्फुरतः । स्फुरन्ति ।

वृध. भ्वा. आत्म. अक.=बढ़ना ।

वर्द्धते । वर्द्धेते । वर्द्धन्ते ।

हृष॰ दिवा॰ परस्मै॰ अक॰=प्रसन्न हो॰ क्रीड़॰ भ्वा॰ पर॰ अक॰=खेलना।

हृष्यति। हृष्यतः। हृष्यन्ति। क्रीडति। क्रीडतः। क्रीडन्ति।

त्रप॰भ्वा॰ आत्म॰ अक॰=लजाना। स्था॰ भ्वा॰ पर॰ अक॰= रहना। खड़ा

त्रपते। त्रपेते। त्रपन्ते। रहना।

शुभ॰ भ्वा॰ आत्म॰ अक॰=शोभित हो॰। तिष्ठति। तिष्ठतः। तिष्ठन्ति।

शोभते। शोभेते शोभन्ते। गम्॰ भ्वा॰ पर॰ सक॰=चलना।

गच्छति। गच्छतः। गच्छन्ति।

संस्कृत वाक्य।

सर्वाः प्रसन्नाः सन्ति। रमा विलसति। मतिराशु स्फुरति। नदी शनैर्वर्द्धते। श्रीरेधते। स्त्री हृष्यति। धेनुश्चरति। वधूस्त्रपते। भ्रूः शोभते। दुहिता क्रीड़ति। स्वसा तिष्ठति। द्यौर्निर्मलास्ति। नौः शनैर्गच्छति। रमे तिष्ठतः। मतयो वर्द्धन्ते। नद्यो निर्मला भवन्ति। श्रियः शोभन्ते। तिस्रः स्त्रियस्तिष्ठन्ति। वध्वो हृष्यन्ति। स्वसारः क्रीडन्ति। नावो गच्छन्ति। तत्र स्त्रियो न सन्ति। वध्वौ क्व गच्छतः। अहं तत्र गच्छामि। त्वं कुत्र तिष्ठसि। अहं तत्र तिष्ठामि। धेनवः क्व चरन्ति॥

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द।

ज्ञान=ज्ञान।

ज्ञानम्। ज्ञाने। ज्ञानानि।

ज्ञान। दोनों ज्ञान। ज्ञान।

(सर्व)।

सर्वम्। सर्वे। सर्वाणि।

(तकर)

कतरत्। कतरे। कतराणि।

(कतम)

कतमत्। कतमे। कतमानि।

(अन्य)

अन्यत्। अन्ये। अन्यानि।

(अन्यतर)

अन्यतरत्। अन्यतरे। अन्यतराणि।

(इतर)
इतरत् । इतरे । इतराणि ।
(पूर्व)
पूर्वम् । पूर्वे । पूर्वाणि ।
वारि=जल ।
वारि । वारिणी । वारीणि ।
दधि=दही ।
दधि । दधिनी । दधीनि ।
मधु=सहत । पुष्परस । मद्य ।
मधु । मधुनी । मधूनि ।

कोष ।

दुग्ध- दूध । मधुर- मीठा ।

संस्कृत वाक्य ।

ज्ञानमस्ति । सर्वं मिथ्या भवति । कतरदस्ति । अन्यन्नास्ति । पूर्वं स्तः । वारि निर्मलं भवति । दुग्धं दधि भवति । निर्मलानि ज्ञानानि शोभन्ते । वारीणि शनैर्वर्द्धन्ते मधूनि । मधुराणि सन्ति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुह्=दूहनेवाला ।
धुक् । धुग् । दुहौ । दुहः
दूहनेवाला । दोनों दूहने-
वाले । दूहनेवाले ।
अनडुह्=बैल ।
अनड्वान् । अनड्वाहौ । अन-
ड्वाहः ।
चतुर्=चार ।
चत्वारः ।
नित्य बहुवचनान्त ।
पञ्चन्=पांच ।
पञ्च ।
नित्य बहुबच- ।
षष्=छः ।
षट् ।
नित्य बहुव- ।
अष्टन्=आठ ।
अष्टौ । अष्ट ।
नित्य बहुवच- ।
किम्=कौन । क्या ।
कः । कौ । के ।
कौन । कौन दोनों । कौन ।
इदम्=यह ।
अयम् । इमौ । इमे ।
यह । ये दोनों । ये ।

यत्=जो ।
य: । यौ । ये ।
जो । जो दोनों । जो ।

एतद्=यह ।
एष: । एतौ । एते ।
यह । ये दोनों । ये ।

अदस्=यह वह ।
असौ । अमू । अमी ।
यह । ये दोनों । ये ।
वह । वे दोनों । वे ।

सम्राज्=चक्रवर्ती ।
सम्राट् । सम्राड् । सम्राजौ ।
सम्राज: ।

भूभृत्=पर्वत । राजा ।
भूभृत् । भूभृतौ । भूभृत: ।

भवत्=आप ।
भवान् । भवन्तौ । भवन्त: ।

धीमत्=बुद्धिमान ।
धीमान् । धीमन्तौ धीमन्त: ।

गच्छत्=चलता हुआ ।
गच्छन् । गच्छन्तौ गच्छन्त: ।

प्रशाम्=शान्त ।
प्रशान् । प्रशामौ । प्रशाम: ।

बुध्=पण्डित ।
भुत् । भुद् । बुधौ बुध: ।

अग्निमथ्=आग मथनेवाला ।
अग्निमत् । अग्निमथौ ।
अग्निमथ: ।

प्राच्=भली भांति चलनेवाला ।
प्राङ् । प्राञ्चौ प्राञ्च: ।

प्राच्=भली भांति पूजनेवाला ।
प्राङ् । प्राञ्चौ । प्राञ्च: ।

उदच्=ऊपर गमन करनेवाला ।
उदङ् । उदञ्चौ । उदञ्च: ।

महत्=बड़ा । श्रेष्ठ ।
महान् । महान्तौ । महान्त: ।

महिमन्=महत्त्व । बड़ाई ।
महिमा । महिमानौ । महिमान: ।

यज्वन्=यज्ञ करनेवाला ।
यज्वा । यज्वानौ । यज्वान: ।

युवन्=जवान । युवा ।
युवा । युवानौ । युवान: ।

राजन्=राजा ।
राजा । राजानौ । राजान: ।

दण्डिन्=सन्यासी । दण्डधारी ।
दण्डी । दण्डिनौ । दण्डिन: ।

पथिन्=राह ।
पन्था: । पन्थानौ । पन्थान: ।

वेधस्=ब्रह्मा ।
वेधा: । वेधसौ । वेधस: ।

विद्वस्=पण्डित । गरीयान् । गरीयांसौ । गरीयांसः ।
विद्वान् । विद्वांसौ । विद्वांसः । पुमस्=पुरुष ।
गरीयस्=अत्यन्त भारी । श्रेष्ठ । पुमान् । पुमांसौ । पुमांसः ।

धातु ।

नद. भ्वा. पर. अक.=डकारना । सद. प्रपूर्वक. तुदा. पर. अक.=
नदति । नदतः । नदन्ति । प्रसन्न हो. । निर्म्मल हो. ।
शास. अदा. पर. सक.=शासन क. । प्रसीदति । प्रसीदतः । प्रसीदन्ति ।
शास्ति । शिष्टः । शासति । रक्ष. भ्वा. पर. सक.=पालन क. ।
चल. भ्वा. पर. अक.=हिलना । चलना । रक्षति । रक्षतः । रक्षन्ति ।
चलति । चलतः । चलन्ति । भ्रम. परिपूर्वक. भ्वा. उभ. अक.=
मृश. विपूर्वक. तुदा. पर. सक.= भ्रमण करना ।
विचार क. । परिभ्रमति । परिभ्रमतः ।
विमृशति । विमृशतः । विमृ- परिभ्रमन्ति ।
शन्ति । वृत. भ्वा. आत्म. अक.=होना ।
भुज. रुधा. आत्मने. सक.=खाना । वर्त्तते । वर्त्तेते । वर्त्तन्ते ।
भुङ्क्ते । भुञ्जाते । भुञ्जते । अर्ह. भ्वा. पर. अक.=पूजित होना ।
अर्हति । अर्हतः । अर्हन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

धुगस्ति । अनड्वान् नदति । सम्राट् शास्ति । भूभृन्न चलति । धीमान् विमृशति । गच्छन् भुङ्क्ते । प्रशान् प्रसीदति । भुदुपदिशति । अग्निमत्तिष्ठति । प्राङ् शोभते । महानर्हति । महिमा वर्द्धते । यज्वा हृष्यति । युवा विलसति । राजा रक्षति । दण्डी परिभ्रमति । निर्म्मलः पन्थाः शोभते । वेधाः करोति । विद्वान् वेत्ति । गरीयान् पूज्यो भवति । पुमान् वर्त्तते । चत्वारः पुमांसः सन्ति । पञ्च साधवो भुञ्जते । षट् शास्त्राणि वर्त्तन्ते । अष्टौ दण्डिनो

गच्छन्ति । तत्र कोऽस्ति । अयं विद्वानस्ति । यो वेत्ति स करोति । एष क्रीडति । असौ यतते । धीमन्तो राजानः सम्यक् शासति । विद्वांसः सर्वत्र पूज्या भवन्ति । वयं न चलामः । ते विमृशन्ति । आवां रक्षावः । ते सर्वे पूज्याः सन्ति । त्वं क्व वर्त्तसे । वयं न परिभ्रमामः ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिव्=आकाश । स्वर्ग ।
द्यौः । दिवौ । दिवः ।
आकाश । दोनों आकाश ।
आकाश ।

(चतुर्)
चतस्रः ।

(किम्)
का । के । काः ।

(इदम्)
इयम् । इमे । इमाः ।

(यद्)
या । ये । याः ।

(एतद्)
एषा । एते । एताः ।

(अदस्)
असौ । अमू । अमूः ।

वाच्=वचन ।
वाक् । वाचौ । वाचः ।

स्रज्=माला ।
स्रक् । स्रग् । स्रजौ । स्रजः ।

त्विष्=दीप्ति । कान्ति ।
त्विट् । त्विड् । त्विषौ ।
त्विषः ।

गिर्=वाणी ।
गीः । गिरौ । गिरः ।

आपद्=विपत्ति ।
आपत् । आपदौ । आपदः ।

अप्=जल ।
आपः ।
नित्य बहुवच० ।

दिश्=दिशा ।
दिक् । दिग् । दिशौ । दिशः ।

धातु ।

स्तृ·प्रपूर्वक·भ्वा·पर· अक·=फैलना । नश·दिवा·पर·अक·=नष्ट हो· ।

प्रसरति । प्रसरतः । प्रसरन्ति । नश्यति । नश्यतः । नश्यन्ति ।

म्लै·भ्वा·पर·अक· = मुर्झाना ।

म्लायति । म्लायतः । म्लायन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

द्यौः शोभते । वाक् प्रसरति । स्रङ्म्लायति । त्विट् स्फुरति । गीर्विलसति । आपन्नश्यति । दिशः प्रसीदन्ति । चतस्रो दिशः सन्ति । इयं कास्ति । या दिङ्निर्मला भवति सा शोभते । एषा गीर्मधुरास्ति । असौ क्व गच्छति । त्वं कासि ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

(वार्)=जल ।

वाः । वारी । वारि ।

जल । दोनों जल । जल ।

(चतुर्)

चत्वारि ।

(किम्)

किम् । के । कानि ।

(इदम्)

इदम् । इमे । इमानि ।

(यद्)

यत् । ये । यानि ।

(एतद्)

एतत् । एते । एतानि ।

(अदस्)

अदः । अमू । अमूनि ।

(धीमत्)

धीमत् । धीमती । धीमन्ति ।

(महत्)

महत् । महती । महान्ति ।

जगत्=संसार ।

जगत् । जगती । जगन्ति ।

धामन्=गृह । स्थान । तेज ।

धाम । धामनी । धामानि ।

कर्म्मन्=कर्म्म । काम । कारबार ।

कर्म्म । कर्म्मणी । कर्म्माणि ।

अहन्=दिन ।
अह: । अहनी । अह्नी ।
अहानि ।

हविस्=घृत आदि होम की वस्तु ।
हवि: । हविषी । हवींषि ।

पयस्=जल । दूध ।
पय: । पयसी । पयांसि ।

धनुस्=धनुष ।
धनु: । धनुषी । धनूंषि ।

संस्कृत वाक्य ।

वा: शनैर्निर्म्मलं भवति । धीमत् कुले वर्द्धते । महद्धाम शोभते । जगन्नश्यति । कर्म्माणि न प्रसरन्ति । अहर्वर्द्धते । पयो मधुरमस्ति । अत्र हविर्नास्ति । धनु: स्फुरति । चत्वारि धामानि शोभन्ते । इदं किमस्ति । त्वं तत्र गच्छसि किम् । यदस्ति तद्भवति । इमानि दिनानि निर्म्मलानि सन्ति । एतत् किमस्ति । अद: पयो वर्त्तते ॥

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

दोनों राम करते हैं । सब हैं । दोनों मुनि जानते हैं । दोनों दाता देते हैं । सब होता है । राम है । मित्र प्रीति करता है । स्वामी बढ़ता है । पण्डित जानता है । ब्रह्मा सिरजता है । मुनि करता है । दोनों राम होते हैं । सज्जन उपदेश करता है । दाता देता है । कितने हैं । तीन होते हैं । सज्जन बोलते हैं । मुनि उपदेश करते हैं । भाई बोलता है । दाता बढ़ते हैं । बैल चरता है । स्वामी प्रीति करते हैं । दोनों मित्र होते हैं । कई एक हैं । दो हैं ॥

दुधार गौ चरती है । नाव धीरे २ चलती है । लक्ष्मी बढ़ती है । दुधार गौ कहां चरती है । सब प्रसन्न हैं । स्त्री प्रसन्न होती है । बुद्धि शीघ्र प्रकाश करती है । आकाश स्वच्छ है । रमा

विलास करती है। नदी धीरे २ बढ़ती है। तीन स्त्रियां रहती हैं। नदियां स्वच्छ होती हैं। बहन रहती है। लक्ष्मी बढ़ती है। भौं शोभित होती है। दोनों रमा रहती हैं। बहू प्रसन्न होती हैं। वहां स्त्रियां नहीं हैं। लड़की खेलती है। बुद्धि बढ़ती हैं। बहन खेलती हैं। दोनों बहू कहां जाती हैं। मैं वहां जाती हूं। नाव चलती हैं। तूं कहां रहती है। मैं वहां रहती हूं॥

सहत मीठे हैं। दूध दही होता है। ज्ञान है। जल धीरे २ बढ़ते हैं। स्वच्छ ज्ञान शोभित होते हैं। दही मीठे हैं। जल स्वच्छ होता है। सब झूठ होता है। दोनों में से कौन है। और कौन नहीं है। अगले दोनों हैं॥

पण्डित जानता है। यज्ञ करनेवाला प्रसन्न होता है। चलता हुआ खाता है। राजा रक्षा करता है। छ शास्त्र हैं। महत्त्व बढ़ता है। चक्रवर्त्ती शासन करता है। पण्डित उपदेश करता है। दूहनेवाला है। शान्त प्रसन्न होता है। बैल डकारता है। पर्वत नहीं हिलता। आग मथनेवाला खड़ा है। बुद्धिमान विचार करता है। दण्डी परिभ्रमण करता है। युवा विलास करता है। स्वच्छ राह शोभित होती है। पण्डित सब ठौर पूज्य होते हैं। ब्रह्मा करता है। जो जानता है वह करता है। अति श्रेष्ठ पूज्य होता है। पुरुष है। वहां कौन है। बुद्धिमान राजा भली भांति शासन करते हैं। हम दोनों रक्षा करते हैं। पांच सज्जन भोजन करते हैं। वे सब पूज्य हैं। यह खेलता है। हम नहीं चलते। आठ दंडी जाते हैं। चार पुरुष हैं। यह पण्डित है। यह लजाता है। वे विचार करते हैं। श्रेष्ठ पूजित होता है। भली भांति गमन करनेवाला शोभित होता है। हम भ्रमण नहीं करते। तूं कहां है॥

कान्ति प्रकाश करती है। विपत्ति नष्ट होती है। आकाश शोभित होता है। वाणी विलास करती है। माला मुर्झाती है। दिशा निर्म्मल होती हैं। वाणी फैलती है। यह कौन है। चार दिशा हैं। जो दिशा निर्म्मल होती है वह शोभित होती है। तूं कौन है। यह वाणी मीठी है। यह कहां जाती है॥

धनुष प्रकाश करता है। बड़ा गृह शोभित होता है। जल मीठा है। तूं वहां जाता है। क्या संसार नष्ट होता है। चार गृह शोभित होते हैं। जो है वह होता है। कारबार नहीं फैलते। यह क्या है। जल धीरे २ निर्म्मल होता है। दिन बढ़ता है। ये दिन निर्म्मल हैं। बुद्धिमान कुल बढ़ता है। यह क्या है। यह जल है। यहां होम की वस्तु नहीं है॥

इन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

हिन्दी शब्द।

हिन्दी में हलन्त शब्द नहीं होते केवल स्वरान्त होते हैं। हिन्दी शब्दों के अन्त में प्राय ये आठ स्वर रहते हैं अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ॥

हम ऊपर कह आये हैं कि हिन्दी में दो ही लिङ्ग हैं पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग। हिन्दी में एकारान्त शब्दों को छोड़ कर जो केवल पुल्लिङ्ग होते हैं शेष सकल स्वरान्त शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के भेद से प्रत्येक दो २ प्रकार के हैं॥

हिन्दी में पुल्लिङ्ग शब्दों में से केवल दीर्घ आकारान्त शब्दों के अन्त आकार को कर्त्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में एकार होता है। और स्त्रीलिङ्ग शब्दों में से ह्रस्व अकारान्त शब्दों के अन्त अकार को अनुनासिक एकार और दीर्घ आकारान्त शब्दों के अन्त आकार को अनुनासिक आकार और

ह्रस्व इकारान्त शब्दों के अन्त इकार के आगे यां और दीर्घ ईकारान्त शब्दों के अन्त ईकार को ह्रस्व इकार और उसके आगे यां होता है। शेष समस्त पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग स्वरान्त शब्द एकवचन और बहुवचन दोनों में ज्यों के त्यों बने रहते हैं अर्थात् उन के अन्त स्वर में कुछ विकार नहीं होता। जैसे॥

पुल्लिङ्ग।

एकवच.	बहुवच.
बालक	बालक
लड़का	लड़के
मुनि	मुनि
माली	माली
साधु	साधु
भालू	भालू
चौबे	चौबे
कोदो	कोदो

स्त्रीलिङ्ग।

बात	बातें
गैया	गैयां
तिथि	तिथियां
नदी	नदियां
धेनु	धेनु
बहू	बहू
सरसों	सरसों

हिन्दी के कई एक वैयाकरण कहते हैं कि स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ आकारान्त शब्द के अन्त आकार को कर्त्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में अनुनासिक नहीं होता किन्तु एकवचन और बहुवचन दोनों में समान रूप होते हैं। यही हमारा भी मत है॥

संस्कृत में कितने पुल्लिङ्ग शब्द ऐसे हैं जो आप तो दीर्घ आकारान्त नहीं हैं पर प्रथमा विभक्ति के एकवचन में उन के रूप विसर्ग सहित अथवा विसर्ग रहित दीर्घ आकारान्त होते हैं। जैसे। चन्द्रमस् का चन्द्रमाः। राजन् का राजा। पितृ का पिता। सखि का सखा। इत्यादि। इन शब्दों के ये रूप हिन्दी में पुल्लिङ्ग दीर्घ आकारान्त शब्द गिने जाते हैं। जैसे। चन्द्रमा। राजा। पिता। सखा। इत्यादि। इन पुल्लिङ्ग दीर्घ आकारान्त शब्दों के कर्त्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में अन्त आकार को एकार नहीं होता। जैसे॥

एकवच.	बहुवच.
चन्द्रमा	चन्द्रमा
राजा	राजा
पिता	पिता
सखा	सखा

ऊपर कहे हुए संस्कृत शब्दों के सिवाय विशेष करके हिन्दी ही भाषा के कितने एक संबन्धिविशेषवाचक और व्यक्तिविशेषवाचक दीर्घ आकारान्त शब्द ऐसे हैं कि उन के भी कर्त्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में अन्त आकार को एकार नहीं होता। जैसे। काका, नाना, मामा, भैया, इत्यादि और बुधुआ, सुधुआ, मोहना इत्यादि॥

हिन्दी के कई एक वैयाकरण वर्तमान काल के दो भेद मानते हैं एक सामान्यक्रियासम्बन्धी दूसरा तात्कालिकक्रिया-सम्बन्धी । सामान्यक्रियासम्बन्धी उस वर्तमान को कहते हैं जिस की क्रिया का आरम्भ तो हुआ हो पर उस की समाप्ति न हुई हो परन्तु यह निश्चय न हो कि कर्त्ता उस काल में उस क्रिया को करता है वा नहीं । जैसे । यज्ञदत्त कौमुदी पढ़ता है । इस से केवल इतना बोध होता है कि यज्ञदत्त ने कौमुदी पढ़ना आरम्भ किया है और अभों तक उस की वह क्रिया समाप्त नहीं हुई है परन्तु यह निश्चय नहीं होता कि वह उस समय कौमुदी पढ़ रहा है वा नहीं । तात्कालिकक्रियासम्बन्धी वर्तमान उस को कहते हैं जिस की क्रिया को कर्त्ता उस क्षण में कर रहा हो । जैसे । यज्ञदत्त कौमुदी पढ़ रहा है । इस से प्रकाश होता है कि यज्ञदत्त उस क्षण में कौमुदी पढ़ रहा है । संस्कृत में ऐसी क्रियाओं के अनुवाद में धातु के आगे शतृ वा शानच् प्रत्यय ला कर उस के आगे अस् धातु की वर्त्तमानकालिक क्रियाओं को जोड़ देते हैं । जैसे । यज्ञदत्तः कौमुदीं पठन्नस्ति । इत्यादि ॥

दूसरा पाठ ।

कर्म्म कारक ।

कर्म्म उसे कहते हैं जिस में फल हो । जैसे । गुरुः शिष्य-म्पाठयति । गुरु शिष्य को पढ़ाता है । यहां शिष्य कर्म्म है । क्योंकि पढ़ाने का फल उसी पर आश्रित है ॥

संस्कृत में कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया और हिन्दी में कर्तृ-प्रधानक्रिया के कर्म्म के आगे द्वितीया विभक्ति आती है । संस्कृत में द्वितीया विभक्ति के प्राय हल् मकार आदि चिह्न रहते हैं । हिन्दी में उस का "को" चिह्न है । जैसे । ऊपर लिखे हुये

उदाहरण में संस्कृत में शिष्य शब्द के आगे हल् मकार चिह्न है और हिन्दी में उसी शब्द के आगे "को" चिह्न है ॥

हिन्दी में यह नियम नहीं है कि कर्तृप्रधानक्रिया के कर्म्म के आगे द्वितीया का चिह्न अवश्य रहे । कभीं रहता है कभी नहीं । जैसे । तन्तुवाय: पटं वयति । जुलाहा कपड़ा बीनता है । यहां हिन्दी में कपड़ा शब्द के आगे द्वितीया का चिह्न नहीं है ॥

हिन्दी के कोई २ वैयाकरण लिखते हैं कि यदि अप्राणि-वाचक सञ्ज्ञा कर्म्म कारक हो तो उस के आगे प्राय "को" चिह्न नहीं आता । जैसे । मैं चिट्ठी लिखता हूं । इत्यादि । और यदि व्यक्तिवाचक अधिकारिवाचक और कर्म्मकर्तृवाचक सञ्ज्ञा कर्म्म कारक हों तो उन के आगे "को" चिह्न आता है । जैसे । मोहन को बुलाओ । चौधरी को भेज देना । वह अपने दास को मारता है । इत्यादि ॥

संस्कृत में द्वितीया विभक्ति ।

एकवच०	द्विवच०	बहुवच०
अम्	औट्	शस्

संस्कृत में भूत अनद्यतन काल । परोक्ष क्रिया । लिट् लकार । हिन्दी में सामान्यभूत काल ॥

पिछली रात के पिछले दो पहर और अगली रात के अगले दो पहर और इन चार पहरों के बीच का सारा दिन इन्हीं आठ पहरों को अद्यतन कहते हैं । और इन के बाहर का काल अनद्यतन कहलाता है ॥

परोक्ष क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जो वक्ता को प्रत्यक्ष न हुई हो ॥

लिट् लकार के परस्मैपदसञ्ज्ञकप्रत्ययों के स्थान में णल् आदि आदेश ॥

एकवच·	द्विवच·	बहुवच·
णल्	अतुस्	उस्
थल्	अथुस्	अ
णल्	व	म

(अस् और भू)

	प्रथम पु·	मध्यम पु·	उत्तम पु·
एकव·	बभूव	बभूविथ	बभूव
एकव·	था	था	था
एकव·	थी	थी	थी
एकव·	हुआ	हुआ	हुआ
एकव·	हुई	हुई	हुई
द्विव·	बभूवतुः	बभूवथुः	बभूविव
बहुव·	थे	थे	थे
बहुव·	थीं	थीं	थीं
बहुव·	हुए	हुए	हुए
बहुव·	हुईं	हुईं	हुईं
बहुव·	बभूवुः	बभूव	बभूविम
बहुव·	थे	थे	थे
बहुव·	थीं	थीं	थीं
बहुव·	हुए	हुए	हुए
बहुव·	हुईं	हुईं	हुईं

संस्कृत में अस् और भू इन दोनों धातुओं के रूप लिट् लकार में एक ही से होते हैं। इस लिये संस्कृत की एक २ क्रिया के नीचे हिन्दी की चार २ क्रिया लिखी गई हैं। ऊपर की दो २ अस् धातु की क्रियाओं के पलटे में और नीचे की दो २ भू धातु की क्रियाओं के बदले में॥

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स बभूव	त्वं बभूविथ	अहं बभूव
तौ बभूवतुः	युवां बभूवथुः	आवां बभूविव
ते बभूवुः	यूयं बभूव	वयं बभूविम

स्त्रीलिङ्ग।

सा बभूव	त्वं बभूविथ	अहं बभूव
ते बभूवतुः	युवां बभूवथुः	आवां बभूविव
ता बभूवुः	यूयं बभूव	वयं बभूविम

नपुंसकलिङ्ग।

तद् बभूव	त्वं बभूविथ	अहं बभूव
ते बभूवतुः	युवां बभूवथुः	आवां बभूविव
तानि बभूवुः	यूयं बभूव	वयं बभूविम

इन संस्कृत वाक्यों का अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के अनुसार हिन्दी में अलग २ उल्था करो।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	चकार	चकर्थ	चकार। चकर
द्विव॰	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
बहुव॰	चक्रुः	चक्र	चकृम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले हिन्दी की ये चार क्रिया आती हैं, किया, किये, की, कीं । इस का भेद आगे स्पष्ट होगा ।

स्मरण रखना चाहिये कि हिन्दी में यदि धातु अकर्म्मक हो तो भूत काल में कर्त्तृप्रधानक्रिया के कर्त्ता के आगे प्रथमा विभक्ति का कुछ चिह्न नहीं रहता । परन्तु यदि सकर्म्मक हो तो सामान्यभूत काल की क्रिया और उस के योग से बनी हुई इतर सकल क्रियाओं के कर्त्ता के आगे प्रथमा विभक्ति का चिह्न "ने" आता है । जैसे । यज्ञदत्तो बभूव । यज्ञदत्त हुआ । विष्णुमित्रश्चकार । विष्णु मित्र ने किया । यहां हिन्दी में जहां धातु अकर्म्मक है वहां कर्त्ता के आगे कुछ चिह्न नहीं है परन्तु जहां सकर्म्मक है वहां "ने" चिह्न आया है । हिन्दी में पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के एकवचन वा बहुवचन में जैसे रूप, "को" आदि विभक्तियों के योग में होते हैं वैसे ही "ने" के योग में भी होते हैं । जैसे । बालक ने । बालकों ने । लड़के ने । लड़कों ने । स्त्री ने । स्त्रियों ने । इत्यादि । सर्वनामों की भी यही व्यवस्था जानो ।

"ने" के योग में प्रथम आदि पुरुषसम्बन्धी सर्वनामों के रूप ॥

पुल्लिङ्ग ।

प्रथ॰ पु॰	मध्य॰ पु॰	उत्त॰ पु॰
सः	त्वम्	अहम्
उस ने	तूं ने	मैं ने
तौ	युवाम्	आवाम्
उन दोनों ने	तुम दोनों ने	हम दोनों ने
ते	यूयम्	वयम्
उन ने । उन्हों ने	तुम ने	हम ने

स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो।

हम पीछे कह आये हैं कि हिन्दी में कर्तृप्रधानक्रिया के कर्म्म के आगे द्वितीया का चिह्न "को" कहीं रहता है कहीं नहीं। यदि कर्म्म के आगे द्वितीया का चिह्न "को" न रहे और उक्त रीति के अनुसार कर्त्ता के आगे प्रथमा का चिह्न "ने" आवे तो क्रिया के रूप कर्म्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार होंगे कर्त्ता के नहीं। जैसे। कृष्णदत्तो विश्रामञ्चकार। कृष्णदत्त ने विश्राम किया। रामदत्तो विश्रामांश्चकार। रामदत्त ने विश्राम किये। यज्ञदत्तः प्रतिज्ञाञ्चकार। यज्ञदत्त ने प्रतिज्ञा की। विष्णुमित्रः प्रतिज्ञाश्चकार। विष्णुमित्र ने प्रतिज्ञा कीं। यहां हिन्दी के प्रथम वाक्य में कर्म्म पुल्लिङ्ग और एकवचनान्त है इस लिये क्रिया दीर्घ आकारान्त, दूसरे वाक्य में कर्म्म पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त है इस लिये क्रिया एकारान्त, तीसरे वाक्य में कर्म्म स्त्रीलिङ्ग और एकवचनान्त है इस लिये क्रिया दीर्घ ईकारान्त, चौथे वाक्य में कर्म्म स्त्रीलिङ्ग और बहुवचनान्त है इस लिये क्रिया अनुनासिक दीर्घ ईकारान्त हुई है। ऐसे ही सर्वत्र जानो।

यदि कर्म्म के आगे द्वितीया का चिह्न "को" रहे और कर्त्ता के आगे प्रथमा का चिह्न "ने" भी आवे तो कर्म्म चाहे जिस लिङ्ग और जिस वचन का हो परन्तु क्रिया केवल दीर्घ आकारान्त होगी। जैसे। कृष्णदत्तः पुत्रं पाठयामास। कृष्णदत्त ने पुत्र को पढ़ाया। रामदत्तः पुत्रान् पाठयामास। रामदत्त ने पुत्रों को पढ़ाया। यज्ञदत्तो दुहितरं पाठयामास। यज्ञदत्त ने कन्या को पढ़ाया। विष्णुमित्रो दुहितॄः पाठयामास। विष्णुमित्र ने कन्याओं को पढ़ाया। इत्यादि॥

हम ने जो पीछे कहा है कि हिन्दी में कर्तृप्रधानक्रिया के रूप कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलट जाते हैं उस

का तात्पर्य्य यह है कि जहां कर्त्ता के आगे "ने" चिह्न नहीं रहता वहां क्रिया के रूप कर्त्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलटते हैं और जहां ने चिह्न रहता है वहां कहीं तो कर्म्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलटते हैं और कहीं केवल दीर्घ आकारान्त होते हैं ॥

हिन्दी में "लाना" "बोलना" इत्यादि कई एक सकर्म्मक धातु ऐसे हैं कि उन की सामान्यभूत काल की क्रिया और उस के योग से बनी हुई इतर क्रियाओं के भी कर्त्ता के आगे प्रथमा का चिह्न "ने" नहीं आता । जैसे । चाकर घोड़ा लाया । रामदत्त वचन बोला । रीति के अनुसार करते तो होता 'चाकर ने घोड़ा लाया' । रामदत्त ने वचन बोला । परन्तु ऐसे वाक्य हिन्दी में अशुद्ध हैं । और जिन धातुओं के अन्त में चुकना और सकना धातु जोड़े जाते हैं उन की क्रियाओं की भी यही रीति है । जैसे । मैं खा चुका । मैं पढ़ सका । इत्यादि ॥

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स चकार	त्वं चकर्थ	अहं चकार । चकर
तौ चक्रतुः	युवां चक्रथुः	आवां चकृव
ते चक्रुः	यूयं चक्र	वयं चकृम

स्त्रीलिङ्ग ।

सा चकार	त्वं चकर्थ	अहं चकार । चकर
ते चक्रतुः	युवां चक्रथुः	आवां चकृव
ताश्चक्रुः	यूयं चक्र	वयं चकृम

नपुंसक लिङ्ग।

तच्चकार	त्वं चकर्थ	अहं चकार। चकर
ते चक्रतुः	युवां चक्रथुः	आवां चकृव
तानि चक्रुः	यूयं चक्र	वयं चकृम

इन प्रत्येक संस्कृत वाक्यों में पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गों के एकवचनान्त द्विवचनान्त और बहुवचनान्त कर्म्मवाचक पदों को जोड़ कर हिन्दी में उल्था करो। जैसे। स मनोरथञ्चकार। उस ने मनोरथ किया। स मनोरथौ चकार। उस ने दोनों मनोरथ किये। स मनोरथांश्चकार। उस ने मनोरथ किये। स प्रतिज्ञाञ्चकार। उसने प्रतिज्ञा की। स प्रतिज्ञे चकार। उसने दोनों प्रतिज्ञा कीं। स प्रतिज्ञाश्चकार। उसने प्रतिज्ञा कीं। स पुण्यञ्चकार। उसने पुण्य किया। स पुण्ये चकार। उस ने दोनों पुण्य किये। स पुण्यानि चकार। उस ने पुण्य किये। इत्यादि ॥

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	एधाञ्चक्रे	एधाञ्चकृषे	एधाञ्चक्रे
एकव॰	बढ़ा	बढ़ा	बढ़ा
एकव॰	बढ़ी	बढ़ी	बढ़ी
द्विव॰	एधाञ्चक्राते	एधाञ्चक्राथे	एधाञ्चकृवहे
बहुव॰	बढ़े	बढ़े	बढ़े
बहुव॰	बढ़ीं	बढ़ीं	बढ़ीं
बहुव॰	एधाञ्चक्रिरे	एधाञ्चकृढ्वे	एधाञ्चकृमहे
बहुव॰	बढ़े	बढ़े	बढ़े
बहुव॰	बढ़ीं	बढ़ीं	बढ़ीं

जानना चाहिये कि लिट् लकार में एध धातु के आगे कृ धातु के जोड़ने से ऊपर लिखे हुए रूप बनते हैं। ऐसे ही भू धातु के जोड़ने से एधाम्बभूव, एधाम्बभूवतुः, एधाम्बभूवुः, इत्यादि, और अस् धातु के जोड़ने से एधामास, एधामासतुः, एधामासुः इत्यादि रूप भी बनते हैं।

हिन्दी वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

वह बढ़ा	तू बढ़ा	मैं बढ़ा
वे दोनों बढ़े	तुम दोनों बढ़े	हम दोनों बढ़े
वे बढ़े	तुम बढ़े	हम बढ़े

स्त्रीलिङ्ग।

वह बढ़ी	तू बढ़ी	मैं बढ़ी
वे दोनों बढ़ीं	तुम दोनों बढ़ीं	हम दोनों बढ़ीं
वे बढ़ीं	तुम बढ़ीं	हम बढ़ीं

नपुंसकलिङ्ग के बदले में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

संस्कृत में भूत अनद्यतन काल। लङ् लकार। हिन्दी में सामान्यभूत काल।

(अस्)

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम. पु.
एकव.	आसीत्	आसीः	आसम्
एकव.	था	था	था
एकव.	थी	थी	थी
द्विव.	आस्ताम्	आस्तम्	आस्व

बहुव·	थे	थे	थे
बहुव·	थीं	थीं	थीं
बहुव·	आसन्	आस्त	आस्म
बहुव·	थे	थे	थे
बहुव·	थीं	थीं	थीं

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स आसीत्	त्वमासीः	अहमासम्
तावास्ताम्	युवामास्तम्	आवामास्व
त आसन्	यूयमास्त	वयमास्म

स्त्रीलिङ्ग ।

सासीत्	त्वमासीः	अहमासम्
ते आस्ताम्	युवामास्तम्	आवामास्व
ता आसन्	यूयमास्त	वयमास्म

नपुंसकलिङ्ग ।

तदासीत्	त्वमासीः	अहमासम्
ते आस्तम्	युवामास्तम्	आवामास्व
तान्यासन्	यूयमास्त	वयमास्म

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

(भू)

	प्रथम पु·	मध्यम पु·	उत्तम पु·
एकव·	अभवत्	अभवः	अभवम्
एकव·	हुआ	हुआ	हुआ
एकव·	हुई	हुई	हुई

द्विव॰	अभवताम्	अभवतम्	अभवाव
बहुव॰	हुए	हुए	हुए
बहुव॰	हुईं	हुईं	हुईं
बहुव॰	अभवन्	अभवत	अभवाम
बहुव॰	हुए	हुए	हुए
बहुव॰	हुईं	हुईं	हुईं

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

सोऽभवत्	त्वमभवः	अहमभवम्
तावभवताम्	युवामभवतम्	आवामभवाव
तेऽभवन्	यूयमभवत	वयमभवाम

स्त्रीलिङ्ग।

साभवत्	त्वमभवः	अहमभवम्
ते अभवताम्	युवामभवतम्	आवामभवाव
ता अभवन्	यूयमभवत	वयमभवाम

नपुंसकलिङ्ग।

तदभवत्	त्वमभवः	अहमभवम्
ते अभवताम्	युवामभवतम्	आवामभवाव
तान्यभवन्	यूयमभवत	वयमभवाम

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	अकरोत्	अकरोः	अकरवम्
द्विवच॰	अकुरुताम्	अकुरुतम्	अकुर्व
बहुवच॰	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्म

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वेई चार २ क्रिया आती हैं जो इस धातु के लिट् लकार की क्रियाओं के पलटे में लिखी हैं। इस का भेद पूर्ववत् जानो ॥

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽकरोत्	त्वमकरोः	अहमकरवम्
तावकुरुताम्	युवामकुरुतम्	आवामकुर्व
तेऽकुर्वन्	यूयमकुरुत	वयमकुर्म

स्त्रीलिङ्ग ।

साकरोत्	त्वमकरोः	अहमकरवम्
ते अकुरुताम्	युवामकुरुतम्	आवामकुर्व
ता अकुर्वन्	यूयमकुरुत	वयमकुर्म्म

नपुंसकलिङ्ग ।

तदकरोत्	त्वमकरोः	अहमकरवम्
ते अकुरुताम्	युवामकुरुतम्	आवामकुर्व
तान्यकुर्वन्	यूयमकुरुत	वयमकुर्म्म

इन प्रत्येक संस्कृत वाक्यों में भी इस धातु के लिट् लकार के वाक्यों के तुल्य पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग के एकवचनान्त द्विवचनान्त और बहुवचनान्त कर्म्मों को जोड़कर हिन्दी में उल्था करो।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	ऐधत	ऐधथाः	ऐधे
द्विवच॰	ऐधेताम्	ऐधेथाम्	ऐधावही
बहुवच॰	ऐधन्त	ऐधध्वम्	ऐधामहि

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वेई क्रिया आती हैं जो इस धातु के लिट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी हैं।

हिन्दी वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

वह बढ़ा। इत्यादि। पूर्ववत्।

संस्कृत में सामान्यभूत काल। लुङ् लकार हिन्दी में सामान्य भूत काल।

(अस् और भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	अभूत्	अभूः	अभूवम्
द्विवच॰	अभूताम्	अभूतम्	अभूव
बहुवच॰	अभूवन्	अभूत	अभूम

लुङ् लकार में भी अस और भू दोनों धातुओं के रूप एकही से होते हैं। और इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं चार २ क्रियाओं को जानो जो इन धातुओं के लिट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं।

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

सोऽभूत्	त्वमभूः	अहमभूवम्
तावभूताम्	युवामभूतम्	आवामभूव
तेऽभूवन्	यूयमभूत	वयमभूम

स्त्रीलिङ्ग।

साभूत्	त्वमभूः	अहमभूवम्
ते अभूताम्	युवामभूतम्	आवामभूव
ता अभूवन्	यूयमभूत	वयमभूम

नपुंसकलिङ्ग ।

तदभूत्	त्वमभूः	अहमभूवम्
ते अभूताम्	युवामभूतम्	आवामभूव
तान्यभूवन्	यूयमभूत	वयमभूम

इन संस्कृत वाक्यों का भी अस् और भू धातुओं की क्रियाओं के अनुसार हिन्दी में अलग २ अनुवाद करो ।

(कृ)

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकवच०	अकार्षीत्	अकार्षीः	अकार्षम्
द्विवच०	अकार्ष्टाम्	अकार्ष्टम्	अकार्ष्व
बहुवच०	अकार्षुः	अकार्ष्ट	अकार्ष्म

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के नीचे भी हिन्दी क्रियाओं का योग इस धातु के लिट् लकार के तुल्य जानो ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽकार्षीत्	त्वमकार्षीः	अहमकार्षम्
तावकार्ष्टाम्	युवामकार्ष्टम्	आवामकार्ष्व
तेऽकार्षुः	यूयमकार्ष्ट	वयमकार्ष्म

स्त्रीलिङ्ग ।

साकार्षीत्	त्वमकार्षीः	अहमकार्षम्
ते अकार्ष्टाम्	युवामकार्ष्टम्	आवामकार्ष्व
ता अकार्षुः	यूयमकार्ष्ट	वयमकार्ष्म

नपुंसकलिङ्ग ।

तदकार्षीत्	त्वमकार्षीः	अहमकार्षम्
ते अकार्ष्टम्	युवामकार्ष्टम्	आवामकार्ष्व
तान्यकार्षुः	यूममकार्ष्ट	वयमकार्ष्म

इन वाक्यों के अनुवाद का प्रकार भी इस धातु के लिट् लकार के वाक्यों के तुल्य जानो।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	एधिष्ट	एधिष्ठाः	एधिषि
द्विवच॰	एधिषाताम्	एधिषाथाम्	एधिष्वहि
बहुवच॰	एधिषत	एधिढ्वम्	एधिष्महि

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं दो २ क्रियाओं को जानो जो इस धातु के लिट् लकार की क्रियाओं के बदले में आती हैं।

हिन्दी वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

वह बढ़ा इत्यादि पूर्ववत्।

जहां "माङ्*" अव्यय का योग रहता है वह सब लकारों को बाध कर केवल लुङ् लकार आता है। और इस अवस्था में धातु के पूर्व अ अथवा आ का आगम नहीं होता। जैसे। मा भवान् भूत्। आप मत होवें। यहां संस्कृत में माङ् अव्यय का योग है। इस कारण भू धातु के आगे विधि लिङ् के बदले में लुङ् लकार आया है। और धातु के पूर्व अ का आगम भी नहीं हुआ है। अर्थात् जहां "अभूत्" होना चाहता था वहां भूत् यही हुआ है।

यदि इस माङ् के अनन्तर स्म अव्यय भी रहे तो इस अवस्था में लङ् और लुङ् दोनों लकार क्रम से होते हैं। जैसा। मा स्म भवान् भवत्। मा स्म भवान् भूत्। आप मत होवें संस्कृत के इन दोनों वाक्यों में "माङ्" अव्यय के उत्तर स्म

* माङ् के ङकार का लोप होने पर केवल मा रह जाता है।

अव्यय है। इस कारण प्रथम वाक्य में लङ् और द्वितीय में लुङ् लकार आया है। और उक्त रीति के अनुसार धातु के पहिले अ का आगम भी नहीं हुआ है।

मा भवतु। भविष्यति। इत्यादि उदाहरणों में माङ् अव्यय नहीं रहता किन्तु निषेधवाचक मा शब्द रहता है। इस लिये लोट् और लृट् लकारों को बाधकर लुङ् लकार नहीं होता।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द।

रामम्। रामौ। रामान्। राम को। दोनों रामों को। रामों को।
सर्वम्। सर्वौ। सर्वान्।
त्रीन्।
पूर्वम्। पूर्वौ। पूर्वान्।
मुनिम्। मुनी। मुनीन्।
पतिम्। पती। पतीन्।
सखायम्। सखायौ। सखीन्।
कति।
सुधियम्। सुधियौ। सुधियः।
साधुम्। साधू। साधून्।
स्वयम्भुवम्। स्वयम्भुवौ। स्वयम्भुवः।
दातारम्। दातारौ। दातॄन्।
भ्रातरम्। भ्रातरौ।
गाम्। गावौ गाः।

प्रथम पाठ में लिखे हुए अजन्त पुल्लिङ्ग शब्दों में से कतर शब्द से लेकर इतर शब्द पर्य्यन्त पांच शब्द शेष विभक्तियों के सब वचनों में और एक शब्द एक वचनों में और द्वि और उभ शब्द द्विवचनों में और अनेक शब्द बहुवचनों में सर्व शब्द के समान होते हैं। भ्रातृ शब्द द्वितीया के बहुवचनों से लेकर समस्त विभक्तियों के सब वचनों में दातृ शब्द के समान होता है।

कोष।

साध्वी=पतिव्रता।
भारती=सरस्वती।
दिलीप=एक राजा का नाम

धातु ।

पूज· चुरा· उभय· सक·=पूजना । पूजा करना ।

पूजयति । पूजयतः । पूजयन्ति ।

लिट् । पूजयमास । पूजयामासतुः । पूजयामासुः ।

लङ् । अपूजयत् । अपूजयताम् । अपूजयन् ।

संस्कृत वाक्य ।

रामं पूजयमास मुनिः । हरिर्मुनिमपूजयत् । पतिमुपदिशति साध्वी । सुग्रीवो रामं सखायमकरोत् । ते सुधियमपूजयन् । ते तं साधुं विदन्ति । स्वयम्भुवं पतिश्चकार भारती । याचका दातारं गच्छन्ति । विष्णुमित्रो भ्रातरमुपदिशति । दिलीपो गामपूपुजत् । साधवः पितरं पूजयन्ति ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

संस्कृत में दुह आदि सोलह धातु ऐसे हैं कि उनके कर्म्म कारक के साथ जिन अपादान आदि कारकों का सम्बन्ध रहता है यदि वे कारक अपादान आदि रूप से न समझे जायं तो वे भी कर्म्म हो जाते हैं । इसी से उन धातुओं को द्विकर्म्मक कहते हैं । और इन दूसरे कर्म्मों के आगे भी द्वितीया विभक्ति आती है ॥

वे धातु ये हैं—दुह (दूहना), याच (मागना), पच (पकाना) दण्ड (दण्ड लेना), रुध (घेरना), प्रच्छ (पूछना), चि (बटोरना), ब्रू (कहना), शास (शिक्षा करना), जि (जीतना), मन्थ (मथना), मुष् (चोरा लेना), नी (ले जाना), हृ (प्राप्त करना), कृष् (लेजाना), वह (पहुंचाना) ॥

क्रम से उदाहरण—गां दोग्धि दुग्धम् । गो से दूध दूहता है । दातारं याचते वस्त्रम् । दाता से वस्त्र मांगता है । तण्डु-

लानोदनं पचति । चावल से भात पकाता है । वैश्यान् शतं दण्डयति । बनियों से सौ (रुपैये) दण्ड लेता है । गोष्ठमवरुणद्धिगाम् । खरके में गौ को घेरता है । माणवकं पन्थानं पृच्छति । लड़के से राह पूछता है । वृक्षमवचिनोति फलानि । पेड़ से फल बटोरता है । माणवकं धर्म्मं ब्रूते । लड़के के लिये धर्म्म (की बातें) कहता है । पुत्रं धर्म्मं शास्ति । पुत्र के लिये धर्म्म (की बातें) सिखाता है । शतं जयति देवदत्तम् । देवदत्त से सौ (रुपैये) जीतता है । सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति । क्षीर समुद्र से अमृत मथता है । देवदत्तं शतं मुष्णाति । देवदत्त से सौ (रुपैये) चोरा लेता है । ग्राममजां नयति । बकरी को गांव पर ले जाता है । हरति । प्राप्त करता है । कर्षति । ले जाता है । अथवा । वहति । पहुंचाता है ॥

इन दुह आदि सोलह धातुओं के समान अर्थवाले अन्य धातुओं के योग में भी यह कर्म्म सञ्ज्ञा होती है केवल इन्हीं के नहीं । जैसे । बलिं भिक्षते वसुधाम् । बलि (राजा) से पृथ्वी मांगता है । माणवकं धर्म्मं भाषते । लड़के के लिये धर्म्म कहता है । यहां याच और ब्रू इन दोनों धातुओं के समानार्थ भिक्ष और भाष धातु का प्रयोग है । ऐसे ही सर्वत्र जानो ।

जहां एक कर्त्ता किसी दूसरे कर्त्ता को प्रेरणा करता है वहां उस प्रेरणा करनेवाले को प्रयोजक कर्त्ता और जिसे वह प्रेरणा करता है उसको प्रयोज्य कर्त्ता कहते हैं । संस्कृत में इस प्रेरणा रूप अर्थ को प्रकाश करने के लिये धातु के आगे "णिच्" प्रत्यय जोड़ कर णिजन्त क्रिया बनाई जाती हैं । जैसे । यज्ञदत्तो भवति । देवदत्तो यज्ञदत्तं भावयति । यज्ञदत्त होता है । देवदत्त यज्ञदत्त को हो आता है । यहां "भू" धातु की शुद्ध क्रिया "भवति" और णिजन्त क्रिया "भावयति" है । इसी से प्रयोज्य कर्त्ता को अण्यन्तावस्था का कर्त्ता और प्रयोजक कर्त्ता को ण्यन्तावस्था का

कर्त्ता भी कहते हैं। हिन्दी में इस णिजन्त क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। विशेष इतना है कि हिन्दी में धातु के आगे णिच् प्रत्यय नहीं लाते।

अकर्म्मक धातु की अण्यन्तावस्था का कर्त्ता ण्यन्तावस्था में कर्म्म हो जाता है। और इस प्रकार से अकर्म्मक धातु सकर्म्मक हो जाता है। जैसे। पुत्रः शेते। माता पुत्रं शाययति। पुत्र सोता है। माता पुत्र को सोलाती है। यहां अकर्म्मक "शी" धातु की अण्यन्तावस्था का कर्त्ता पुत्र ण्यन्तावस्था में कर्म्म हो गया है। यही विधि हिन्दी में भी जानो।

सकर्म्मक धातुओं में से जिन धातुओं का अर्थ गमन ज्ञान अथवा भोजन हो और जिनका कर्म्म कारक शब्द हो इन्हीं चार प्रकार के धातुओं की अण्यन्तावस्था का कर्त्ता ण्यन्तावस्था में कर्म्म होता है औरों का नहीं।

गमन अर्थ का उदाहरण। माणवको ग्रामं गच्छति। देवदत्तो माणवकं ग्रामं गमयति। लड़का गांव जाता है। देवदत्त लड़के को गांव लेजाता है। यहां अण्यन्तावस्था का कर्त्ता माणवक ण्यन्तावस्था में कर्म्म हुआ है।

यद्यपि "नी" (लेजाना) और "वह" (पहुंचाना) इन दोनों धातुओं का अर्थ भी एक प्रकार का गमन है तथापि इन की अण्यन्तावस्था के कर्त्ता ण्यन्तावस्था में कर्म्म नहीं होते। जैसे। देवदत्तो भारं नयति। यज्ञदत्तो देवदत्तेन भारं नाययति। देवदत्त बोझा लेजाता है। यज्ञदत्त देवदत्त से बोझा लिवा जाता है। विष्णुदत्तो भारं वहति। कृष्णदत्तो विष्णुदत्तेन भारं वाहयति। विष्णुदत्त बोझा पहुंचाता है। कृष्णदत्त विष्णुदत्त से बोझा पहुंचवाता है। यहां दोनों भाषाओं में अण्यन्तावस्था के कर्त्ता देवदत्त

और विष्णुदत्त णयन्तावस्था में कर्म्म नहीं हुए । और इसी से उन के आगे द्वितीया विभक्ति नहीं हुई किन्तु तृतीया हुई ।

परन्तु यदि "वह" धातु का कर्त्ता पशुप्रेरक हो तो संस्कृत में उस की अणयन्तावस्था का कर्त्ता णयन्तावस्था में कर्म्म अवश्य होगा । जैसे वलीवर्द्धा यवान् वहन्ति । यज्ञदत्तो वलीवर्द्धान् यवान् वाहयति । बैल यव पहुंचाते हैं । यज्ञदत्त बैलों से यव पहुंचवाता है । यहां केवल संस्कृत में अणय-न्तावस्था के कर्त्ता बैल णयन्तावस्था में कर्म्म हुए । क्योंकि यज्ञदत्त बैलरूपी पशुओं का प्रेरक है ।

ज्ञान अर्थ का उदाहरण । माणवको धर्म्मं वेत्ति । देव-दत्तो माणवकं धर्म्मं वेदयति । लड़का धर्म्म जानता है । देवदत्त लड़के को धर्म्म जनाता है ।

भोजन अर्थ का उदाहरण । माणवक ओदनं भुङ्क्ते । यज्ञ-दत्तो माणवकमोदनं भोजयति । लड़का भात खाता है । यज्ञ-दत्त लड़के को भात खिलाता है ।

यद्यपि "अद" और "खाद" इन दोनों धातुओं का भी भोजन अर्थ है तथापि संस्कृत में इन की अणयन्तावस्था का कर्त्ता णयन्तावस्था में कर्म्म नहीं होता । जैसे । माणवक ओदन-मत्ति । यज्ञदत्तो माणवकेनौदनमादयते । लड़का भात खाता है । यज्ञदत्त लड़के को भात खिलाता है । विष्णुमित्रो मोदकं खादति । देवदत्तो विष्णुमित्रेण मोदकं खादयति । विष्णुमित्र लड्डू खाता है । देवदत्त विष्णुमित्र को लड्डू खिलाता है । यहां केवल संस्कृत में अणयन्तावस्था के कर्त्ता माणवक और विष्णुमित्र णयन्तावस्था में कर्म्म नहीं हुए ।

भक्ष धातु का अर्थ भी भोजन है परन्तु यदि इस भोजन

से किसी को कुछ पीड़ा पहुंचती हो तब तो इस धातु की अण्यन्तावस्था के कर्त्ता को कर्म सञ्ज्ञा होती है अन्यथा नहीं। जैसे। बलीवर्दाः सस्यं भक्षयन्ति। देवदत्तो बलीवर्दान् सस्यं भक्षयति। बैल (खेत का) अन्न चरते हैं। देवदत्त बैलों से खेत का अन्न चराता है। यहां केवल संस्कृत में भक्ष धातु की अण्यन्तावस्था के कर्त्ता बैल ण्यन्तावस्था में कर्म्म हुए हैं। क्योंकि इस भोजन से खेत के स्वामी अथवा हरे अन्नों को पीड़ा पहुंचती है। और जहां किसी को कुछ पीड़ा नहीं पहुंचती वहां कर्म्म सञ्ज्ञा भी नहीं होती। जैसे। माणवकोऽन्नं भक्षयति। रामदत्तो माणवकेनान्नं भक्षयति। लड़का अन्न खाता है। रामदत्त लड़के को अन्न खिलाता है। यहां संस्कृत में कर्म्म सञ्ज्ञा नहीं हुई।

शब्द कर्मक का उदाहरण।

विष्णुमित्रो वेदमधीते। यज्ञदत्तो विष्णुमित्रं वेदमध्यापयति। विष्णुमित्र वेद पढ़ता है यज्ञदत्त विष्णुमित्र को वेद पढ़ाता है।

पूर्वोक्त गमन आदि अर्थवाले चार प्रकार के धातुओं से भिन्न सकर्म्मक धातुओं की अण्यन्तावस्था का कर्त्ता ण्यन्तावस्था में कर्म्म नहीं होता। जैसे। रामदत्त ओदनं पचति। देवदत्तो रामदत्तेनौदनं पाचयति। रामदत्त भात पकाता है। देवदत्त रामदत्त से भात पकवाता है। इत्यादि। यहां रामदत्त को कर्म्म सञ्ज्ञा नहीं हुई।

"जल्प" (बोलना) इत्यादि धातु और "दृश" (देखना) धातु की अण्यन्तावस्था का कर्त्ता ण्यन्तावस्था में कर्म्म होता है। जैसे। पुत्रो धर्म्मं जल्पति। देवदत्तः पुत्रं धर्म्मं जल्पयति। पुत्र धर्म्म कहता है। देवदत्त पुत्र से धर्म्म कहवाता है। भक्ता हरिं पश्यन्ति। देवदत्तो भक्तान् हरिं दर्शयति। भक्त हरि का दर्शन करते हैं। देवदत्त भक्तों को हरि का दर्शन कराता है॥

अण्यन्तावस्था का कर्त्ता ण्यन्तावस्था में कर्म्म हो जाता

है। परन्तु णयन्तावस्था का कर्ता फिर उस धातु से णिच् प्रत्यय लाने पर कर्म्म नहीं होता। जैसे। देवदत्तो गच्छति यज्ञदत्तो देवदत्तं गमयति। विष्णुमित्रो यज्ञदत्तं प्रेरयति। विष्णुमित्रो यज्ञदत्तेन देवदत्तं गमयति। देवदत्त जाता है। यज्ञदत्त देवदत्त को लेजाता है। विष्णुमित्र (लेजानेवाले) यज्ञदत्त को प्रेरणा करता है। विष्णुमित्र यज्ञदत्त से देवदत्त को लिवा जाता है। यहां अणयन्तावस्था का कर्ता देवदत्त णयन्तावस्था में कर्म्म हुआ। परन्तु णयन्तावस्था का कर्ता यज्ञदत्त फिर णयन्तावस्था में कर्म्म नहीं हुआ॥

"हृ" (ले जाना) "कृ" (करना) इन दोनों धातुओं की अणयन्तावस्था के कर्ताओं को णयन्तावस्था में कर्म्म सञ्ज्ञा विकल्प करके होती है। अर्थात् कहीं होती है कहीं नहीं। जैसे। भृत्यो भारं हरति। देवदत्तो भृत्यं भृत्येन वा भारं हारयति। चाकर बोझा लेजाता है। देवदत्त चाकर से बोझा लिवा जाता है। भृत्यः कर्म्म करोति। देवदत्तो भृत्यं भृत्येन वा कर्म्म कारयति। चाकर काम करता है। देवदत्त चाकर से काम कराता है। यहां संस्कृत के दोनों वाक्यों में अणयन्तावस्था का कर्ता भृत्य णयन्तावस्था में विकल्प करके कर्म्म हुआ है। जब कर्म्म हुआ है तो उस के आगे द्वितीया आई है और नहीं तो तृतीया हुई है॥

अभिपूर्वक "वद" (प्रणाम क॰) और केवल "दृश" (देखना) इन दोनों धातुओं से णिच् प्रत्यय लाने पर आत्मनेपद में अणयन्तावस्था के कर्ता को णयन्तावस्था में कर्म्म सञ्ज्ञा विकल्प करके होती है। जैसे। भक्तो देवमभिवदति। देवलको भक्तं भक्तेन वा देवमभिवादयते। भक्त देवता को प्रणाम करता है। पंडा भक्त से देवता को प्रणाम कराता है। भक्तो देवं पश्यति। देवलको भक्तं भक्तेन वा देवं दर्शयते। भक्त देवता का दर्शन करता है। पंडा भक्त को देवता का दर्शन कराता है॥

जिन के आदि में अधि उपसर्ग हो ऐसे "शी" (सोना) "स्था" (रहना) और "आस" (बैठना) इन तीन धातुओं के आधार को कर्म्म सञ्ज्ञा होती है। जैसे। देवदत्तस्तल्पमधिशेते। देवदत्त शय्या पर सोता है। विष्णुदत्तो ग्राममधितिष्ठति। विष्णुदत्त गांव में रहता है। कृष्णदत्त आसनमध्यास्ते। कृष्णदत्त आसन पर बैठा है।

यदि "विश" (पैठना) धातु के पूर्व अभि और नि ये दोनों उपसर्ग मिल कर रहें तो उस के आधार को कर्म्म सञ्ज्ञा होती है। जैसे। अभिनिविशते सन्मार्गम्। अच्छे कर्म्म में प्रवृत्त होता है।

जिस "वस" (निवास क०) धातु के पूर्व उप अनु, अधि, अथवा आङ् उपसर्ग हो उस का आधार कर्म्म होता है। जैसे। सेना ग्राममुपवसति, अनुवसति, अधिवसति, आवसति वा। सेना गाँव में रहती है।

यदि उपपूर्वक "वस" धातु का अर्थ उपवास हो तो उस का आधार कर्म्म नहीं होता। जैसे। वने उपवसति। वन में उपवास करता है। यहां वन को कर्म्म सञ्ज्ञा नहीं हुई।

उभयतः, सर्वतः, और धिक् और द्विवार पठित उपरि-अधि, और अधः, इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है। जैसे। उभयतो रामं वानराः। राम की दोनों ओर वानर हैं। सर्वतः कृष्णं गोपाः। कृष्ण की सब ओर गोप हैं। धिङ्मूर्खम्। मूर्ख को धिक्कार। उपर्य्युपरि लोकं हरिः लोक के ऊपर पास ही हरि। अध्यधि सुखं दुःखम्। सुख के ऊपर पास ही दुःख। अधोऽधो मेघं पक्षी। मेघ के नीचे पास ही पक्षी।

अभितः, परितः, समया निकषा, हा, और प्रति इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है। जैसे। अभितः कृष्णम्।

कृष्ण की दोनों ओर। परितो रामम्। राम की सब ओर। समया ग्रामम्। गाँव के समीप। निकषा लङ्काम्। लङ्का के पास। हा पापिनम्। पापी के विषय में शोक। बुभुक्षितं न प्रति भाति किञ्चित्। भूखे को कुछ नहीं जान पड़ता।

"अन्तरा" और "अन्तरेण" इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है। जैसे। अन्तरा त्वां माञ्च कमण्डलुः। हमारे और तुम्हारे बीच में कमण्डल। अन्तरेण त्वां न सुखम्। तुम्हारे बिना सुख नहीं।

जहां तृतीया का अर्थ प्रकाशित हो वहां अनु के योग में द्वितीया होती है। जैसे। पर्वतमन्ववसिता सेना। पर्वत के साथ मिली हुई सेना।

जहां हीनता प्रकाशित हो वहां अनु और उप के योग में द्वितीया होती है। जैसे। श्रीमतीं विजयीनीमनु उप वा सर्वे राजानः। सब राजा श्रीमती विजयिनी से छोटे हैं।

जहां कोई चिह्न, अथवा किसी विशेष अर्थात् भेद को प्राप्त कोई पदार्थ, अथवा अंश, अथवा वीप्सा, समझी जाय वहां प्रति, परि और अनु इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है।

चिह्न का उदाहरण। जैसे वृक्षं प्रति विद्योतते विद्युत। वृक्ष की ओर बिजली चमकती है। यहां वृक्ष के प्रकाश से बिजली का प्रकाश जाना जाता है। इस लिये वृक्ष चिह्न है।

किसी प्रकार अर्थात् विशेष को प्राप्त पदार्थ का उदाहरण। जैसे। विष्णुं प्रति भक्तो यज्ञदत्तः। यज्ञदत्त विष्णु का भक्त। यहां यज्ञदत्त विष्णु की भक्ति को प्राप्त है।

अंश का उदाहरण। जैसे। लक्ष्मीर्हरिं प्रति। विष्णु की लक्ष्मी अर्थात् लक्ष्मी विष्णु का भाग है।

वीप्सा का उदाहरण । जैसे । वृक्षं वृक्षं प्रति सिञ्चति । वृक्ष वृक्ष प्रति सींचता है ।

ऐसे ही परि और अनु के योग में भी जानो ।

जहां गुण क्रिया और द्रव्य के साथ काल और पथ का निरन्तर संयोग रहता है वहां काल और पथवाचक शब्द के आगे द्वितीया विभक्ति आती है ।

काल के उदाहरण । मासं कल्याणी । महीना भर अच्छी । मासमधीते । महीना भर पढ़ता है । मासं गुडधाना । महीना भर गुड़धनिया । अर्थात् गुड़ और भूना हुआ यव । इन संस्कृत के उदाहरणों में क्रम से गुण क्रिया और द्रव्य के साथ मास रूप काल का निरन्तर संयोग है ।

पथ के उदाहरण । क्रोशं कुटिला नदी । कोस भर तक टेढ़ी नदी । क्रोशमधीते । कोस भर तक पढ़ता है । क्रोशं पर्वतः । कोस भर तक पर्वत । इन संस्कृत के उदाहरणों में क्रम से गुण क्रिया और द्रव्य के साथ कोस रूप पथ का निरन्तर संयोग है । इस लिये द्वितीया विभक्ति आई है ।

जहां निरन्तर संयोग नहीं रहता वहां द्वितीया नहीं होती । जैसे । मासस्य द्विरधीते । महीने में दो बार पढ़ता है । क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः । कोस भर में थोड़ी दूर तक पर्वत ।

यद्यपि क्त्वा, और तमुन्, ये प्रत्यय कृदन्त प्रकरण के हैं तथापि क्त्वा प्रत्ययान्त और तुमुन्प्रत्ययान्त शब्दों का यहां अधिक काम पड़ता है इस लिये उन को यहीं लिखते हैं ।

जिन दो आदि अनेक धातुओं का कर्त्ता एक ही हो उन में से जो धातु पूर्वकालिक क्रिया को कहे उस के आगे क्त्वा प्रत्यय आता है । जैसे । स्नात्वा व्रजति । स्नान करके जाता है । अर्थात्

पहिले स्नान करता है तब जाता है। यहां "स्ना" (नहांना) और "व्रज" (जाना) इन दोनों धातुओं का एक ही कर्त्ता है और उन में से स्ना धातु पूर्वकालिक क्रिया को प्रकाश करता है। इस लिये स्ना धातु के आगे क्त्वा प्रत्यय आया है। भुक्त्वा पीत्वा व्रजति। खा पीकर जाता है। यहां "भुज" (खाना) "पा" (पीना) ये दोनों धातु पूर्वकालिक क्रिया को प्रकाश करते हैं। इस लिये इन दोनों के आगे क्त्वा प्रत्यय आया है।

जहां किसी नञ् भिन्न पूर्वपद के साथ क्त्वाप्रत्ययान्त का समास होता है वहां क्त्वा को य आदेश होता है। जैसे प्रणम्य। प्रणाम करके। यहां प्र और नत्वा इन दोनों का समास हुआ है। ऐसे ही आदाय इत्यादि प्रयोग भी जानो।

जहां नञ् के साथ समास होता है वहां क्त्वा को य नहीं होता। जैसे। अकृत्वा। नहीं करके। यहां नञ् के साथ समास है। इस लिये क्त्वा को य नहीं हुआ है।

जहां एक क्रिया के निमित्त कोई दूसरी क्रिया पास रहती है वहां प्रथम क्रिया के वाचक धातु के आगे भविष्य अर्थ में तुमुन् प्रत्यय आता है। जैसे। कृष्णं द्रष्टुं याति। कृष्ण को देखने जाता है। यहां देखना क्रिया के निमित्त जाना क्रिया निकटवर्त्ती है। इस लिये देखना क्रिया के वाचक दृश धातु के आगे भविष्य अर्थ में तुमुन् प्रत्यय हुआ है।

जहां दो कर्म्मों में से एक उद्देश्य और दूसरा विधेय हो वहां हिन्दी में उद्देश्य के आगे "को" विभक्ति रहती है और विधेय के आगे उस का लोप होता है। जैसे। सुग्रीवो रामं सखायं चकार। सुग्रीव ने राम को मित्र बनाया। यहां राम उद्देश्य और मित्र विधेय है।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमाम् । रमे । रमाः ।
रमा को । दोनों रमाओं को ।
रमाओं को ।
सर्वाम् । सर्वे सर्वाः ।
तिस्रः ।
मतिम् । मती । मतीः ।
नदीम् । नद्यौ । नदीः ।
श्रियम् । श्रियौ । श्रियः ।

स्त्रियम् । स्त्रीम् । स्त्रियौ ।
स्त्रियः । स्त्रीः ।
धेनुम् । धेनू । धेनूः ।
वधूम् । वध्वौ । वधूः ।
भ्रुवम् । भ्रुवौ । भ्रुवः ।
दुहितरम् । दुहितरौ । दुहितॄः ।
स्वसारम् । स्वसारौ । स्वसॄः ।
द्याम् । द्यावौ । द्याः ।
नावम् । नावौ । नावः ।

स्वसृ शब्द के शेषरूप दुहितृ शब्द के समान जानो ।

कोष ।

निदाघ=ग्रीष्म ऋतु ।

धर्म्मज्ञ=धर्म्मशास्त्र जाननेवाला
कैवर्त्त । मलाह ।

धातु ।

याच. भ्वा. उभय. द्विक=मांगना ।
लिट् । ययाचे ।
(नश)
णिच् । नाशयति ।
(वृध)
णिच् । वर्द्धयते ।
शुष. दिवा. पर. अक.=सूखना ।
णिच् । शोषयति ।
मन. अवपूर्वक. दिवा. आत्म. सक.=अनादर क. ।
अवमन्यते ।

दुह. अदा उभय. द्विक.=दूहना ।
दोग्धि ।
(चल)
णिच् । चालयति ।
पठ भ्वा. पर. सक.=पढ़ना ।
णिच् । पाठयति ।
मान. चुरा. उभ. सक.=आदर क. ।
मानयति ।
पाल. चुरा. उभ. सक.=पालन क. ।
पालयति ।

संस्कृत वाक्य।

हरिः क्षीरनिधिं रमां ययाचे। कुमतिः सर्वां श्रियं नाशयति। विष्णुमित्रस्तिस्रो विद्याः पठति। विद्या मतिं वर्द्धयते। निदाघः स्वल्पा नदीः शोषयति। धर्म्मज्ञः स्त्रियं नावमन्यते। गोपालो धेनुं पयो दोग्धि। श्वश्रूर्वधूं धर्म्मं शास्ति। मदनमोहनो भ्रुवौ चालयति। रामदत्तो दुहितरं पाठयति। विष्णुमित्रः स्वसारं मानयति इन्द्रो द्यां पालयति। कैवर्त्तो नावं चालयति।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्दः।

ज्ञानम्। ज्ञाने ज्ञानानि।	अन्यतरत्। अन्यतरे। अन्यतराणि।
ज्ञानको। दोनों ज्ञानोंको। ज्ञानोंको।	इतरत्। इतरे। इतराणि।
सर्वम्। सर्वे। सर्वाणि।	पूर्वम्। पूर्वे। पूर्वाणि।
कतरत्। कतरे। कतराणि।	वारि वारिणी। वारीणि।
कतमत्। कतमे। कतमानि।	दधि। दधिनी। दधीनि।
अन्यत् अन्ये। अन्यानि।	मधु। मधुनी। मधूनि।

सर्व शब्द से लेकर पूर्व शब्द पर्य्यन्त सात शब्दों के रूप शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

कोष।

वारिद=मेघ। मधुकर=भौंरा।

धातु।

(दा)
लिट् ददौ।

मन्थ· क्र्या· पर· सक·=मथना।
मथ्नाति।

ज्ञा· क्र्या· पर· सक·=जानना।
जानाति।

पा· भ्वा· पर· सक·=पीना।
लिट्। पपौ।

वृष· भ्वा· पर सक·=बरसना।
वर्षति।

संस्कृत वाक्य ।

गुरुर्ज्ञानं ददौ । ज्ञानी सर्वं मिथ्या जानाति । अन्यन्न वेद्मि । वारिदो वारि वर्षति । दधि मथ्नाति गोपिका । मधुकरो मधूनि पपौ ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहम् । दुहौ । दुहः ।

दूहनेवाले को । दोनों दूहने-वालों को । दूहनेवालों को ।

अनड्वाहम् । अनड्वाहौ । अनडुहः ।

चतुरः ।

पञ्च ।

षट् ।

अष्टौ । अष्ट ।

तम् । तौ । तान्

उस को । उसे । उन दोनों को । उन को ।

त्वाम् । त्वा । युवाम् । वाम् । युष्मान् । वः ।

तुझे । तुम दोनों को । तुम को ।

माम् । मा । आवाम् । नौ । अस्मान् । नः ।

मुझे । हम दोनों को । हम को ।

कम् । कौ । कान् ।

किस को । किन दोनों को । किन को ।

इमम् । एनम् । इमौ । एनौ । इमान् । एनान् ।

इस को । इन दोनों को । इन को ।

यम् । यौ । यान् ।

जिस को । जिन दोनों को । जिन को ।

एतम् । एनम् । एतौ । एनौ । एतान् । एनान् ।

इस को । इन दोनों को । इन को ।

अमुम् । अमू । अमून् ।

इस को । इन दोनों को । इन को ।

उस को । उन दोनों को । उन को ।

सम्राजम् । सम्राजौ । सम्राजः ।

भूभृतम् । भूभृतौ । भूभृतः ।

भवन्तम् । भवन्तौ । भवतः ।

धीमन्तम् । धीमन्तौ । धीमतः ।

गच्छन्तम् । गच्छन्तौ । गच्छतः ।

प्रशामम् । प्रशामौ । प्रशामः ।

बुधम् । बुधौ । बुधः ।

अग्निमथम् । अग्निमथौ । अग्निमथः ।

प्राञ्चम् । प्राञ्चौ । प्राचः ।

प्राञ्चम् । प्राञ्चौ । प्राञ्चः ।

उदञ्चम् । उदञ्चौ । उदीचः ।

महान्तम् । महान्तौ । महतः । दण्डिनम् । दण्डिनौ । दण्डिनः ।
महिमानम् । महिमानौ । महिम्नः । पन्थानम् । पन्थानौ । पथः ।
वेधसम् । वेधसौ । वेधसः ।
यज्वानम् । यज्वानौ । यज्वनः । विद्वांसम् । विद्वांसौ । विदुषः ।
युवानम् । युवानौ । यूनः । गरीयांसम् । गरीयांसौ । गरीयसः ।
राजानम् । राजानौ । राज्ञः । पुमांसम् । पुमांसौ । पुंसः ।

भवत् शब्द और महत् शब्द के शेष रूप क्रम से धीमत् शब्द और गच्छत् शब्द के सदृश होते हैं ।

कोष ।

सामन्त=छोटे राजा । गीष्पति=वृहस्पति ।

धातु ।

ह्वे· आङ्· पूर्वक· भ्वा· उभ· सक·=पुकाराना । आह्वयति ।
इ· अदा· पर· सक·=प्राप्त हो । जाना । पाना । एति ।
भक्ष· चुरा· उभ· सक·=खाना । णिच् । भक्षयति ।
शंस· प्रपूर्वक· भ्वा· पर· सक·=प्रशंसा क· । स्तुति क· । लिट् । प्रशशंसुः ।
श्रि· भ्वा· सम्· आङ्· पूर्वक· उभ· सक·=सेवा करना । समाश्रयन्ते ।
जि· भ्वा· पर· द्विक·=जीतना । जयति ।
आस· अधिपूर्वक· अदा· आत्म· अक·=बैठना । अध्यास्ते ।
विश·अभि· निपूर्वक·तुदा·आत्म·=पैठना । अभिनिविशते ।
(गम्) अनुपूर्वक·=पीछे जाना । लिट् । अनुजगाम ।
(भुज) णिच् । लिट् । भोजयामासुः ।
दृ· सम्·आङ् पूर्वक· तुदा· आत्म· प्रच्छ· तुदा· पर· द्विक·=पूछना ।

सक०=आदर करना । | पृच्छति ।
समाद्रियते ।
नम० प्रपूर्वक० भ्वा० पर० सक०= त्यज० परिपूर्वक० भ्वा पर० सक०=
प्रणाम क० । | त्यागना । छोड़ना ।
लिट् । प्रणेमुः । | परित्यजति ।

संस्कृत वाक्य ।

देवदत्तो गां दोग्धुं दुहमाह्वयति । यज्ञदत्तोऽनड्वाहं सस्यं भक्षयति । स चतुरो वेदान् पपाठ । मां त्वाञ्चान्तरा विष्णुः । सम्राजं सामन्ताः समाश्रयन्ते । भूभृतमध्यास्ते यज्ञदत्तः । भवन्तं गीष्पतिं मन्ये सर्वविद्याविशारदम् । धीमन्तं श्रियः समाश्रयन्ते । वनं गच्छन्तं रामं लक्ष्मणोऽनुजगाम । प्रशामं को न समाद्रियते । बुधं सर्वे समाद्रियन्ते । अग्निमथमृत्विज आह्वयन्ति । य इन्द्रियाणि जयति तमेव महान्तं मन्ये । धार्म्मिको महिमानमेति । यज्वानं बुधाः प्रशशंसुः । अविवेकिनं युवानं गर्वोऽभिनिविशते । राजानं परितोऽमात्यास्तिष्ठन्ति । गृहस्था दण्डिनो भोजयामासुः । नागरिकं पन्थानं पृच्छति । देवा वेधसं प्रणेमुः । विद्वांसं सर्वे आद्रियन्ते । गरीयांसं कोऽपि नाभिभवति । सुनिश्चला प्रकृतिः पुमांसं कदापि न परित्यजति ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवम् । दिवौ । दिवः । | इमाम् । एनाम् । इमे । एने ।
स्वर्ग को । दोनों स्वर्गों को । | इमाः । एनाः ।
स्वर्गों को । | याम् । ये । याः ।
चतस्रः । | एताम् । एनाम् एते । एने ।
ताम् । ते । ताः । | एताः । एनाः ।
काम् । के । काः । | अमूम् । अमू । अमूः ।
वाचम् । वाचौ । वाचः ।

स्रजम् । स्रजौ । स्रजः ।	आपदम् आपदौ । आपदः ।
त्विषम् । त्विषौ । त्विषः ।	अपः ।
गिरम् । गिरौ । गिरः ।	दिशम् । दिशौ । दिशः ।

कोष ।

रवि=सूर्य्य ।	धार्म्मिक=धर्म्म करनेवाला ।

धातु ।

काश· प्रपूर्वक· भ्वा· आत्म· अक·	भृ· जुहो· पर· सक·=धारण क· ।
=प्रकाश क· ।	लुङ् । अभार्षीत् ।
णिच् । प्रकाशयति ।	(चर) उत्पूर्वक ।
वद· भ्वा· पर· सक·=बोलना ।	णिच् । उच्चारयन्ति ।
कहना ।	तृ· भ्व· पर· सक·=तरना ।
वदन्ति ।	पार होना । तैरना ।
	लिट् । ततार ।

संस्कृत वाक्य ।

यज्वानो दिवं गच्छन्ति । रविश्चतस्रो दिशः प्रकाशयति । विद्वांसः सत्यां वाचं वदन्ति । मालाकारः स्रजमकार्षीत् । दीपस्त्विषमभार्षीत् । सधवो मधुरां गिरमुच्चारयन्ति । तृषितोऽपः पपौ । धार्मिक आपदं ततार ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वाः । वारी । वारि ।	इदम् । एनत् । इमे । एने ।
जल को । दोनों जलों को ।	इमानि । एनानि ।
जलों को ।	यत् । ये । यानि ।
चत्वारि ।	एतत् । एनत् । एते । एने ।
तत् । ते । तानि ।	एतानि । एनानि ।
किम् । के । कानि ।	अदः । अमू । अमूनि ।

धीमत् । धीमती । धीमन्ति । अहः । अहनी । अह्नी ।
महत् । महती । महान्ति । अहानि ।
जगत् । जगती जगन्ति । पयः । पयसी । पयांसि ।
धाम । धामनी । धाम्नी । हविः । हविषी । हवींषि ।
धामानि । धनुः धनुषी धनूंषी ।
कर्म्म । कर्म्मणी । कर्म्माणि ।

तत् शब्द से लेकर महत् शब्द पर्य्यन्त आठ शब्द शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के सदृश होते हैं और जगत् शब्द महत् शब्द के धामन् शब्द गरिमन् शब्द के कर्म्मन् शब्द यज्वन् शब्द के और पयस् शब्द वेधस् शब्द के तुल्य होते हैं ।

कोष ।

मानी=अभिमानी ।

धातु ।

(पा)
पिवति ।
(गम) अधिपूर्वक·=पाना । जानना ।
अधिगच्छन्ति ।

भञ्ज· रुधादि· पर· सक=तोड़ना।
लिट् । बभञ्ज ।
हु· जुहोत्या· पर· सक·=हुनना। होम क· ।
जुह्वति ।

संस्कृत वाक्य ।

माणवको वाः पिवति । विद्वांसो धीमत् कुलं समाश्रयन्ते । परिश्रमिणो महद्धनमधिगच्छन्ति । ईशो जगत् पालयति । मानिनो निजं धाम कदापि न त्यजन्ति । बुधाः सत् कर्म्म कुर्वन्ति । निदाघोऽहर्वर्द्धयति पयांसि वर्षन्त्यनिशं पयोदाः । ऋत्विजो हविर्जुह्वति । रामो धनुर्बभञ्ज ।

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हिन्दी वाक्य ।

सुग्रीव ने राम को मित्र बनाया । सज्जन लोग पिता की पूजा करते हैं विष्णुमित्र भाई को उपदेश करता है । मुनि ने राम की पूजा की । पतिव्रता (स्त्री) पति को उपदेश करती है । विष्णु ने मुनी की पूजा की । वे उस को सज्जन जानते हैं । उन्होंने पण्डित की पूजा की । याचक दाता के (पास) जाते हैं । सरस्वती ने ब्रह्मा को पति बनाया । दिलीप ने गौ की पूजा की ॥

विद्या बुद्धि को बढ़ाती है । इन्द्र स्वर्ग का पालन करता है । विष्णु ने क्षीर समुद्र से लक्ष्मी मांगी । धर्म्मशास्त्र जाननेवाला स्त्री का अनादर नहीं करता । गुआला धेनु से दूध दूहता है । रामदत्त लड़की को पढ़ाता है । ग्रीष्म ऋतु छोटी नदियों को सुखाती है दुर्बुद्धि सकल सम्पत्ति का नाश करती है । सास बहू को धर्म्म सिखाती है । विष्णुमित्र बहन का आदर करता है । मदनमोहन दोनों भौंओं को फड़काता है । मलाह नाव खेवता है । विष्णुमित्र तीन विद्या पढ़ता है ॥

ज्ञानी सकल (जगत) को मिथ्या जानता है । मेघ पानी बरसता है । भौंरे ने फूल का रस पीया । गुरु ज्ञान देता है । मैं और कुछ नहीं जानता । गोपी दही मथती है ॥

लक्ष्मण वन जाते हुए राम के पीछे गये । हमारे और तुम्हारे बीच में विष्णु हैं । मैं उसी को बड़ा जानता हूं जो इन्द्रियों को जीतता है । गृहस्थों ने दरिद्रियों को भोजन कराया । मैं आप को जो सकल विद्याओं में निपुण हैं बृहस्पति जानता हूं । देवताओं ने ब्रह्मा को प्रणाम किया । पण्डितों ने यज्ञ करानेवाले की प्रशंसा की । देवदत्त गौ दूहने के लिये दूहनेवाले को

बुलाता है। छोटे २ राजा चक्रवर्ती की आसरा लेते हैं। पण्डित का आदर सब करते हैं। प्रशान्त (पुरुष) का आदर कौन नहीं करता। धार्म्मिक (पुरुष) बड़ाई पाता है। अविवेकी तरुण (पुरुष) में गर्व प्रवेश करता है। यज्ञदत्त बैल से (खेत का) अन्न चराता है। ऋत्विक लोग आग मथनेवाले को बुलाते हैं। उस ने चारो वेद पढ़े। यज्ञदत्त पहाड़ पर बैठा है। लक्ष्मी बुद्धिमान के पास रहती हैं। राजा की चारो ओर मन्त्री रहते हैं। नगर निवासी से राह पूछता है। स्थिर स्वभाव, पुरुष को कधीं नहीं छोड़ता। श्रेष्ठ (पुरुष) का तिरस्कार कोई नहीं करता। पण्डित का आदर सब करते हैं॥

माली ने माला बनाई। यज्ञ करनेवाले स्वर्ग जाते हैं। सज्जन मधुर वाणी बोलते हैं। सूर्य्य चारो दिशा प्रकाश करता है। दीपक ने कान्ति धारण की। पियासे ने पानी पीया। धार्म्मिक पुरुष विपत्ति के पार हुआ। पण्डित लोग सत्य वाणी बोलते हैं॥

ईश्वर जगत का पालन करता है। मेघ निरन्तर जल बरसते हैं। पण्डित लोग बुद्धिमान कुल का आश्रयण करते हैं। मानी लोग अपने तेज को कधीं नहीं छोड़ते। लड़का पानी पीता है। परिश्रमी (पुरुष) बहुत धन पाते हैं। ऋत्विक लोग होम की वस्तु हुनते हैं। ग्रीष्म ऋतु दिन को बढ़ाती है। पण्डित लोग अच्छा काम करते हैं। राम ने धनुष तोड़ा॥

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

हिन्दी शब्द।

हिन्दी में द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी पर्य्यन्त सात विभक्तियों के एकवचनों में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्दों के अन्त स्वर ज्यों के त्यों बने रहते हैं अर्थात् न उन में

कुछ विकार होता है और न उन को कुछ आगम होता है। केवल आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त आकार को एकार होता है। और बहुवचनों में ह्रस्व अकारान्त और दीर्घ आकारान्त शब्दों के अन्त स्वरों को अनुनासिकओकार और ह्रस्व इकारान्त शब्दों के अन्त इकार के आगे यों और दीर्घ ईकारान्त शब्दों के अन्त ईकार को ह्रस्व इकार और उस के आगे यों और ह्रस्व उकारान्त शब्दों के अन्त उकार के आगे ओं और दीर्घ ऊकारान्त शब्दों के अन्त ऊकार को ह्रस्व उकार और उस के आगे ओं और एकारान्त और ओकारान्त शब्दों के अन्त स्वरों के आगे ओं होता है। केवल आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त आकार के आगे अनुनासिक ओं का आगम होता है उस को ओं नहीं होता। जैसे ॥

पुल्लिङ्ग।

एकवच॰	बहुवच॰
बालक को	बालकों को
लड़के को	लड़कों को
मुनि को	मुनियों को
माली को	मालियों को
साधु को	साधुओं को
भालू को	भालुओं को
चौबे को	चौबेओं को
कोदो को	कोदोओं को

स्त्रीलिङ्ग।

बात को	बातों को
गैया को	गैयाओं को

तिथि को	तिथियों को
नदी को	नदियों को
धेनु को	धेनुओं को
बहू को	बहुओं को
सरसों को	सरसोंओं को

पूर्व लिखित चन्द्रमा राजा इत्यादि संस्कृत के और काका, बुधुआ इत्यादि हिन्दी के शब्दों के रूप द्वितीया आदि सप्तमी पर्य्यन्त सात विभक्तियों के दोनों वचनों में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के समान होते हैं॥

हिन्दी के कोई २ वैयाकरण भूतकाल के छ भेद मानते हैं हेतुहेतुमद्भूत, अपूर्णभूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत, आसन्नभूत, और सन्दिग्धभूत।

हेतुहे· ईंधन पाता तो भात पकाता। एधश्चेदलप्स्यत ओदनमपक्ष्यत्।

अपू· भात पकाता था। ओदनं पचन्नभूत्।

सामा· भात पकाया। ओदनमपाक्षीत्।

पूर्ण· भात पकाया था। ओदनं पक्कवानभूत्।

आस· भात पकाया है। ओदनं पक्कवानस्ति।

सन्दि· भात पकाया हो। कदाचिदोदनं पक्कवान् स्यात्।

तीसरा पाठ।

करण कारक।

करण उसे कहते हैं जिस के व्यापार अर्थात् क्रिया के अनन्तर ही कर्त्ता की क्रिया का फल सिद्ध हो। जैसे। व्याधो बाणेन मृगं हन्ति। व्याध बाण से मृग को मारता है। यहां व्याध के धनुष खींचने आदि क्रिया से बाण में ऐसी गतिरूप क्रिया उत्पन्न

होती है कि उस के अनन्तर ही कर्त्ता की क्रिया का फल अर्थात् मृग का मरना सिद्ध होता है।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में करण के आगे तृतीया विभक्ति आती है। संस्कृत में तृतीया विभक्ति के प्राय "एन" आदि चिह्न हैं और हिन्दी में उस का "से" चिह्न है। जैसे ऊपर के उदाहरण में संस्कृत में बाण शब्द के अन्त में "एन" चिह्न है और हिन्दी में उसी शब्द के आगे "से" चिह्न है। कहीं २ "करके" "के द्वारा" इत्यादि चिह्न भी आते हैं। संस्कृत में अनुक्त कर्त्ता के आगे भी तृतीया विभक्ति आती है।

संस्कृत में तृतीया विभक्ति।

एकव॰	द्विव॰	बहुव॰
टा	भ्याम्	भिस्

संस्कृत में भविष्य अनद्यतन काल। लुट् लकार। हिन्दी में भविष्य काल।

लुट् लकार के प्रथम पुरुषसञ्ज्ञक प्रत्यय के स्थान में डा आदि आदेश।

एकव॰	द्विव॰	बहुव॰
डा	रौ	रस्

(अस् और भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	भविता	भवितासि	भवितास्मि
एकवच॰	होवेगा	होवेगा	होऊंगा
एकवच॰	होवेगी	होवेगी	होऊंगी
द्विवच॰	भवितारौ	भवितास्थः	भवितास्वः
बहुवच॰	होवेंगे	होगे	होवेंगे

बहुवच॰	होवेंगी	होगी	होवेंगी
बहुवच॰	भवितारः	भवितास्थ	भवितस्मः
बहुवच॰	होवेंगे	होगे	होवेंगे
बहुवच॰	होवेंगी	होगी	होवेंगी

लुट् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एकही से होते हैं। परन्तु इन प्रत्येक क्रियाओं के नीचे जो हिन्दी की दो ही दो क्रिया लिखी गई हैं इस का कारण यह है कि अस धातु की वर्तमानकालिक और भूतकालिक क्रियाओं को छोड़ कर इतर सकल क्रियाओं के बदले में हिन्दी की वेई क्रिया जोड़ी जाती हैं जो भू धातु की क्रियाओं के बदले में आती हैं।

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स भविता	त्वं भवितासि	अहं भवितास्मि
तौ भवितारौ	युवां भवितास्थः	आवां भवितास्वः
ते भवितारः	यूयं भवितास्थ	वयं भवितास्मः

स्त्रीलिङ्ग।

सा भविता	त्वं भवितासि	अहं भवितास्मि
ते भवितारौ	युवां भवितास्थः	आवां भवितास्वः
ता भवितारः	यूयं भवितास्थ	वयं भवितास्मः

नपुंसक लिङ्ग।

तद् भविता	त्वं भवितासि	अहं भवितास्मि
ते भवितारौ	युवां भवितास्थः	आवां भवितास्वः
तानि भवितारः	यूयं भवितास्थ	वयं भवितास्मः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	कर्त्ता	कर्त्तासि	कर्त्तास्मि
एकव॰	करेगा	करेगा	करूंगा
एकव॰	करेगी	करेगी	करूंगी
द्विव॰	कर्त्तारौ	कर्त्तास्थः	कर्त्तास्वः
बहुव॰	करेंगे	करोगे	करेंगे
बहुव॰	करेंगी	करोगी	करेंगी
बहुव॰	कर्त्तारः	कर्त्तास्थ	कर्त्तास्मः
बहुव॰	करेंगे	करोगे	करेंगे
बहुव॰	करेंगी	करोगी	करेंगी

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह करेगा	तूं करेगा	मैं करूंगा
वे दोनों करेंगे	तुम दोनों करोगे	हम दोनों करेंगे
वे करेंगे	तुम करोगे	हम करेंगे

स्त्री लिङ्ग ।

वह करेगी	तूं करेगी	मैं करूंगी
वे दोनों करेंगी	तुम दोनों करोगी	हम दोनों करेंगी
वे करेंगी	तुम करोगी	हम करेंगी

नपुंसक के बदले में पुल्लिङ्ग के समान जानो।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	एधिता	एधितासे	एधिताहे

एकव॰	बढ़ेगा	बढ़ेगा	बढ़ूंगा
एकव॰	बढ़ेगी	बढ़ेगी	बढ़ूंगी
द्विव॰	एधितारौ	एधितासाथे	एधितास्वहे
बहुव॰	बढ़ेंगे	बढोगे	बढ़ेंगे
बहुव॰	बढ़ेंगी	बढ़ोगी	बढ़ेंगी
बहुव॰	एधितारः	एधिताध्वे	एधितास्महे
बहुव॰	बढेंगे	बढोगे	बढेंगे
बहुव॰	बढेंगी	बढोगी	बढेंगी

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स एधिता	त्वमेधितासे	अहमेधिताहे
तावेधितारौ	युवामेधितासाथे	आवामेधितास्वहे
त एधितारः	यूयमेधिताध्वे	वयमेधितास्महे

स्त्रीलिङ्ग ।

सैधिता	त्वमेधितासे	अहमेधिताहे
ते एधितारौ	युवामेधितासाथे	आवामेधितास्वहे
ता एधितारः	यूयमेधिताध्वे	वयमेधितास्महे

नपुंसक लिङ्ग ।

तदेधिता	त्वमेधितासे	अहमेधिताहे
ते एधितारौ	युवामेधितासाथे	आवामेधितास्वहे
तान्येधितारः	यूयमेधिताध्वे	वयमेधितास्महे

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

संस्कृत में समान्य भविष्यकाल । ऌट् लकार । हिन्दी में भभिष्यकाल ।

(अस् और भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्विव॰	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहुव॰	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

लट् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एकही से होते हैं।

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में हिन्दी की वेई दो २ क्रिया आती हैं जो इन धातुओं के लुट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं॥

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स भविष्यति	त्वं भविष्यसि	अहं भविष्यामि
तौ भविष्यतः	युवां भविष्यथः	आवां भविष्यावः
ते भविष्यन्ति	यूयं भविष्यथः	वयं भविष्यामः

स्त्रीलिङ्ग।

सा भविष्यति	त्वं भविष्यसि	अहं भविष्यामि
ते भविष्यतः	युवां भविष्यथः	आवां भविष्यावः
ता भविष्यन्ति	यूयं भविष्यथ	वयं भविष्यामः

नपुंसकलिङ्ग।

तद् भविष्यति	त्वं भविष्यसि	अहं भविष्यामि
ते भविष्यतः	युवां भविष्यथः	आवां भविष्यावः
तानि भविष्यन्ति	यूयं भविष्यथ	वयं भविष्यामः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	करिष्यति	करिष्यसि	करिष्यामि

द्विव.	करिष्यतः	करिष्यथः	करिष्यावः
बहुव.	करिष्यन्ति	करिष्यथ	करिष्यामः ।

इन संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वेई दो २ क्रिया आती हैं जो इस धातु के लुट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह करेगा । इत्यादि । पूर्वत ।

(एध)

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	एधिष्यते	एधिष्यसे	एधिष्ये
द्विव.	एधिष्येते	एधिष्येथे	एधिष्यावहे
बहुव.	एधिष्यन्ते	एधिष्यध्वे	एधिष्यामहे

इन संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं क्रियाओं को जानो जो इस धातु के लट् लकार की क्रियाओं के बदले में लिखी गई हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स एधिष्यते	त्वमेधिष्यसे	अहमेधिष्ये
तावेधिष्येते	युवामेधिष्येथे	आवामेधिष्यावहे
त एधिष्यन्ते	यूयमेधिष्यध्वे	वयमेधिष्यामहे

स्त्रीलिङ्ग ।

सैधिष्यते	त्वमेधिष्यसे	अहमेधिष्ये
ते एधिष्येते	युवामेधिष्येथे	आवामेधिष्यावहे
ता एधिष्यन्ते	यूयमेधिष्यध्वे	वयमेधिष्यामहे

नपुंसकलिङ्ग ।

तदेधिष्यते	त्वमेधिष्यसे	अहमेधिष्ये
ते एधिष्येते	युवामेधिष्येथे	आवामेधिष्यावहे
तान्येधिष्यन्ते	यूयमेधिष्यध्वे	वयमेधिष्यामहे

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्तपुल्लिङ्ग शब्द ।

रामेण । रामाभ्याम् । रामैः । सख्या । सखिभ्याम् । सखिभिः ।

राम से । दोनों रामों से । कृतिभिः ।

रामों से । सुधिया । सुधीभ्याम् । सुधीभिः ।

सर्वेण । सर्वाभ्याम् । सर्वैः । साधुना । साधुभ्याम् । साधुभिः ।

त्रिभिः । स्वयम्भुवा । स्वयम्भूभ्याम् ।

पूर्वेण । पूर्वाभ्याम् । पूर्वैः । स्वयम्भूभिः ।

मुनिना । मुनिभ्याम् । मुनिभिः । दात्रा । दातृभ्याम् । दातृभिः ।

पत्या । पतिभ्याम् । पतिभिः । गवा । गोभ्याम् । गोभिः ।

कोष ।

वाली=एक वानर का नाम । नन्दिनी=वसिष्ठ की धेनु का नाम ।

संस्कृत वाक्य ।

रामेण बाणेन हतो वाली । मुनिभिः पूजितो रामो दण्डकारण्यवासिभिः । पत्या सङ्गता सीता । सुग्रीवेण सख्या सार्द्धं रामः समुद्रतटं जगाम । सुधीभिः शोभते सभा । दृष्टैः साधुभिः कृतकृत्यो भविष्यामि । स्वयम्भुवा कृता सृष्टिः । दात्रा समः पुण्यवान् कोऽपि नास्ति । दिलीपः नन्दिन्या गवा सह वनं जगाम ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

प्रकृत्यादि गण में पढ़े हुए शब्दों के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। प्रकृत्या चारु:। स्वभाव से सुन्दर। इत्यादि।

"दिव" (खेलना) धातु के करण के आगे द्वितीया और तृतीया दोनों विभक्तियां क्रम से आती हैं। जैसे। अक्षैर्दीव्यति। अक्षान् दीव्यति। पासों से खेलता है। यहां संस्कृत में दोनों विभक्तियां क्रम से आई हैं॥

यदि फल का लाभ सूचित हो तो काल और पथ के अत्यन्त संयोग में उन के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। अह्ना क्रोशेन वा गङ्गाष्टकमधीतम्। एक दिन वा एक कोस में गङ्गाष्टक पढ़ा। यहां पढ़ना क्रिया के साथ काल और पथ का अत्यन्त संयोग है।

जहां फल की प्राप्ति नहीं रहती वहां तृतीया नहीं होती। जैसे। मासमधीतं नायातम्। महीने भर पढ़ा नहीं आया। यहां संस्कृत में तृतीया नहीं हुई॥

सह शब्द और उसके समान अर्थवाले अन्य शब्दों के योग में अप्रधान (कर्त्ता आदि) के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। पुत्रेण सहागत: पिता। पुत्र के साथ पिता आया। यहां संस्कृत में पुत्र शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आई है। क्योंकि पुत्र आगमन क्रिया का अप्रधान कर्त्ता है। ऐसेही साकम्, सार्द्धम्, समम्, इत्यादि शब्दों के योग में भी जानो। विना हीन इत्यादि शब्दों के योग में भी तृतीया होती है॥

जिस किसी फूटे टूटे वा टेढ़े मेढ़े अङ्ग से अङ्गी में विकार पाया जाय उस अङ्गवाचक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। अक्ष्णा काण:। आंख का काना। पादेन खञ्ज:। पांव का लंगड़ा। यहां संस्कृत में तृतीया हुई है।

यदि कोई पदार्थ किसी विशेष अर्थात् भेद को प्राप्त हुआ हो और वह भेद किसी दूसरे पदार्थ से जाना जाय तो इस दूसरे पदार्थ के वाचक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। जटाभिस्तापसः। जटाओं से तपस्वी। अर्थात् इस का तपस्वीपन इस की जटाओं से जाना जाता है॥

हेतु अर्थात् कारणवाचक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। दण्डेन घटः। डंडे से (बना हुआ) घड़ा। पुण्येन दृष्टो हरिः। पुण्य से देखे गये हरि॥

जो केवल क्रिया मात्र का कारण होता है और जिस में आप भी क्रिया रहती है उसे कारण कहते हैं। और जो गुण क्रिया और द्रव्य इन तीनों का कारण होता है और जिस में कोई क्रिया रहे वा न रहे उसे हेतु कहते हैं॥

फल भी हेतु होता है। जैसे। अध्ययनेन वसति। पढ़ने के लिये बसता है। यहां संस्कृत में तृतीया हुई॥

कहीं २ ऊपर से समझी हुई क्रिया भी कारक विभक्ति का निमित्त होती है। जैसे। अलं श्रमेण। परिश्रम से मत। अर्थात् तुम्हारे परिश्रम से कुछ होना नहीं है इस लिये परिश्रम मत करो। यहां ऊपर से समझी हुई "होना" क्रिया का परिश्रम करण है इस लिये उस के आगे तृतीया विभक्ति आई है॥

जहां वाक्य से निषिद्ध आचार सूचित हो वहां "दाण" (देना) धातु के प्रयोग में चतुर्थी के अर्थ में तृतीया होती है। जैसे। दास्या संयच्छते कामुकः। कामी (पुरुष) दासी को देता है। यहां संस्कृत में दासी शब्द के आगे चतुर्थी के बदले में तृतीया विभक्ति हुई है।

जहां निषिद्ध आचार नहीं सूचित होता वहां तृतीया नहीं किन्तु चतुर्थी होती है। जैसे भार्य्यायै संयच्छति। अपनी स्त्री को देता है।

अनन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमया । रमाभ्याम् । रमाभिः । स्त्रिया । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभिः ।
रमा से । दोनों रमाओं से । धेन्वा । धेनुभ्याम् । धेनुभिः ।
रमाओं से । वध्वा । वधूभ्याम् । वधूभिः ।
सर्वया । सर्वाभ्याम् । सर्वाभिः । भूवा । भूभ्याम् । भूभिः ।
तिसृभिः । दुहित्रा । दुहितृभ्याम् । दुहितृ-
मत्या । मतिभ्याम् । मतिभिः । भिः ।
नद्या । नदीभ्याम् । नदीभिः । द्यावा । द्योभ्याम् । द्योभिः ।
श्रिया । श्रीभ्याम् । श्रीभिः । नावा । नौभ्याम् । नौभिः ।

कोष ।

कन्दर्प=कामदेव ।

धातु ।

जि· भ्वा· पर· द्विक·=जीतना । सूच· चुरा· उभ· स·=जनाना ।
जयति । सूचित क· ।
मन्त्रि· चुरा· आत्म· सक·= सूचयन्ति ।
चुपके २ बतियाना ।
मन्त्रयते ।

संस्कृत वाक्य ।

रमया सेवितो विष्णुः । तिसृभिः शक्तिभिः शोभन्ते राजानः । मत्या प्रख्यातो यज्ञदत्तः । नदीभिः सिक्तो देशः । श्रिया विभूषितं गृहम् । स्त्रीभिस्त्रीन् लोकान् जयति कन्दर्पः । धेन्वा खादयति घासं गोपालः । वधूभिर्मन्त्रयते श्वश्रूः । भ्रुवा सूचयन्त्यर्थं चतुराः । दुहित्रा पवित्रं कुलम् । द्यावा गच्छन्ति पक्षिणः । नावा तरन्ति नदीं लोकाः ॥

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द।

ज्ञानेन। ज्ञानाभ्याम्। ज्ञानैः। वारिणा। वारिभ्याम्। वारिभिः।
ज्ञान से। दोनों ज्ञानों से। दध्ना। दधिभ्याम्। दधिभिः।
ज्ञानों से। मधुना। मधुभ्याम्। मधुभिः।

धातु।

शुध. दिवा. पर. अक. शुद्ध हो.।
शुद्ध्यति।

संस्कृत वाक्य।

ज्ञानेन संसारं तरन्ति ज्ञानिनः। न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा। दध्ना मिश्रित ओदनः। मधुना मत्तो भृङ्गः।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द।

दुहा। धुग्भ्याम्। धुग्भिः। तुझ से तुम दोनों से।
दूहने वाले से। दोनों दूहने तुम से।
वालों से। दूहने वालों से। मया। आवाभ्याम्। अस्माभिः।
अनडुहा। अनडुद्भ्याम्। अन- मुझ से। हम दोनों से। हम से।
डुद्भिः। केन। काभ्याम्। कैः।
चतुर्भिः। किस से। किन दोनों से।
पञ्चभिः। किन से।
षड्भिः। अनेन। एनेन। आभ्याम्।
अष्टभिः। अष्टाभिः। एभिः।
तेन। ताभ्याम्। तैः। इस से। इन दोनों से। इन से।
उस से। उन दोनों से। येन। याभ्याम्। यैः।
उन से। उन्हों से। जिस से। जिन दोनों से।
त्वया। युवाभ्याम्। युष्माभिः जिन से।

एतेन। एनेन। एताभ्याम्। एतैः। प्राचा। प्राग्भ्याम्। प्राग्भिः।
इस से। इन दोनों से। इन से। प्राञ्चा। प्राङ्भ्याम्। प्राङ्भिः।
अमुना। अमूभ्याम्। अमीभिः। उदीचा। उदग्भ्याम्। उदग्भिः।
इस से। इन दोनों से। इन से। महिम्ना। महिमभ्याम्। महिमभिः।
उस से। उन दोनों से उन से।

सम्राजा। सम्राड्भ्याम्। सम्राड्भिः।
भूभृता। भूभृद्भ्याम्। भूभृद्भिः।
धीमता। धीमद्भ्याम्। धीमद्भिः।
गच्छता। गच्छद्भ्याम्। गच्छद्भिः।
प्रशामा। प्रशान्भ्याम्। प्रशान्भिः।
बुधा। भुद्भ्याम्। भुद्भिः।
अग्निमथा। अग्निमद्भ्याम्। अग्निमद्भिः।

यज्वना। यज्वभ्याम्। यज्वभिः।
यूना। युवभ्याम् युवभिः।
राज्ञा। राजभ्याम्। राजभिः।
दण्डिना। दण्डिभ्याम्। दण्डिभिः।
पथा। पथिभ्याम्। पथिभिः।
वेधसा। वेधोभ्याम्। वेधोभिः।
विदुषा। विद्वद्भ्याम्। विद्वद्भिः।
गरीयसा। गरीयोभ्याम्। गरीयोभिः।
पुंसा। पुम्भ्याम्। पुम्भिः।

धातु।

शक· दिवा· उभ·—सकना। कर्म्म में लट्। शक्यते।

संस्कृत वाक्य।

दुहा दोहयति गां रामदत्तः। अनडुद्भिर्हारयति यवान् विष्णुमित्रः। सम्राजा सह विरोधो न कार्य्यः। भूभृद्भिर्भूषिता मही। धीमता शोभते कुलम्। सीतापि गच्छता पत्या गमिष्यति वनं महत्। अग्निमथाधिष्ठिता यज्ञशाला। यज्वना जितः स्वर्गः। यूना सर्वं कर्तुं शक्यते। दण्डिभिरध्युषिता काशी। राजभिः पाल्यते मही। विस्तीर्णैः पथिभिः शोभते राजधानी। इत्यादि॥

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवा । द्युभ्याम् । द्युभिः । आकाश से । दोनों आकाशों से । आकाशों से ।

चतसृभिः ।

तया । ताभ्याम् । ताभिः ।

कया । काभ्याम् । काभिः ।

अनया । एनया । आभ्याम् । आभिः ।

यया । याभ्याम् । याभिः ।

एतया । एनया । एताभ्याम् । एताभिः ।

अमुया । अमूभ्याम् । अमूभिः ।

वाचा । वाग्भ्याम् । वाग्भिः ।

स्रजा । स्रग्भ्याम् स्रग्भिः ।

त्विषा । त्विड्भ्याम् । त्विड्भिः ।

गिरा । गीर्भ्याम् । गीर्भिः ।

आपदा । आपद्भ्याम् । आपद्भिः । अद्भिः ।

दिशा । दिग्भ्याम् । दिग्भिः ।

कोष ।

शरत् ऋतु अर्थात् कुआर और कातिक ।

वाग्मी अच्छे बोलनेवाले.

धातु ।

द्युत. विपूर्वक. भ्वा. आत्म. अक.=चमकना । विद्योतते ।

स्तु. अदा. उभ. सक.=स्तुति क. । लिट् । तुष्टुवुः ।

संस्कृत वाक्य ।

निर्म्मलया दिवा शोभते शरत् । चतसृभिरवस्थाभिराक्रान्ता मानवी तनुः । वाचा जयन्ति वाग्मिनः । स्रजा विभूषितो भोगी । त्विषा विद्योतते रविः । देवा यथार्थाभिर्गीर्भिर्विष्णुं तुष्टुवुः । आपद्भिः पीडितः साधुः । अद्भिस्तृप्तः । प्राच्या दिशा सङ्गतो रविः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वारा । वार्भ्याम् । वार्भिः ।   अह्ना । अहोभ्याम् । अहोभिः ।
जलसे । दोनों जलोंसे । जलोंसे । हविषा । हविर्भ्याम् । हविर्भिः ।
चतुर्भिः ।   धनुषा । धनुर्भ्याम् । धनुर्भिः ।

कोष ।

धनञ्जय=अर्जुन

धातु ।

सिच. तुदा. उभ. स.=सीचना । हन्. अदा. पर. सक.=मारना ।
   सिञ्चन्ति ।   लिट् । जघान ।
तृप. दिवा. पर. अक.=तृप्त हो. ।
   तृप्यन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

मेघा वार्भिर्महीं सिञ्चन्ति । अहोभिः सह तापो ववृधे । हविषा तृप्यन्ति देवाः । धनञ्जयो धनुषा शिवं जघान ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

सभा की शोभा पण्डितों से होती है । राम अपने मित्र सुग्रीव के साथ समुद्र तीर गये । मैं साधुओं के दर्शन से कृतार्थ होऊंगा । राम ने बाण से वाली को मारा । ब्रह्मा की बनाई सृष्टि । दण्डकारण्यनिवासी मुनियों ने राम की पूजा की । दानी के समान पुण्यात्मा कोई नहीं है । सीता (अपने) पति से मिली । (राजा) दिलीप नन्दिनी गौ के साथ बन गये ।

गुआला धेनु को घास खिलाता है । नदियों से सींचा हुआ देश । पक्षी आकाश में गमन करते हैं । कामदेव स्त्रियों के द्वारा तीन लोक जीतता है । लक्ष्मी से सेवित विष्णु । सास बहुओं के साथ चुपके २ बात चीत करती है । तीन शक्तियों

से राजा की शोभा होती है। बुद्धि से प्रसिद्ध यज्ञदत्त। लोग नाव के द्वारा नदी के पार होते हैं। चतुर लोग भौं (के संकेत) से बातें जनाते हैं। लक्ष्मी से शोभित घर।

मन की शुद्धि जल से नहीं होती। फूल के रस से मतवाला भौंरा। ज्ञानी ज्ञान के द्वारा संसार के पार होते हैं दही से मिला हुआ भात।

चक्रवर्ती के साथ विरोध नहीं करना चाहिये। रामदत्त दूहनेवाले से गौ दुहाता है। वन जाते हुए पति के साथ सीता भी जायगी। बुद्धिमान (पुरुष) से कुल की शोभा होती है। युवा पुरुष सब कुछ कर सकता है। पहाड़ों से शोभित पृथ्वी। काशी में दण्डी बसते हैं। राजा पृथ्वी का पालन करते हैं। यज्ञशाला में आग मथनेवाला बैठा है। चौड़ी सड़कों से राजधानी शोभित होती है। यज्ञ करनेवाले ने स्वर्ग को जीत लिया। विष्णुमित्र बैलों से यव पहुंचवाता है।

भोगी (पुरुष) माला से भूषित है। निर्म्मल आकाश से शरद ऋतु की शोभा होती है। सूर्य्य कान्ति से चमकता है। मनुष्य की शरीर में चार अवस्था होती हैं। देवताओं ने यथार्थ वाणियों से विष्णु की स्तुति की। अच्छे बोलनेवाले वचन के द्वारा जय पाते हैं। सूर्य्य पूर्व दिशा से सङ्गत हुआ। विपत्ति से पीड़ित सज्जन। जलों से तृप्त॥

अर्जुन ने धनुष से शिव को मारा। दिनों के साथ सन्ताप बढ़ा। मेघ जलों से पृथ्वी को सींचते हैं। देवता होम की वस्तु से तृप्त होते हैं॥

इन वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

हिन्दी शब्द ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवच.	बहुवच.
बालक से	बालकों से
लड़के से	लड़कों से
मुनि से	मुनियों से
माली से	मालियों से
साधु से	साधुओं से
भालू से	भालुओं से
चौबे से	चौबेओं से
कोदो से	कोदोओं से

स्त्रीलिङ्ग ।

बात से	बातों से
गैया से	गैयाओं से
तिथि से	तिथियों से
नदी से	नदियों से
धेनु से	धेनुओं से
बहू से	बहूओं से
सरसों से	सरसोंओं से

चौथा पाठ ।

सम्प्रदान कारक ।

सम्प्रदान उसे कहते हैं जिसे कोई वस्तु इस प्रकार से दी जाय कि जिस में देनेवाले के स्वत्व की निवृत्ति और लेनेवाले के स्वत्व की उत्पत्ति हो । जैसे । यज्ञदत्तो विप्राय गां ददाति । यज्ञदत्त ब्राह्मण को गौ देता है । यहां विप्र सम्प्रदान है ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में सम्प्रदान के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है। संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति के बहुधा "य" इत्यादि चिह्न रहते हैं। हिन्दी में उस का "को" चिह्न है। जैसे उक्त उदाहरण में संस्कृत में विप्र शब्द के आगे "य" चिह्न है और हिन्दी में ब्राह्मण शब्द के आगे "को" चिह्न है। बहुत स्थानों में "के लिये" "के निमित्त" इत्यादि चिह्न भी आते हैं।

संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
ङे	भ्याम्	भ्यस्

संस्कृत में विधि आदि अर्थ। लिङ् लकार। हिन्दी में विधि और सम्भावना अर्थ।

विधि आदि अर्थ ये हैं-विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न और प्रार्थना।

विधि शब्द का अर्थ है प्रेरणा। अर्थात् चाकर आदि नीच व्यक्ति को किसी काम में लगाना। जैसे। स कटं कुर्य्यात्। वह चटाई बनावे। निमन्त्रण शब्द का अर्थ है नियोग करना। अर्थात् श्राद्ध भोजन आदि आवश्यक कामों में दौहित्र अर्थात् नाती आदि को प्रवृत्त करना। जैसे। इह भवान् भुञ्जीत। आप यहां भोजन करें। आमन्त्रण शब्द का अर्थ है यथेच्छाचार में अनुमति देना। जैसे। इह भवानासीत। आप चाहें यहां बैठें। अधीष्ट शब्द का अर्थ है आदर पूर्वक प्रेरणा। जैसे। पुत्रमध्यापयेद्भवान्। आप (मेरे) पुत्र को पढ़ावें। सम्प्रश्न शब्द का अर्थ है किसी बात का निर्णय करना। जैसे। किं नु खलु भो व्याकरणमधीयीय उत तर्कम्। क्या मैं व्याकरण पढ़ूं अथवा न्यायशास्त्र। प्रार्थना शब्द का अर्थ है याच्ञा अर्थात् मांगना। जैसे। भो भोजनं लभेय। मैं भोजन पाऊं।

(अस)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	स्यात्	स्याः	स्याम्
एकव॰	होवे	हो	होऊं
द्विव॰	स्याताम्	स्यातम्	स्याव
बहुव॰	होवें	हो	होवें
बहुव॰	स्युः	स्यात	स्याम
बहुव॰	होवें	हो	होवें

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स स्यात्	त्वं स्याः	अहं स्याम्
तौ स्याताम्	युवां स्यातम्	आवां स्याम
ते स्युः	यूयं स्यात	वयं स्याम

स्त्रीलिङ्ग

सा स्यात् । ते स्यताम् । ताः स्युः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् स्यात् । ते स्याताम् । तानि स्युः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्गवत् ।

ऊपर लिखे हुये तीनों लिङ्गों के वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

(भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	भवेत्	भवेः	भवेयम्
द्विव॰	भवेताम्	भवेतम्	भवेव
बहुव॰	भवेयुः	भवेत	भवेम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के नीचे भी हिन्दी की उन्हीं क्रियाओं को जानो जो इस लकार में "अस" धातु की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं।

हिन्दी वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

वह होवे	तूं हो	मैं होऊं
वे दोनों होवें	तुम दोनों हो	हम दोनों होवें
वे होवें	तुम हो	हम होवें

ऐसे ही स्त्रीलिङ्ग में, और नपुंसकलिङ्ग के बदले में भी जानो।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	कुर्यात्	कुर्याः	कुर्याम्
एकव॰	करे	करे	करूं
द्विव॰	कुर्याताम्	कुर्यातम्	कुर्याव
बहुव॰	करें	करो	करें
बहुव॰	कुर्युः	कुर्य्यात	कुर्य्याम
बहुव॰	करें	करो	करें

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स कुर्यात्	त्वं कुर्याः	अहं कुर्याम्
तौ कुर्याताम्	युवां कुर्यातम्	आवां कुर्याव
ते कुर्युः	यूयं कुर्यात	वयं कुर्याम

स्त्रीलिङ्ग।

सा कुर्यात्। ते कुर्याताम्। ताः कुर्युः। मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो।

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् कुर्यात् । ते कुर्याताम् । तानि कुर्युः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	एधेत	एधेथाः	एधेय
एकव॰	बढ़े	बढ़े	बढ़ूं
द्विव॰	एधेयाताम्	एधेयाथाम्	एधेवहि
बहुव॰	बढ़ें	बढ़ो	बढ़ें
बहुव॰	एधेरन्	एधेध्वम्	एधेमहि
बहुव॰	बढ़ें	बढ़ो	बढ़ें

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह बढ़े	तूं बढ़े	मैं बढ़ूं
वे दोनों बढ़ें	तुम दोनों बढ़ो	हम दोनों बढ़ें
वे बढ़ें	तुम बढ़ो	हम बढ़ें

ऐसे ही स्त्रीलिङ्ग में, और नपुंसकलिङ्ग के बदले में भी जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

संस्कृत में आशिष अर्थ । लिङ् लकार । हिन्दी में विधि और सम्भावना अर्थ ।

(अस और भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	भूयात्	भूयाः	भूयासम्
द्विव	भूयास्ताम्	भूयास्तम्	भूयास्व
बहुव॰	भूयासुः	भूयास्त	भूयास्म

इस लकार में भी अस और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप तुल्य ही होते हैं। इन प्रत्येक क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं क्रियाओं को जानो जो विधि लिङ् में अस धातु की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं। विशेष इतना है कि वाक्य रचना में वाक्य के पूर्व "ईश्वर करे" इतना अधिक जोड़ दिया जाता है। जैसे। स सुखी भूयात्। ईश्वर करे वह सुखी होवे। इत्यादि।

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स भूयात्	त्वं भूयाः	अहं भूयासम्
तौ भूयास्ताम्	युवां भूयास्तम्	आवां भूयास्व
ते भूयासुः	यूयं भूयास्त	वयं भूयास्म

स्त्रीलिङ्ग।

सा भूयात्। ते भूयास्ताम्। ता भूयासुः। मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान वाक्य होते हैं।

नपुंसकलिङ्ग।

तद् भूयात्। ते भूयास्ताम्। तानि भूयासुः। मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो।

प्रत्येक वाक्यों में "ईश्वर करे" यह वाक्य जोड़कर हिन्दी में उल्थाकरो।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	क्रियात्	क्रियाः	क्रियासम्
द्विव॰	क्रियास्ताम्	क्रियास्ताम्	क्रियास्व
बहुव॰	क्रियासुः	क्रियास्त	क्रियास्म

इन प्रत्येक क्रियाओं के नीचे भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जोड़ो जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं। और विशेष पूर्ववत् जानो।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह करे	तूं करे	मैं करूं
वे दोनों करें	तुम दोनों करो	हम दोनों करें
वे करें	तुम करो	हम करें

इन प्रत्येक वाक्यों के आदि में ईश्वर करे यह वाक्य जोड़ दो ।

ऐसे ही स्त्रीलिङ्ग में, और नपुंसकलिङ्ग के बदले में भी जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	एधिषीष्ट	एधिषीष्ठाः	एधिषीय
द्विव॰	एधिषीयास्ताम्	एधिषीयास्थाम्	एधिषीवहि
बहुव॰	एधिषीरन्	एधिषीध्वम्	एधिषीमहि

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वेई क्रिया आती हैं जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं । और विशेष पूर्ववत् जानो ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स एधिषीष्ट	त्वमेधिषीष्ठाः	अहमेधिषीय
तावेधिषीयास्ताम्	युवामेधिषीयास्थाम्	आवामेधिषीवहि
त एधिषीरन्	यूयमेधिषीध्वम्	वयमेधिषीमहि

स्त्रीलिङ्ग ।

सैधिषीष्ट । ते एधिषीयास्ताम् । ता एधिषीरन् । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुलिङ्ग के तुल्य वाक्या जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तदेधिषीष्ट । ते एधिषीयास्ताम् । तान्येधिषीरन् । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

संस्कृत में पूर्वोक्त विधि आदि अर्थ । लोट् लकार । हिन्दी में विधि और सम्भावना अर्थ ।

(अस)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	अस्तु	एधि	असानि
द्विव॰	स्ताम्	स्तम्	असाव
बहुव॰	सन्तु	स्त	असाम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के नीचे भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जानो जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽस्तु	त्वमेधि	अहमसानि
तौ स्ताम्	युवां स्तम्	आवामसाव
ते सन्तु	यूयं स्त	वयमसाम

स्त्रीलिङ्ग ।

सास्तु । ते स्तांम् । ताः सन्तु । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तदस्तु । ते स्ताम् । तानि सन्तु । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

आशिष अर्थ के लोट् लकार में इस धातु की सकल क्रियाओं के रूप विधि अर्थ के लोट् लकार की क्रियाओं के रूपों के तुल्य होते हैं। केवल प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में "स्तात्" यह रूप विकल्प करके होता है।

(भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	भवतु	भव	भवानि
द्विव॰	भवताम्	भवतम्	भवाव
बहुव॰	भवन्तु	भवत	भवाम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वेई क्रिया आती हैं जो "अस" धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी हुई हैं।

हिन्दी वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

वह होवे। इत्यादि। इस धातु के विधि लिङ् में लिखे वाक्यों के समान जानो।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

आशिष अर्थ के लोट् लकार में इस धातु की सकल क्रियाओं के रूप विधि अर्थ के लोट् लकार की क्रियाओं के रूपों के तुल्य होतेहैं केवल प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में एक पक्ष में "भवतात्" यह रूप होता है।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	करोतु	कुरु	करवाणि
द्विव॰	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहुव॰	कुर्वन्तु	कुरुत	करवाम

इन प्रत्येक क्रियाओं के बदले में भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जानो जो इस धातु के विधि लिङ् में लिखी गई हैं।

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स करोतु	त्वं कुरु	अहं करवाणि
तौ कुरुताम्	युवां कुरुतम्	आवां करवाव
ते कुर्वन्तु	यूयं कुरुत	वयं करवाम

स्त्रीलिङ्ग।

सा करोतु। ते कुरुताम्। ताः कुर्वन्तु। मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो।

नपुंसकलिङ्ग।

तत् करोतु। ते कुरुताम्। तानि कुर्वन्तु। मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो।

आशिष लोट् में प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में "कुरुतात्" यह रूप विकल्प करके होता है और शेष रूप विधि लोट् के रूपों के तुल्य होते हैं।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	एधताम्	एधस्व	एधै
द्विव॰	एधेताम्	एधेयाम्	एधावहै
बहुव॰	एधन्ताम्	एधध्वम्	एधामहै

इन प्रत्येक क्रियाओं के नीचे भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जानो जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह बढ़े इत्यादि विधि लिङ् के तुल्य जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामाय । रामाभ्याम् । रामेभ्यः । सख्ये । सखिभ्याम् । सखिभ्यः ।
राम को । दोनों रामो को । कतिभ्यः ।
रामो को । सुधिये । सुधीभ्याम् सुधीभ्यः ।
सर्वस्मै । सर्वाभ्याम् । सर्वेभ्यः । साधवे । साधुभ्याम् । साधुभ्यः ।
त्रिभ्यः । स्वयम्भुवे । स्वयम्भूभ्याम् । स्वयम्भूभ्यः ।
पूर्वस्मै । पूर्वाभ्याम् । पूर्वेभ्यः ।
मुनये । मुनिभ्याम् । मुनिभ्यः । दात्रे । दातृभ्याम् । दातृभ्यः ।
पत्ये । पतिभ्याम् । पतिभ्यः । गवे । गोभ्याम् । गोभ्यः ।

कोष ।

पर्य्याप्त=पूरा
भूत=प्राणी
बालतृण=घास

धातु ।

(दा)
आशीर्लिङ् । देयात् ।
लुङ् । अदात् ।
विधिलिङ् । दद्यात् ।

(चर) आङ्पूर्वक=करना ।
विधिलिङ् । आचरेत ।
द्रुह. दिवा. पर. अक.=अपकार क. ।
बिधिलिङ् । द्रुह्येत् ।

संस्कृत वाक्य ।

जनकः प्रीत्या रामाय जानकीं ददौ । ईश्वरः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः सुखं देयात् । त्रिभ्यो देवेभ्यो नमः । कृष्णो भक्त्या मुनये

आसनमदात् । पत्ये गच्छति । सख्ये सर्वदा हितमाचरेत् । सुधिये पर्य्याप्तं धनं दद्यात् । साधुभ्यः कदापि न द्रुह्येत् । स्वयम्भुवे नमस्कुर्म्मः । स गोभ्यो वालतृणं ददाति । कतिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भोजनं दद्यास् ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

एक वैयाकरण का मत है कि सम्प्रदान सञ्ज्ञा केवल उसी को नहीं होती जिस को कोई वस्तु दी जाय किन्तु इतर क्रियाओं के भी कर्म्मों के साथ जिन कारकों का संबन्ध किया जाय उन सब को सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है । जैसे । यज्ञदत्तो देवत्ताय वार्तां कथयति । यज्ञदत्त देवदत्त से बात कहता है । यहां कथन क्रिया के कर्म्म वार्ता के साथ देवदत्त का सम्बन्ध किया जता है । इस लिये उसे भी सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है ।

जिन धातुओं का अर्थ रुचना अर्थात् अच्छा लगना हो उन के प्रयोग में जिस प्राणी को कोई वस्तु रुचे उसे सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है । जैसे । देवदत्ताय रोचते मोदकः । देवदत्त को लड्डु अच्छा लगता है । यहां देवदत्त को सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई है ।

श्लाघ· (स्तुति क·) ह्नु (छिपाना) स्था (खड़ा रहना) शप (उराहन देना) इन धातुओं के प्रयोग में जिस प्राणी को कुछ बात जनाना हो उसे सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है । जैसे । गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते । गोपी काम से (पीड़ित होकर) कृष्ण की स्तुति करती है । कृष्णाय ह्नुते । कृष्ण को (सौतों से) छिपाती है । कृष्णाय तिष्ठति । कृष्ण के लिये खड़ी रहती है । कृष्णाय शपते । कृष्ण को उराहन देती है । इन उदाहरणों में गोपी स्तुति आदि कर्म्मों से कृष्ण को अपना प्रेम जानती है । इस लिये उसे सम्प्रदान संज्ञा हुई है ।

णिजन्त "धृ" (धराना) धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण अर्थात् ऋण देनेवाले प्राणी को सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है । जैसे ।

देवदत्तो यज्ञदत्ताय शतं धारयति। देवदत्त यज्ञदत्त के सौ (रुपये) धराता है। अर्थात् देवदत्त यज्ञदत्त का सौ रुपैयों का ऋणी है। यहां यज्ञदत्त को सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई है।

"स्पृह" (चाहना) धातु के प्रयोग में जो वस्तु चाही जाय उसे सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। यज्ञदत्तः पुष्पेभ्यः स्पृहयति। यज्ञदत्त फूलों को चाहता है। यहां फूलों को सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई है।

जिन धातुओं का अर्थ क्रोध द्रोह ईर्ष्या अथवा असूया हो उन के प्रयोग में जिस व्यक्ति पर कर्त्ता का कोप हो उस को सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। देवदत्तो यज्ञदत्ताय क्रुध्यति। देवदत्त यज्ञदत्त पर क्रोध करता है। विष्णुदत्तो यज्ञदत्ताय द्रुह्यति। विष्णुदत्त यज्ञदत्त का द्रोह करता है। रामदत्तो यज्ञदत्ताय ईर्ष्यति। रामदत्त यज्ञदत्त से ईर्ष्या रखता है। अर्थात् उस की सम्पत्ति को देख नहीं सकता। कृष्णदत्तो यज्ञदत्ताय असूयति। कृष्णदत्त यज्ञदत्त की असूया करता है। अर्थात् उस के गुणों में दोष प्रकट करता है।

यदि क्रुध और द्रुह धातु उपसर्ग सहित हों तो उन के प्रयोग में जिस पर कर्त्ता का क्रोध हो उस को सम्प्रदान सञ्ज्ञा नहीं होती किन्तु कर्म्म सञ्ज्ञा होती है। जैसे। देवदत्तो यज्ञदत्तमभिक्रुध्यति। देवदत्त यज्ञदत्त पर क्रोध करता है। विष्णुदत्तो यज्ञदत्तमभिद्रुह्यति। विष्णुदत्त यज्ञदत्त का द्रोह करता है। इन उदाहरणों में यज्ञदत्त को कर्म्म सञ्ज्ञा हुई है सम्प्रदान सञ्ज्ञा नहीं। और इसी कारण उसके आगे द्वितीया विभक्ति आई है।

जहां राध और ईक्ष धातुओं का अर्थ शुभ और अशुभ फल का विचारना हो वहां उन धातुओं के उस कारक को सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है जिस के विषय में अनेक प्रश्न किये जायं।

जैसे। गर्गः कृष्णाय राद्ध्यति ईक्षते वा। गर्ग मुनि कृष्ण के विषय में विचार करता है। अर्थात् नन्द आदिकों के अनेक प्रश्नों को सुन कर शुभ और अशुभ फलों को विचारता है।

जिस के आदि में प्रति अथवा आङ उपसर्ग हो ऐसे श्रु (प्रतिज्ञा क.) धातु के योग में प्रथम प्रेरणा करनेवाले को सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। यज्ञदत्तो विप्राय गां प्रतिशृणोति आशृणोति वा। यज्ञदत्त ब्राह्मण के लिये गौ की प्रतिज्ञा करता है। यहां ब्राह्मण को सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई है। क्योंकि वह पहिले यज्ञदत्त को प्रेरणा करता है कि मुझे गौ दो तब वह उसे गौ देने की प्रतिज्ञा करता है।

अनुपूर्वक और प्रतिपूर्वक "गॄ" (स्तुति करनेवाले को प्रोत्साहन क.) धातु के उस कारक को सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है जो पहिली क्रिया का कर्ता हो। जैसे। होत्रेऽनुगृणाति प्रतिगृणाति। (अध्वर्य्यु) स्तुति करनेवाले होता की प्रेत्साहना करता है। अर्थात् हवन करनेवाला पहिले स्तुति करता है तब अध्वर्य्यु उस की प्रोतत्साहना करता है।

परिक्रयण शब्द का अर्थ वेतन आदि के द्वारा किसी वस्तु को कुछ दिन के लिये अपने अधीन रखना है। इस परिक्रयण के लिये जो वेतन आदि दिया जाता है उस के वाचक शब्द को सम्प्रदान सञ्ज्ञा विकल्प करके होती है। जैसे। शतेन शताय वा परिक्रीतः। सौ (रुपये) पर भाड़ा किया गया। यहां शत शब्द को सम्प्रदान सञ्ज्ञा विकल्प करके हुई है। जब सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई तो उस के आगे चतुर्थी विभक्ति आई नहीं तो तृतीया हुई।

जहां किसी एक वस्तु के उपकार के लिये कोई दूसरी वस्तु देखाई जाती है वहां उस प्रथम वस्तु के वाचक शब्द के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है। जैसे। मुक्तये हरिं भजति। मुक्ति

के लिये हरि का भजन करता है । ब्राह्मणाय दधि । ब्राह्मण के लिये दही । इत्यादि ।

"कृप" (होना) धातु के और उस के समानार्थक इतर धातुओं के योग में भी उत्पन्न होनेवाले पदार्थ के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते सम्पद्यते जायते । इत्यादि । भक्ति ज्ञान के लिये होती है । यहां भक्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है । इस लिये ज्ञान के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

उत्पात उसे कहते हैं जिस से शुभ अथवा अशुभ फल का ज्ञान हो । इस उत्पात से जो फल जाना जाता है उस के वाचक शब्द के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । वाताय कपिला विद्युत् । भूरे रंग की बिजली वायु के लिये होती है । अर्थात् भूरी बिजली के चमकने से जान पड़ता है कि वायु अधिक बहेगी । यहां वात शब्द के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

हित शब्द के योग में चतुर्थी होती है । जैसे । ब्राह्मणाय हितम् । ब्राह्मण के लिये हित ।

जहां तुमुनन्त क्रिया आप तो न रहे परन्तु उस के निमित्त दूसरी क्रिया निकटवर्त्ती रहे ऐसे स्थल में उस तुमुनन्त क्रिया के कर्म्म के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । पुष्पेभ्यो याति । पुष्पाण्याहर्तुं यातीत्यर्थः । फूलों के लिये जाता है । अर्थात् फूलों को लाने के लिये जाता है । यहां "आहर्तुं" यह तुमुनन्त क्रिया ऊपर से समझी जाती है और उस के लिये "याति" यह क्रिया निकटवर्त्ती है । इस अवस्था में तुमुनन्त क्रिया के कर्म्म पुष्प के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

"भाववचनाश्च" इस सूत्र से जो प्रत्यय विधान किये जाते हैं वे जिन के अन्त में हों ऐसे शब्दों के आगे चतुर्थी विभक्ति आती

है जैसे। यागाय याति। यष्टुं यातीत्यर्थः। यज्ञ के लिये जाता है। अर्थात् यज्ञ करने को जाता है। यहां तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में यज धातु के आगे घञ् प्रत्यय लाने से याग शब्द बना है। उस के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है।

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, और वषट् इन के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है। जैसे। देवेभ्यो नमः। देवताओं को नमस्कार। प्रजाभ्यः स्वस्ति। प्रजाओं का कल्याण। आग्नये स्वाहा अग्नि को घृत आदि वस्तु का दान। पितृभ्यः स्वधा। पितरों को पिण्ड आदि वस्तु का दान। अलं मल्लो मल्लाय। एक मल्ल दूसरे मल्ल के लिये समर्थ। इस नियम में अलं शब्द के कहने से जिन शब्दों का सामर्थ्य अर्थ हो उन सब का ग्रहण होता है। इस लिये "हरिर्दैत्येभ्यो ऽलं प्रभुः समर्थः" इत्यादि प्रयोग सिद्ध होते हैं। प्रभु आदि शब्द के योग में षष्ठी भी होती है। जैसे। भुवनत्रयस्य प्रभुः। तीन लोक का स्वामी। वषट् इन्द्राय। इन्द्र को हविर्दान।

यदि वाक्य से अनादर सूचित हो तो "मन" (मानना) धातु के प्राणिभिन्न कर्म्म के आगे चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। न त्वां तृणं तृणाय वा मन्ये। मैं तुझे तृण (भी) नहीं मानता। यहां मन। धातु के प्राणिभिन्न कर्म तृण के आगे चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके हुई है। चतुर्थी के अभाव में द्वितीया हुई है।

गमन अर्थ वाले धातुओं के पथभिन्न कर्म्म के आगे द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्तियां क्रम से आती हैं जैसे। ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति। गावं पर जाता है।

जहां कर्ता का प्रकट व्यापार नहीं रहता वहां चतुर्थी नहीं होती। जैसे। मनसा ग्रामं व्रजति। मन से गावं पर जाता है।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायै । रमाभ्याम् । रमाभ्यः । स्त्रियै । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः ।
रमा को । दोनों रमाओं को । धेन्वै । धेनवे । धेनुभ्याम् ।
रमाओं को । धेनुभ्यः ।
सर्वस्यै । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । वध्वै । वधूभ्याम् । वधूभ्यः ।
तिसृभ्यः । भ्रुवै । भ्रुवे । भ्रूभ्याम् । भ्रूभ्यः ।
मत्यै । मतये । मतिभ्याम् । दुहित्रे । दुहितृभ्याम् ।
मतिभ्यः । दुहितृभ्यः ।
नद्यै । नदीभ्याम् । नदीभ्यः । द्यवे । द्योभ्याम् । द्योभ्यः
श्रियै । श्रिये । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । नावे । नौभ्याम् । नौभ्यः ।

कोष ।

धातु ।

रुच. भ्वा. आत्म. अक.=रुचना । दाण.प्रपूर्वक.भ्वा.पर.सक.=देना ।
अच्छा लगना । प्रयच्छन्ति ।
रोचते । क्रुध. दिवा. पर. अक.=कोप क. ।
पद.सम्पूर्वक. दिवा. आत्म.अक.= विधिलिङ् । क्रुध्येत् ।
समर्थ होना । सिद्ध हो. । यज. भ्वा. उभ. सक. यज्ञ क. ।
सम्पद्यते । यजन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

रमायै रोचते पद्मम् । मत्यै सम्पद्यते विद्या । मेघा नदीभ्यो जलानि प्रयच्छन्ति । श्रियै शत्रून् जयन्ति राजानः । स्त्रीभ्यो न क्रुध्येत् । बालतृणं धेनवे हितम् । वधूभ्यः प्रातराशं दद्यात् । द्यवे यजन्ति विप्राः । नावे तिष्ठति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानाय । ज्ञानाभ्याम् । ज्ञानेभ्यः । वारिणे । वारिभ्याम् । वारिभ्यः ।
ज्ञान के लिये । दोनों ज्ञानों के दध्ने । दधिभ्याम् । दधिभ्यः ।
लिये । ज्ञानों के लिये । मधुने । धुभ्याम् । मधुभ्यः ।

धातु ।

स्पृह· चुरा· उभय· सक=चाहना ।
स्पृहयति ।

संस्कृत वाक्य ।

भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते । वारिभ्यः कूपं गच्छति । दध्ने दुग्धम् ।
मधुने स्पृहयति भृङ्गः ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त पुंलिङ्ग शब्द ।

दुहे । धुभ्याम् । धुभ्यः । दूहनेवाले को । दोनो दुहने-वालों को । दूहनेवालों को ।
अनडुहे । अनडुद्भ्याम् । अनडुद्भ्यः ।
चतुर्भ्यः ।
पञ्चभ्यः ।
षड्भ्यः ।
अष्टभ्यः । अष्टाभ्यः ।
तस्मै । ताभ्याम् । तेभ्यः ।
उस को । उन दोनों को । उन को ।
तुभ्यम् । ते । युवाभ्याम् । वाम् । युष्मभ्यम् । वः ।
तुझे । तुम दोनों को । तुम को ।

मह्यम् । मे । आवाभ्याम् । नौ । अस्मभ्यम् । नः ।
मुझे । हम दोनों को । हम को
कस्मै । काभ्याम् । केभ्यः ।
किस को । किन दोनों को ।
किन को ।
अस्मै । आभ्याम् । एभ्यः ।
इस को । इन दोनों को । इन को ।
यस्मै । याभ्याम् । येभ्यः ।
जिस को । जिन दोनों को ।
जिन को ।
एतस्मै । एताभ्याम् । एतेभ्यः
इस को । इन दोनों को ।
इन को ।

अमुष्मै । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । प्राचे । प्राग्भ्याम् । प्राग्भ्यः ।
इस को । इन दोनों को । प्राञ्चे । प्राङ्भ्याम् । प्राङ्भ्यः ।
इन को । उदीचे । उदग्भ्याम् । उदग्भ्यः ।
उस को । उन दोनो को । महिम्ने । महिमभ्याम् महिमभ्यः ।
उन को । यज्वने । यज्वभ्याम् यज्वभ्यः ।
सम्राजे । सम्राड्भ्याम् । यूने । युवभ्याम् । युवभ्यः ।
सम्राड्भ्यः । राज्ञे । राजभ्याम् । राजभ्यः ।
भूभृते । भूभृद्भ्याम् । भूभृद्भ्यः । दण्डिने । दण्डिभ्याम् । दण्डिभ्यः ।
धीमते । धीमद्भ्याम् । धीमद्भ्यः । पथे । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।
गच्छते । गच्छद्भ्याम् । गच्छद्भ्यः । वेधसे । वेधोभ्याम् । वेधोभ्यः ।
प्रशामे । प्रशान्भ्याम् । प्रशान्भ्य । विदुषे । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भ्यः ।
बुधे । भुद्भ्याम् । भुद्भ्यः । गरीयसे । गरीयोभ्याम् । गरीयोभ्यः ।
अग्निमथे । अग्निमद्भ्याम् । पुंसे । पुम्भ्याम् । पुम्भ्यः ।
अग्निमद्भ्यः ।

कोष ।

वेतन=चाकरी । अर्थात् दुहाई । दशरथ=राम के पिता का नाम ।
शक्र=इन्द्र ।

धातु ।

कुप दिवा॰ पर॰ अक॰+क्रोध क॰ ।
लिट् । चुकोप ।

संस्कृत वाक्य ।

दुहे वेतनं ददाति । अनडुहे घासं प्रयच्छति । चतुर्भ्यो दिक्पालेभ्यो बलिं ददाति । सम्राजे करं प्रयच्छन्ति सामन्ताः । शक्रो भूभृद्भ्यश्चुकोप । धीमते रोचते विद्या । विश्वामित्राश्रमं गच्छते रामाय दशरथ आशिषं ददौ । प्रशामे ज्ञानं प्रदेयम् । बुधे दुह्येन्न बुद्धिमान् । अग्निमथे दक्षिणां ददाति । महिम्ने कल्पते विद्या

यज्वने हितम् । शान्ताय यूने सुखम्भवति । राज्ञे स्वस्त्यस्तु । दण्डिने भिक्षां दद्यात् । उत्पथेन पथे गच्छति । वेधसे नमः । विद्वद्भ्यो हितमाचरेत् । गरीयसे उच्चमासनं दद्यात् । सद्भ्यः पुम्भ्यो नमः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवे । द्युभ्यां । द्युभ्यः ।
स्वर्ग के लिये । दोनों स्वर्गों के लिये । स्वर्गों के लिये ।

चतसृभ्यः ।

तस्यै । ताभ्याम् । ताभ्यः ।

कस्यै । काभ्याम् । काभ्यः ।

अस्यै । आभ्याम् । आभ्यः ।

यस्यै । याभ्याम् । याभ्यः ।

एतस्यै । एताभ्याम् । एताभ्यः ।

अमुष्यै । अमूभ्याम् । अमूभ्यः ।

वाचे । वाग्भ्याम् । वाग्भ्यः ।

स्रजे । स्रग्भ्याम् । स्रग्भ्यः ।

त्विषे । त्विड्भ्याम् । त्विड्भ्यः ।

गिरे । गीर्भ्याम् गीर्भ्यः ।

आपदे । आपद्भ्याम् । आपद्भ्यः ।

अद्भ्यः ।

दिशे । दिग्भ्याम् दिग्भ्यः ।

धातु ।

राध-आङ्पूर्वक- चुरा- पर-सक- =सेवा क- ।
आराधयन्ति ।

हृ आङ्पूर्वक भ्वा- पर- सक- = ले आना ।
आहरन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

दिवे धर्म्ममाचरन्ति । मनोहरायै वाचे देवतामाराधयन्ति । स्रजे पुष्पाण्याहरन्ति । त्विषे तपश्चरन्ति । गिरे नमस्कुर्वन्ति । अविवेक आपदे भवति । अद्भ्यः स्पृहयन्ति चातकाः । ऐन्द्र्यै दिशे नमः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वारे । वार्भ्याम् । वार्भ्यः । अह्ने । अहोभ्याम् । अहोभ्यः । जल के लिये दोनों जलों के हविषे । हविर्भ्याम् । हविर्भ्यः । लिये । जलों के लिये । धनुषे । धनुर्भ्याम् धनुर्भ्यः । चतुर्भ्यः ।

कोष ।

उलूक=उल्लू पक्षी ।

धातु ।

या॰ अदा॰ पर॰ सक॰=जाना ।

याति ।

संस्कृत वाक्य ।

वार्भ्यो याति । अह्ने कुप्यत्युलूकः । हविषे पयः । धनुषेवंशः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

कृष्ण ने भक्ति से मुनि को आसन दिया । विद्वान को निर्वाहयोग्य धन देना चाहिये । जनक ने प्रेम से राम को जानकी दी । मित्र का सर्वदा हित करना चाहिये । पति के लिये जाती है । सज्जनों का अपकार कधीं न करना चाहिये । वह गौओं को घास देता है । हम ब्रह्मा को नमस्कार करते हैं । मैं के ब्राह्मणों को भोजन देऊं । ईश्वर सकल प्राणियों को सुख दे ।

मेघ नदियों को जल देते हैं । कोमल तृण धेनु के लिये हित है । राजा लोग लक्ष्मी के लिये शत्रुओं को जीतते हैं । विद्या बुद्धि के लिये होती है । लक्ष्मी को कमल अच्छा लगता है । स्त्रियों पर क्रोध नहीं करना चाहिये । पण्डित लोग स्वर्ग के लिये यज्ञ करते हैं । बहुओं को कलेऊ देना चाहिये ।

पानी (भरने) को कूआं पर जाता है । भौंरा फूल के रस को चाहता है । भक्ति ज्ञान के लिये होती है । दही के लिये दूध

इन्द्र ने पर्वतों पर कोप किया। बुद्धिमान को चाहिये कि पण्डित का अपकार न करे। दूहनेवाले को वेतन (दुहाई) देता है। बुद्धिमान को विद्या अच्छी लगती है। शान्त युवा (पुरुष) को सुख होता है। दण्डी को भिक्षा देना चहिये। चारों दिक्पालों (इन्द्र आदि) को पूजा देता है। (राजा) दशरथ ने विश्वामित्र के आश्रम पर जाते हुए राम को आशीर्वाद किया। छोटे २ राजा चक्रवर्त्ती को कर देते हैं। आग मथने वाले को दक्षिणा देता है। पण्डितों का हित करना चाहिये। बैल को घास देता है। विद्या बड़ाई के लिये होती है। ज्ञान शान्त (पुरुष) को देना चाहिये। राजा का कल्याण हो। श्रेष्ठ (पुरुष) को ऊंचा आसन देना चाहिये। निकम्मी राह से अच्छी राह पर जाता है। यज्ञ करनेवाले को हित। सज्जन पुरुषों को नमस्कार। ब्रह्मा को नमस्कार।

(कवि लोग) मनोहर वाणी (पाने) के लिये देवता की सेवा करते हैं। अविवेक विपत्ति के लिये होता है। स्वर्ग के लिये धर्म्म करते हैं। चातक (पक्षी) जल चाहते हैं। कान्ति के लिये तप करते हैं।

उल्लू (पक्षी) दिन पर कोप करता है। धनुष के लिये बांस। पानी (भरने) के लिये जाता है। खीर के लिये दूध।

इन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

हिन्दी शब्द।

पुल्लिङ्ग।

एकवच.	बहुवच.
बालक को-के लिये	बालकों को-के लिये
लड़के को-के लिये	लड़कों को-के लिये
मुनि को-के लिये	मुनियों को-के लिये

माली को-के लिये	मालियों को-के लिये
साधु को-के लिये	साधुओं को-के लिये
भालू को-के लिये	भालुओं को-के लिये
चौबे को-के लिये	चौबेओं को-के लिये
कोदो को-के लिये	कोदोओं को-के लिये

स्त्रीलिङ्ग ।

बात को-के लिये	बातों को-के लिये
गैया को-के लिये	गैयाओं को-के लिये
तिथि को-के लिये	तिथियों को-के लिये
नदी को-के लिये	नदियों को-के लिये
धेनु को-के लिये	धेनुओं को-के लिये
बहू को=के लिये	बहुओं को-के लिये
सरसों को-के लिये	सरसोंओं को-के लिये

यदि हिन्दी के एकही वाक्य में सम्प्रदान और कर्म्म दोनों कारक आवें तो केवल सम्प्रदान के आगे "को" चिह्न रहेगा और कर्म्म के आगे उसका लोप हो जायगा । जैसे । ब्राह्मण को गो देता है इत्यादि ।

पाचवां पाठ ।

अपादान कारक ।

अपादान उस अवधि को कहते हैं जिस से कोई वस्तु अलग हो । जैसे । देवदत्तो ग्रामादायाति । देवदत्त गावं से आता है । यज्ञदत्तो धावतोऽश्वात् पतति । यज्ञदत्त दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है । इन दोनों उदाहरणों में गावं और घोड़े को अपादान सञ्ज्ञा हुई है । क्योंकि देवदत्त और यज्ञदत्त क्रम से उन से अलग होते हैं ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में अपादान के आगे पञ्चमी विभक्ति आती है । संस्कृत में पञ्चमी विभक्ति के प्राय "आत्" इत्यादि चिह्न रहते हैं । हिन्दी में उसका "से" चिह्न है । जैसे । ऊपर लिखे हुए उदाहरणों में संस्कृत में ग्राम और अश्व शब्द के अन्त में "आत्" चिह्न और हिन्दी में गावं और घोड़ा शब्द से परे "से" चिह्न है ।

संस्कृत में पञ्चमी विभक्ति ।

एकव॰	द्विवच॰	बहुवच॰
ङसि	भ्याम्	भ्यस्

संस्कृत में भूत और भविष्य काल । हेतुहेतुमद्भाव आदि लिङ् के निमित्तों में से कोई निमित्त । क्रिया की असिद्धि गम्यमान । लृङ् लकार । हिन्दी में हेतुहेतुमद्भूत और भविष्य काल ।

भूत काल का उदाहरण । यद्यदत्त एधश्चेदलप्स्यत, ओदनमपक्ष्यत् । यज्ञदत्त ईंधन पाता तो भात पकाता । अर्थात् न ईंधन पाया न भात पकाया ।

भविष्य काल का उदाहरण । सुवृष्टिश्चेदभविष्यत्, तदा सुभिक्षमभविष्यत् । अच्छी वृष्टि होवेगी तो सुकाल होवेगा । अर्थात् यदि अच्छी वृष्टि न होवेगी तो सुकाल भी न होवेगा ।

इन दोनों उदाहरणों में उत्तर २ क्रिया के साथ पूर्व २ क्रिया का हेतुहेतुमद्भाव संबन्ध है अर्थात् पहिली २ क्रिया कारण और पिछली २ क्रिया कार्य्य है । और दोनों उदाहरणों में क्रिया की असिद्धि अर्थात् न होना प्रकाशित होती है ।

(अस् और भू)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	अभविष्यत्	अभविष्यः	अभविष्यम्
एकवच॰	होता	होता	होता

एकवच·	होती	होती	होती
एकवच·	होवेगा	होवेगा	होऊंगा
एकवच·	होवेगी	होवेगी	होऊंगी
द्विवच·	अभविष्यताम्	अभविष्यतम्	अभविष्याव
बहुवच·	होते	होते	होते
बहुवच·	होतीं	होतीं	होतीं
बहुवच·	होवेंगे	होगे	होवेंगे
बहुवच·	होवेंगी	होगी	होवेंगी
बहुवच·	अभविष्यन्	अभविष्यत	अभविष्याम
बहुवच·	होते	होते	होते
बहुवच·	होतीं	होतीं	होतीं
बहुवच·	होवेंगे	होगे	होवेंगे
बहुवच·	होवेंगी	होगी	होवेंगी

लृङ् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एक ही से होते हैं। ऊपर लिखी हुई हिन्दी की चार २ क्रियाओं में से दो २ भूत काल और दो २ भविष्य काल की हैं।

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स चेदभविष्यत्	त्वञ्चेदभविष्यः	अहञ्चेदभविष्यम्
तौ चेदभविष्यताम्	युवाञ्चेदभविष्यतम्	आवाञ्चेदभविष्याव
ते चेदभविष्यन्	यूयञ्चेदभवित	वयञ्चेदभविष्याम

स्त्रीलिङ्ग।

सा चेदभविष्यत्। ते चेदभदभविष्यताम्। ताश्चेदभविष्यन्। शेष पुल्लिङ्गवत्।

नपुंसकलिङ्ग ।

तच्चेदभविष्यत् । ते चेदभविष्यताम् । तानि चेदभविष्यन् । शेष पुल्लिङ्गवत् ।

इन प्रत्येक वाक्यों में एक २ विधेय पद मिलाकर और फिर इन के साथ एक २ और वाक्य जोड़ कर हिन्दी में व्याख्या करो । जैसे । स चेद्धार्म्मिकोऽभविष्यत्, सुखमलप्स्यत । वह धार्म्मिक होता वा होगा तो सुख पाता वा पावेगा इत्यादि ।

(कृ)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकवच॰	अकरिष्यत्	अकरिष्यः	अकरिष्यम्
एकवच॰	करता	करता	करता
एकवच॰	करती	करती	करती
एकवच॰	करेगा	करेगा	करूंगा
एकवच॰	करेगी	करेगी	करूंगी
द्विवच॰	अकरिष्यताम्	अकरिष्यतम्	अकरिष्याव
बहुवच॰	करते	करते	करते
बहुवच॰	करतीं	करतीं	करतीं
बहुवच॰	करेंगे	करोगे	करेंगे
बहुवच॰	करेंगी	करोगी	करेंगी
बहुवच॰	अकरिष्यन्	अकरिष्यत	अकरिष्याम
बहुवच॰	करते	करते	करते
बहुवच॰	करतीं	करतीं	करतीं
बहुवच॰	करेंगे	करोगे	करेंगे
बहुवच॰	करेंगी	करोगी	करेंगी

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

यदि वह करता वा करेगा	यदि तूं करता वा करेगा	यदि मैं करता वा करूंगा
यदि वे दोनों करते वा करेंगे	यदि तुम दोनों करते वा करोगे	यदि हम दोनों करते वा करेंगे
यदि वे करते वा करेंगे	यदि तुम करते वा करोगे	यदि हम करते वा करेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

यदि वह करती वा करेगी	यदि तूं करती वा करेगी	यदि मैं करती वा करूंगी
यदि वे दोनों करतीं वा करेंगी	यदि तुम दोनों करतीं वा करोगी	यदि हम दोनों करतीं वा करेंगी
यदि वे करतीं वा करेंगी	यदि तुम करतीं वा करोगी	यदि हम करतीं वा करेंगी

नपुंसक के बदले में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

इन प्रत्येक हिन्दी वाक्यों में एक २ कर्म्मवाचक पद मिलाकर और इन वाक्यों के साथ एक २ और वाक्य जोड़ कर संस्कृत में उल्था करो । जैसे । यदि वह धर्म्म करता वा करेगा तो स्वर्ग जाता वा जायगा । स चेद्धर्म्ममकरिष्यत्, तदा स्वर्गमगमिष्यत् । इत्यादि ।

(एध)

	प्रथम पु॰	मध्यम पु॰	उत्तम पु॰
एकव॰	ऐधिष्यत	ऐधिष्यथाः	ऐधिष्ये
एकव॰	बढ़ता	बढ़ता	बढ़ता
एकव॰	बढ़ती	बढ़ती	बढ़ती

एकव.	बढेगा	बढ़ेगा	बढूंगा।
एकव.	बढ़ेगी	बढेंगी	बढूंगी
द्विव.	एधिष्येताम्	एधिष्येथाम्	एधिष्यावहि
बहुव.	बढ़ते	बढ़ते	बढ़ते
बहुव.	बढ़तीं	बढ़तीं	बढ़तीं
बहुव.	बढ़ेंगे	बढ़ोगे	बढ़ेंगे
बहुव.	बढ़ेंगी	बढ़ोगी	बढ़ेंगी
बहुव.	एधिष्यन्त	एधिष्यध्वम्	एधिष्यामहि
बहुव.	बढ़ते	बढ़ते	बढ़ते
बहुव.	बढ़तीं	बढ़तीं	बढ़तीं
बहुव.	बढ़ेंगे	बढ़ोगे	बढ़ेंगे
बहुव.	बढ़ेंगी	बढ़ोगी	बढ़ेंगी

संस्कृत वाक्य।

पुल्लिङ्ग।

स चेदैधिष्यत त्वञ्चेदैधिष्यथाः अहञ्चेदैधिष्ये

तौ चेदैधिष्येताम् युवाञ्चेदैधिष्येथाम् आवाञ्चेदैधिष्यावहि

ते चेदैधिष्यन्त यूयञ्चेदैधिष्यध्वम् वयञ्चेदैधिष्यामहि

स्त्रीलिङ्ग।

सा चेदैधिष्यत। ते चेदैधिष्यताम्। ताश्चेदैधिष्यन्त। शेष पुल्लिङ्गवत्।

नपुंसकलिङ्ग।

तच्चेदैधिष्यत। ते चेदैधिष्येताम्। तानि चेदैधिष्यन्त। शेष पुल्लिङ्गवत्।

इन प्रत्येक संस्कृत वाक्यों का अस् और भू धातु में कही हुई रीति के अनुसार उल्था करो।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामात् । रामाभ्याम् । रामेभ्यः । सख्युः । सखिभ्याम् । सखिभ्यः ।
राम से । दोनों रामों से । कृतिभ्यः ।
रामों से । सुधियः । सुधीभ्याम् । सुधीभ्यः ।
सर्वस्मात् । सर्वाभ्याम् । सर्वेभ्यः । साधोः । साधुभ्याम् । साधुभ्यः ।
चिभ्यः । स्वयम्भुवः । स्वयम्भूभ्याम् । स्व-
पूर्वस्मात् । पूर्वात् । पूर्वाभ्याम् । यम्भूभ्यः ।
पूर्वेभ्यः । दातुः । दातृभ्याम् । दातृभ्यः ।
मुनेः । मुनिभ्याम् । मुनिभ्यः । गोः । गोभ्याम् । गोभ्यः ।
पत्युः । पतिभ्याम् । पतिभ्यः ।

धातु ।

त्रै. भ्वा. आत्म. सक. = रक्षा क. । इ. अधिपूर्वक. अदा. आत्म. सक.
त्रायते । = पढ़ना ।
भी. जुहो. पर. अक. = डरना । अधीते ।
बिभेति ।

संस्कृत वाक्य ।

रामादृते न सुखम् । राजा सर्वेभ्यो विघ्नेभ्यः प्रजास्त्रायते । मुनेर्बिभेति । पत्युरुत्तरं भुङ्क्ते कुलवधूः । सख्युरेतच्छ्रुतं मया । सुधियोऽधीते यज्ञदत्तः । साधुभ्योऽसाधवः पृथग्भवन्ति । स्वयम्भुवः श्रुतयः प्रबभूवुः । दातुरधिकः पुण्यकृत् कोऽपि नास्ति । गोर्दूरे तिष्ठ ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

स्मरण रखना चाहिये कि किसी अवधि से किसी वस्तु का अलग होना चाहे वास्तविक न भी हो चाहे केवल बुद्धि कल्पित हो तथापि उस अवधि के वाचक शब्द आगे पञ्चमी विभक्ति आती है । जैसे । यज्ञदत्तो ग्रामादायाति । यज्ञदत्त गावं से आता है । यहां गावं रूप अवधि से यज्ञदत्त का अलग होना वास्तविक

है। परन्तु माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः। मथुरा के लोग पटने के लोगों से अधिक धनवान हैं। यहां पटने के लोगों से मथुरा के लोगों का अलग होना केवल बुद्धि कल्पित है।

जिन धातुओं का अर्थ निन्दा निवृत्ति अथवा असावधानी हो उन के कारक को अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। पापाज्जुगुप्सते। पाप की निन्दा करता है। अधर्म्माद्विरमति। अधर्म्म (करने) से निवृत्त होता है। धर्म्मात् प्रमाद्यति। धर्म्म (करने) में असावधान रहता है।

जिन धातुओं का अर्थ भय अथवा रक्षा हो उन के योग में भय के कारण को अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। चोराद्बिभेति। चोर से डरता है। चोरात् त्रायते। चोर से रक्षा करता है। इन उदाहरणों में भय के हेतु चोर को अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

परा पूर्वक जि (ग्लानि करना) धातु के योग में असह्य पदार्थ को अर्थात् जिसे कर्त्ता न सह सकता हो उसे अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे अध्ययनात् पराजयते। पढ़ने से ग्लानि करता है। अर्थात् खिन्न होता है। यहां अध्ययन असह्य पदार्थ है इस लिये उसे अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

किसी प्राणी को किसी (अभिलषित) वस्तु में प्रवृत्त होने से रोकना वारण कहलाता है। जिन धातुओं का अर्थ वारण हो उन के प्रयोग में अभिलषित पदार्थ को अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे यवेभ्यो गां वारयति। गौ को यव (खाने) से रोकता है। यहां यव अभिलषित पदार्थ है इस लिये उस को अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

जहां एक प्राणी किसी दूसरे प्राणी से ऐसे स्थान में छिपा चाहे कि वह उसे न देख सके वहां उस दूसरे प्राणी को अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। देवदत्तान्निलीयते यज्ञदत्तः। यज्ञदत्त देवदत्त से छिपता है। यहां देवदत्त को अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

जहां नियम पूर्वक विद्या का पढ़ना हो वहां पढ़ाने वाले को अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे उपाध्यायादधीते। अध्यापक से पढ़ता है। यहां उपाध्याय को अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

उत्पन्न होनेवाले पदार्थ के कारण को अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते। ब्रह्मा अथवा ब्रह्म से प्रजा उत्पन्न होती हैं। यहां ब्रह्मा अथवा ब्रह्म को अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

जिस स्थान से कोई पदार्थ प्रकट होता है उसे अपादान सञ्ज्ञा होती है। जैसे। हिमवतो गङ्गा प्रभवति। हिमालय (पहाड़) से गङ्गा प्रगट होती है। यहां हिमालय को अपादान सञ्ज्ञा हुई है।

जहां क्त्वा के स्थान में विहित ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द का लोप हो अर्थात् वह ऊपर से समझा जाय वहां कर्म्म और अधिकरण अर्थ में पञ्चमी विभक्ति आती है। जैसे। प्रासादात् प्रेक्षते। प्रासादमारुह्य प्रेक्षते इत्यर्थः। राजमहल से देखता है अर्थात् राजमहल पर चढ़ कर देखता है। आसनात् प्रेक्षते। आसन उपविश्य प्रेक्षत इत्यर्थः। आसन पर से देखता है अर्थात् आसन पर बैठ कर देखता है। इन उदाहरणों में क्त्वा के स्थान में विहित ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द अर्थात् आरुह्य और उपविश्य इन दोनों शब्दों का लोप हुआ है इस लिये प्रासाद और आसन शब्दों के आगे क्रम से कर्म्म और अधिकरण अर्थ में पञ्चमी विभक्ति आई है।

ऊपर से समझी हुई क्रिया भी कारक विभक्ति का निमित्त होती है। जैसे। प्रश्न। कस्मात् त्वम्। तू कहां से। उत्तर। नद्याः। नदी से। यहां, आगच्छामि। आता हूं। यह क्रिया ऊपर से समझी जाती है।

जहां किसी अवधि से लेकर पथ अथवा काल की गणना होती है वहां उस अवधि के आगे पञ्चमी, पथ के आगे प्रथमा और सप्तमी, और काल के आगे सप्तमी विभक्तियां आती हैं। जैसे। वनाद्

ग्रामो योजनं योजने वा । वन से गावं चार कोस पर है । कार्तिक्या आग्रहायणी मासे । कातिक की पूर्णिमा से अगहन की पूर्णिमा महीने भर पर रहती है । यहां वन और कार्तिकी पूर्णिमा अवधि हैं ।

अन्य, आरात्, ऋते, दिक् शब्द, अञ्चूत्तरपद, आच्, आहि, इन के योग में पञ्चमी विभक्ति आती है । अन्य शब्द से उस के समानार्थक और शब्दों का भी ग्रहण होता है । उदा० । अन्यो देवदत्तात् । भिन्नो देवदत्तात् । विलक्षणो देवदत्तात् । इतरो देवदत्तात् । अर्थात् देवदत्त से भिन्न । आरात् शब्द के दो अर्थ हैं दूर और समीप । उदा० । आराद् देवदत्तात् । देवदत्त से दूर । आराद् यज्ञदत्तात् । यज्ञदत्त के समीप ऋते शब्द का छोड़ना अर्थ है । उदा० । ऋते देवदत्तात् । देवदत्त को छोड़कर । दिक् शब्द से पूर्व आदि दिशा पूर्व आदि स्थान और पूर्व आदि समय में रहनेवाले पदार्थ समझे जाते हैं । उदा० । पूर्वो ग्रामात् । गांव से पूरब । उत्तरो ग्रामात् । गावं से उत्तर । चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः । चैत से पहिले फागुन । फाल्गुनादुत्तरश्चैत्रः । फागुन के पीछे चैत । अञ्चूत्तरपद से वे शब्द समझे जाते हैं जिन के अन्त में अञ्चु धातु हो । उदा० । प्राक् ग्रामात् । गांव से पूरब । प्रत्यग् ग्रामात गावं से पच्छिम । आच् और आहिन इन शब्दों से आच् और आहि प्रत्ययान्त शब्द लिये जाते हैं । उदा० । दक्षिणा ग्रामात् । दक्षिणाहि ग्रामात् । गावं की दक्खिन ओर ।

प्रभृति, आरभ्य, और बहिः इन शब्दों के योग में पञ्चमी होती है । भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्यो हरिः । जन्म से लेकर विष्णु की सेवा करनी चाहिये । ग्रमाद् वहिः । गावं के बाहर ।

जहां अप और परि का अर्थ वर्जन अर्थात् छोड़ना हो और आङ् का अर्थ मर्य्यादा अथवा अभिविधि हो वहां इन अव्ययों

के योग में पञ्चमी विभक्ति आती है। जैसे। अप मथुरा वृष्टो देव:। परि मथुराया वृष्टो देव:। मथुरा को छोड़ कर देव बरसा। यहां अप और परि का अर्थ छोड़ना है इस लिये इन के योग में मथुरा शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति आई है। आ पाटलिपुत्राद् वृष्टो देव:। पटने तक देव बरसा। आ मथुराया वृष्टो देव:। मथुरा को लेकर देव बरसा। यहां पहिले उदाहरण में आङ् का अर्थ मर्य्यादा और दूसरे में अभिविधि है। इस लिये पाटलिपुत्र और मथुरा शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति आई है। अवधि को छोड़ कर मर्य्यादा और अवधि सहित अभिविधि कहलाती है। जैसे। पहिले उदाहरण में पटने को छोड़ कर देव बरसा और दूसरे में मथुरा को लेकर बरसा।

जहां किसी मुख्य पदार्थ का प्रतिनिधि अर्थात् उस के सदृश दूसरा पदार्थ अथवा प्रतिदान अर्थात् उस के बदले में किसी दूसरी वस्तु का दान दिखलाया जाय वहां इन प्रतिनिधि और प्रति दान रूप अर्थों के प्रकाश करनेवाले "प्रति" शब्द के योग में उन मुख्य पदार्थों के वाचक शब्दों के आगे पञ्चमी विभक्ति आती है। जैसे। प्रद्युम्न: कृष्णात् प्रति। प्रद्युम्न कृष्ण के सदृश है। तिलेभ्य: प्रति यच्छति माषान्। तिल के बदले में उड़द देता है। यहां प्रद्युम्न: रूप प्रतिनिधि और उड़द दान रूप प्रति दान के प्रकाशक "प्रति" शब्द के योग में मुख्य पदार्थों के वाचक कृष्ण और तिल शब्दों के आगे पञ्चमी विभक्ति आई है।

जहां ऋण किसी क्रिया का कर्त्ता न हो किन्तु हेतु भाव हो वहां उस के वाचक शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति आती है। जैसे। शताद् बद्ध:। सौ के कारण बांधा गया। अर्थात् सौ रुपैये ऋण लिये थे इस कारण बांधा गया। जहां

ऋण कर्त्ता होता है वहां उस के आगे पञ्चमी नहीं किन्तु तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। शतेन बन्धितः। सौ रुपैयोंने (उस को) बंधवाया। यहां ऋण बन्धन क्रिया का प्रयोजक कर्त्ता है।

हेतु वाचक शब्द के आगे पञ्चमी और तृतीया दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे। जाड्यात् जाड्येन वा बद्धः। जड़ता के कारण बांधा गया। पाण्डित्यात् पाण्डित्येन वा मुक्तः। पण्डिताई के कारण छूटा।

पृथक्, विना, और नाना इन प्रत्येक के योग में तृतीया, पञ्चमी और द्वितीया विभक्तियां आती हैं। जैसे। पृथग् देवदत्तेन देवदत्तात् देवदत्तं वा। देवदत्त से अलग। ऐसे ही विना और नाना के योग में भी जानो।

करण कारक में अद्रव्य वाचक स्तोक, अल्प, कृच्छ्र और कतिपय शब्द के आगे तृतीया और पञ्चमी विभक्तियां आती हैं। स्तोकेन स्तोकाद्वा मुक्तः। थोड़े में छूटा। अल्पेन अल्पाद्वा मुक्तः। थोड़े में छूटा। कृच्छ्रेण कृच्छ्राद्वा मुक्तः। किसी प्रकार से छूट। कतिपयेन कतिपयाद्वा मुक्तः। थोड़े में छूटा। जहां ये शब्द द्रव्य वाचक रहते हैं वहां केवल तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। स्तोकेन विषेण हतः। थोड़े विष से मारा गया।

जिन अद्रव्य वाचक शब्दों का अर्थ दूर और समीप हो उन के आगे द्वितीया पञ्चमी और तृतीया विभक्तियां आती हैं। जैसे। ग्रामस्य दूरं दूरात् दूरेण वा। गावं से दूर। ग्रामस्यान्तिकमन्तिकादन्तिकेन वा। गावं के समीप। जहां वे शब्द द्रव्य वाचक रहते हैं वहां ये विभक्तियां नहीं आतीं। जैसे। दूरः पन्थाः। दूर पथ॥

अनन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायाः । रमाभ्याम् । रमाभ्यः । स्त्रियाः । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः ।
रमा से । दोनों रमाओं से । धेन्वाः । धेनोः । धेनुभ्याम् ।
रमाओं से । धेनुभ्यः ।
सर्वस्याः । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । वध्वाः । वधूभ्याम् । वधूभ्यः ।
तिसृभ्यः । भ्रुवाः । भ्रुवः । भ्रूभ्याम् । भ्रूभ्यः ।
मत्याः । मतेः । मतिभ्याम् । दुहितुः । दुहितृभ्याम् ।
मतिभ्यः । दुहितृभ्यः ।
नद्याः । नदीभ्याम् । नदीभ्यः । द्योः । द्योभ्याम् । द्योभ्यः ।
श्रियाः । श्रियः । श्रीभ्याम् । नावः । नौभ्याम् । नौभ्यः ।
श्रीभ्यः ।

धातु ।

(वृत) परापूर्वक । (सृ) अपपूर्वक ।
णिच् । परावर्तयन्ति । लोट् । अपसर ।
दुह. अदा. उभ. द्विकर्म्म.= पत. भ्वा. पर. अक.=गिरना ।
दूहना । पतति ।
दोग्धि ।

संस्कृत वाक्य ।

इयं साध्वी रमायाः प्रति । मतेर्विना न विद्या । नद्या आराद् ग्रामः । श्रिया ऋते न सुखम् । स्त्रीभ्यो मनः परावर्त्तयन्ति विद्याः । धेनोः पयो दोग्धि । वधूभ्य ऋते न गृहशोभा । कुटिलाभ्यां भ्रूभ्यां बिभेति । दुहितृभ्योऽन्यो न दीनमतोऽतस्ताः सर्वदानुकम्प्याः । द्योः पतति । नावोऽवतरति ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानात् । ज्ञानाभ्याम् । ज्ञानेभ्यः । वारिणः । वारिभ्याम् । वारिभ्यः ।
ज्ञान से । दोनों ज्ञानों से । दध्नः । दधिभ्याम् । दधिभ्यः ।
ज्ञानों से । मधुनः । मधुभ्याम् । मधुभ्यः ।

धातु ।

जन. प्रपूर्वक. दिव. आत्म. (दाण) प्रतिपूर्वक ।
अक.=उत्पन्न हो. । प्रतियच्छति ।
प्रजायते ।

संस्कृत वाक्य ।

ज्ञानादृते न मोक्षः । वारिभ्यो विना जीवितुं न शक्नुवन्ति मत्स्याः ।
दध्नो घृतं प्रजायते । मधुनो घृतं प्रतियच्छति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहः । धुग्भ्याम् । धुग्भ्यः ।
दूहने वाले से । दोनों दूहने वालों से । दूहने वालों से ।
अनडुहः । अनडुद्भ्याम् ।
अनडुद्भ्यः ।
चतुर्भ्यः ।
पञ्चभ्यः ।
षड्भ्यः ।
अष्टभ्यः । अष्टाभ्यः ।
तस्मात् । ताभ्याम् । तेभ्यः ।
उस से । उन दोनों से । उन से ।
त्वत् । युवाभ्याम् । युष्मत् ।
तुझसे । तुम दोनों से । तुम से ।
मत् । आवाभ्याम् । अस्मत् ।

मुझ से । हम दोनों से । हम से ।
कस्मात् । काभ्याम् । केभ्यः ।
किस से । किन दोनों से । किन से ।
अस्मात् । आभ्याम् । एभ्यः ।
इस से । इन दोनों से । इन से ।
यस्मात् । याभ्याम् । येभ्यः ।
जिस से । जिन दोनों से । जिन से ।
एतस्मात् । एताभ्याम् । एतेभ्यः ।
इस से । इन दोनों से । इन से ।
अमुष्मात् । अमूभ्याम् । अमीभ्यः ।
इस से । इन दोनों से । इन से ।
उस से । उन दोनों से । उन से ।
सम्राजः । सम्राड्भ्याम् ।
सम्राड्भ्यः ।

भूभृतः । भूभृद्भ्याम् । भूभृद्भ्यः । महिम्नः । महिमभ्याम् ।
धीमतः । धीमद्भ्याम् । महिमभ्यः ।
धीमतः । यज्वनः । यज्वभ्याम् । यज्वभ्यः ।
गच्छतः । गच्छद्भ्याम् । यूनः । युवभ्याम् । युवभ्यः ।
गच्छद्भ्यः । राज्ञः । राजभ्याम् । राजभ्यः ।
प्रशामः । प्रशान्भ्याम् । प्रशान्भ्यः । दण्डिनः । दण्डिभ्याम् ।
बुधः । भुद्भ्याम् । भुद्भ्यः । दण्डिभ्यः ।
अग्निमथः । अग्निमद्भ्याम् । पथः । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।
अग्निमद्भ्यः । वेधसः । वेधोभ्याम् । वेधोभ्यः ।
प्राचः । प्राग्भ्याम् । प्राग्भ्यः । विदुषः । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भ्यः ।
प्राञ्चः । प्राङ्भ्यम् । प्राङ्भ्यः । गरीयसः । गरीयोभ्याम् ।
उदीचः । उदग्भ्याम् । उदग्भ्यः । गरीयोभ्यः ।
पुंसः । पुम्भ्याम् । पुम्भ्यः ।

कोष ।

शकट=गाड़ी । छकड़ा । अभ्यार्हित=श्रेष्ठ ।
अरणि=अग्निमन्थनकाष्ठ ।

धातु ।

ग्रह· क्र्या· उभ· सक·=लेना । पकड़ना ।
गृह्णाति ।
नी· अपपू· भ्वा· उभ· सक·=उतारना । दूर क· ।
अपनयति ।
त्रस· दिवा· पर· अक·=डरना ।
त्रस्यन्ति ।
जनि· प्रपू· दिवा· आत्म· अक·=उत्पन्न हो· ।
प्रजायन्ते ।
(सृ) अपपू· । हट जाना ।
अपसरति
(गम) अपपू· । दूर होना ।
अपगच्छति ।

संस्कृत वाक्य ।

दुहो दुग्धं गृह्णाति । अनडुहो भारमपनयति । सम्राजस्त्रस्यन्ति सामन्ताः । भूभृद्भ्यः सरितः प्रजायन्ते । धीमतो विना न शोभते सभा । गच्छतः शकटात् पतितः । प्रशामोऽन्यो न गरीयान् । भुद्भ्यो भूपतयोऽपि नाभ्यर्हिताः । अग्निमथोऽरणिं गृह्णाति । महिम्नो भ्रष्टः । यज्वभ्यो बिभ्यति देवाः । यूनः पूर्वं वृद्ध आगतः । राज्ञ ऋते न कोऽपि प्रजापालनक्षमः । दण्डिनस्त्रस्यति श्वा । पथोऽपसरति चाण्डालः । वेधसः प्रजाः प्रजायन्ते । गरीयसो विदुषोऽध्येतव्यम् । अविवेकिनः पुंसः श्रीरपगच्छति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवः । द्युभ्याम् । द्युभ्यः । अमुष्याः । अमूभ्याम् । अमूभ्यः आकाश से । दोनों आकाशों से । वाचः । वाग्भ्याम् । वाग्भ्यः ।

आकाशों से ।

स्रजः । स्रग्भ्याम् । स्रग्भ्यः ।

चतसृभ्यः ।

त्विषः । त्विड्भ्याम् । त्विड्भ्यः ।

तस्याः । ताभ्याम् । ताभ्यः । गिरः । गीर्भ्याम् । गीर्भ्यः ।

कस्याः काभ्याम् । काभ्यः । आपदः । आपद्भ्याम् ।

अस्याः । आभ्यः । आभ्यः । आपद्भ्यः ।

अस्याः । याभ्याम् । याभ्यः । अद्भ्यः ।

एतस्याः । एताभ्याम् । एताभ्यः । दिशः । दिग्भ्याम् । दिग्भ्यः ।

कोष ।

मकरन्द=फूल का रस । कच्छप=कछुआ ।

धातु ।

च्युत. भ्वा. पर. अक.=झरना ।

च्योतन्ति

संस्कृत वाक्य ।

दिवः पतन्ति तारकाः । स्रजश्च्योतन्ति मकरन्दाः । त्विषो विना न शोभते चन्द्रः । गिरो दूरे परं ब्रह्म । आपदो मुक्तः । अद्भ्यो बहिर्निस्सरन्ति कच्छपाः । प्राच्या दिशः प्रतीचीं याति रविः ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वार्ः । वार्भ्याम् । वार्भ्यः । अह्नः । अहोभ्याम् । अहोभ्यः ।
जल से । दोनों जलों से । हविषः । हविर्भ्याम् । हविर्भ्यः ।
जलों से । धनुषः । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः ।
चतुर्भ्यः ।

संस्कृत वाक्य ।

वार्भ्य उन्मग्नः । अह्नः पृथग् रात्रिः । हविष उद्गतो गन्धः । धनुषो निर्गताः शराः ।

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हिन्दी वाक्य ।

वेद ब्रह्मा से प्रगट हुए । कुलीन स्त्री पति के पीछे भोजन करती है । यह बात मैंने (अपने) मित्र से सुनी । राम के विना सुख नहीं । पण्डित से पढ़ता है । राजा सकल विघ्नों से प्रजाओं की रक्षा करता है । दाता से अधिक कोई पुण्यवान नहीं है । असज्जन सज्जनों से अलग होते हैं । बैल से दूर रहो ।

कन्याओं से बढ़कर और कोई दीन नहीं होता इस लिये उन पर सर्वदा कृपा रखनी चाहिये । विज्ञ लोग स्त्रियों से (अपने) मन को फेर लेते हैं । यह पतिव्रता स्त्री लक्ष्मी के तुल्य है । धेनु से दूध दूहता है । नदी के समीप गावं । बहुओं के विन घर की शोभा नहीं होती । धन के बिना सुख नहीं । टेढ़ी भौओं से डरता है । नाव पर से उतरता है । स्वर्ग से गिरता है ।

मछली जल के बिना नहीं जी सकती। दही से घी निकलता है। बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती। सहत के बदले में घी देता है।

शान्त (पुरुष) से बढ़कर कोई श्रेष्ठ नहीं है। राजा को छोड़कर प्रजा पालन में समर्थ कोई नहीं है। छोटे २ राजा चक्रवर्ती से डरते हैं। पण्डितों की अपेक्षा राजा भी श्रेष्ठ नहीं होते। देवता यज्ञ करने वालों से डरते हैं। बुद्धिमान के बिना सभा की शोभा नहीं होती। चाण्डाल राह में से हट जाता है। आग मथनेवाले से अरणि (मथने का काठ) लेता है। बैल पर से बोझा उतारता है। पहाड़ों से नदियां उत्पन्न होती हैं। दूहने वाले से दूध लेता है। चलते हुए छकड़े पर से गिरा। बड़ाई से रहित। जवान के पहिले बुड्ढा आया। कुत्ता दण्डी से डरता है। श्रेष्ठ पण्डितों से पढ़ना चाहिये। ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है। अविवेकी पुरुष (के पास) से लक्ष्मी चली जाती है।

कान्ति के बिना चन्द्रमा की शोभा नहीं होती। सूर्य्य पूरब दिशा से पश्चिम की ओर जाता है। आकाश से तारे गिरते हैं। परब्रह्म वचन के पथ से दूर है। माला से फूलों के रस टपकते हैं। कछुए पानी से बाहर निकलते हैं। विपत्ति से छूटा।

होम की वस्तु से उठा गन्ध। जल से उतराया कछुआ। धनुष से छूटे बाण। दिन से अलग रात।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

हिन्दी शब्द।

पुल्लिङ्ग।

एकवच॰	बहुवच॰
बालक से	बालकों से
लड़के से	लड़कों से

मुनि से	मुनियों से
माली से	मालियों से
साधु से	साधुओं से
भालू से	भालुओं से
चाैबे से	चाैबेओं से
कोदो से	कोदोओं से

स्त्रीलिङ्ग ।

बात से	बातों से
गैया से	गैयाओं से
तिथि से	तिथियों से
नदी से	नदियों से
धेनु से	धेनुओं से
बहू से	बहुओं से
सरसों से	सरसोंओं से

छठवां पाठ ।

सम्बन्ध ।

पदार्थों की परस्पर सङ्गति अर्थात् मेल को सम्बन्ध कहते हैं । जैसे । देवदत्तस्य दासः । देवदत्त का दास । यहां देवदत्त और दास इन दोनों पदार्थों का आपस में स्वामित्व और सेवकत्व सम्बन्ध है । यह सम्बन्ध प्राय दो पदार्थों में रहता है । जिन दो पदार्थों में सम्बन्ध रहता है उन में से एक भेदक और दूसरा भेद्य कहलाता है। जैसे उक्त उदाहरण में देवदत्त भेदक और दास भेद्य है । क्योंकि यदि "दास" इतना ही कहते तो यह भेद न जान पड़ता कि किस का दास । परन्तु जब उस के साथ

"देवदत्त का" यह षष्ठ्यन्त पद कहा तो यह भेद ज्ञात हुआ कि देवदत्त नामक व्यक्ति का दास। भेदक को विशेषण और भेद्य को विशेष्य भी कहते हैं।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में भेदक के आगे सम्बन्ध रूप अर्थ प्रकाश करने के लिये षष्ठी विभक्ति आती है। संस्कृत में षष्ठी विभक्ति के प्राय "स्य" इत्यादि चिह्न हैं। और हिन्दी में उस के "का" "के" "की" ये तीन चिह्न हैं। जैसे उक्त उदाहरण में संस्कृत में देवदत्त शब्द के आगे "स्य" चिह्न है और हिन्दी में उसी शब्द के आगे "का" चिह्न है। कहीं २ षष्ठी विभक्ति के बदले में सम्बन्धी शब्द का भी प्रयोग करते हैं। जैसे। देवदत्त सम्बन्धी दास।

संस्कृत में भेद्य के लिङ्ग और वचन के अनुसार भेदक के आगे षष्ठी विभक्ति के चिह्न में कुछ विकार नहीं होता। परन्तु हिन्दी में यदि भेद्य शब्द पुल्लिङ्ग हो और उस के आगे प्रथमा का एक वचन रहे तो भेदक के आगे षष्ठी का चिह्न "का" आवेगा। जैसे। देवदत्त का लड़का। और यदि प्रथमा का बहुवचन अथवा द्वितीया आदि छ विभक्तियों का कोई वचन रहे तो भेदक के आगे षष्ठी चिह्न "के" आवेगा। जैसे। देवदत्त के लड़के। देवदत्त के लड़के को। देवदत्त के लड़कों को। इत्यादि।

यदि भेद्य शब्द स्त्रीलिङ्ग हो तो उस के आगे चाहे जिस विभक्ति का जो वचन रहे सर्वत्र भेदक के आगे षष्ठी विभक्ति का चिह्न "की" आवेगा। जैसे। देवदत्त की दासी। देवदत्त की दासियां। देवदत्त की दासी को। देवदत्त की दासियों को। इत्यादि।

संस्कृत में षष्ठी विभक्ति।

एकव.	द्विव.	बहुव.
ङस्	ओस्	आम्

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामस्य । रामयोः । रामाणाम् । सख्युः । सख्योः । सखीनाम् ।
राम का । दोनों रामों का । रामों का । कतीनाम् ।
सर्वस्य । सर्वयोः । सर्वेषाम् । सुधियः । सुधियोः । सुधियाम् ।
त्रयाणाम् । साधोः । साध्वोः । साधूनाम् ।
पूर्वस्य । पूर्वयोः । पूर्वेषाम् । स्वयम्भुवः । स्वयम्भुवोः । स्वयम्भुवाम् ।
मुनेः । मुन्योः । मुनीनाम् । दातुः । दात्रोः । दातॄणाम् ।
पत्युः । पत्योः । पतीनाम् । गोः । गवोः । गवाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

रामस्य राजधान्ययोध्यासीत् । राजा सर्वस्येष्टे । त्रयाणां वेदानामध्येता । मुनेः कमण्डलुः । पत्युः प्रिया । सख्युर्गृहम् । सुधियां समुदायोऽत्र तिष्ठति । साधोरुपदेशः । स्वयम्भुवः सृष्टिः । दातुः पुण्यम् । गवां शाला ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

यदि किसी शब्द के साथ हेतु शब्द का प्रयोग हो और हेतु रूप अर्थ भी समझा जाय तो उन दोनों शब्दों के आगे षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे । अन्नस्य हेतोर्वसति । अन्न हेतु से बसता है । यहां अन्न शब्द के साथ हेतु शब्द का प्रयोग है । और हेतु रूप अर्थ भी समझा जाता है। इस लिये अन्न और हेतु दोनों शब्दों के आगे तृतीया के बदले में षष्ठी विभक्ति आई है ।

यदि किसी सर्वनाम शब्द के साथ हेतु शब्द का प्रयोग हो और हेतु रूप अर्थ भी समझा जाय तो उन दोनों शब्दों के आगे षष्ठी और तृतीया दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे । केन हेतुना वसति । कस्य हेतोर्वसति । किस हेतु से बसता है ।

यदि किसी सर्वनाम शब्द के साथ निमित्त शब्द अथवा उस के समानार्थक और किसी शब्द का प्रयोग रहे तो उन दोनों शब्दों के आगे प्रथमा आदि सब विभक्तियां आती हैं। जैसे। किं निमित्तं वसति। केन निमित्तेन। कस्मै निमित्ताय। किस निमित्त से बसता है। इत्यादि। ऐसे ही। किं कारणं वसति। को हेतुः किं प्रयोजनम्। किस कारण से बसता है। इत्यादि। और यदि किसी सर्वनामभिन्न शब्द के साथ निमित्त शब्द अथवा उस के समानार्थक और किसी शब्द का प्रयोग रहे तो उन दोनों शब्दों के आगे प्रथमा और द्वितीया को छोड़ कर तृतीया आदि सकल विभक्तियां आती हैं। जैसे। धनेन निमित्तेन नृपतिः सेव्यः। धनाय निमित्ताय नृपतिः सेव्यः। धन के निमित्त राजा की सेवा करनी चाहिये। इत्यादि।

जिन शब्दों के अन्त में "अतसुच्" प्रत्यय अथवा उस के समानार्थक और कोई प्रत्यय हो उन के योग में पञ्चमी को बाधकर षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। ग्रामस्य दक्षिणतः। गांव के दक्खिन। यहां दक्षिणतः इस शब्द में दक्षिणा शब्द के आगे अतसुच् प्रत्यय आया है। ऐसे ही। ग्रामस्य पुरः। ग्रामस्य पुरस्तात्। गांव के पूरब। ग्रामस्य उपरि। ग्रामस्य उपरिष्टात्। गांव के ऊपर। इत्यादि प्रयोग जानो।

जिस शब्द के अन्त में "एनप्" प्रत्यय हो उस के योग में पञ्चमी को बाधकर द्वितीया और षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा। गांव के पास ही दक्खिन। यहां दक्षिणेन इस शब्द में दक्षिणा शब्द के आगे "एनप्" प्रत्यय आया है। और उस के योग में ग्राम शब्द के आगे द्वितीया और षष्ठी विभक्तियां आई हैं।

जिन शब्दों का अर्थ दूर अथवा समीप हो उन के योग

में षष्ठी और पञ्चमी दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे। दूरं निकटं वा ग्रामस्य ग्रामाद् वा। गांव से दूर वा निकट।

जहां ज्ञा धातु का अर्थ ज्ञान से भिन्न हो वहां उस के करण के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। सर्पिषो जानीते। घी से प्रवृत्त होता है। यहां ज्ञा धातु का अर्थ प्रवृत्त होना है। इस लिये उस के करण सर्पिषा (घी) के आगे तृतीया के बदले में षष्ठी विभक्ति आई है।

स्मरणार्थक धातु, दय और ईश धातु इन के कर्म्म के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। मातुः स्मरति। माता का स्मरण करता है। सर्पिषो दयते। घी देता है। जगत इष्टे। जगत का स्वामी होता है।

जहां कृञ् धातु का अर्थ प्रतियत्न अर्थात् किसी वस्तु में कोई अपूर्व गुण उत्पन्न करना हो, वहां उस धातु के कर्म्म के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। एधोदकस्योपस्कुरुते। ईंधन पानी में अपूर्व गुण उत्पन्न करता है अर्थात् अग्नि के संयोग से उसे उष्ण करता है। यहां कृञ् धातु का अर्थ प्रतियत्न है। इस लिये उस के कर्म्म दक (पानी) के आगे षष्ठी विभक्ति आई है।

ज्वर और सम्पूर्वक णिजन्त तप इन दोनों धातुओं को छोड़कर जिन रोगार्थक धातुओं का कर्त्ता भाव अर्थात् भाव-प्रत्ययान्त शब्द से बोधित हो उन के कर्म्म के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। चोरस्य रुजति रोगः। रोग चोर को रोगी करता है। यहां रोगार्थक रुज धातु का कर्त्ता भाव प्रत्ययान्त रोग शब्द से बोधित होता है। इस लिये उस के कर्म्म चोर के आगे षष्ठी विभक्ति आई है।

आशिष अर्थात् अभिलाष अर्थ के वाचक नाथ धातु के कर्म्म के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है जैसे। सर्पिषो नाथते। घी का अभिलाष करता है। अर्थात् घी मेरे पास हो यह चाहता है।

यदि जास, नि और प्र पूर्वक हन, नाट, क्राथ और पिष इन पांच धातुओं का हिंसा अर्थ हो तो इन के कर्म्म के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। चोर-स्योज्जासयति। चोर की हिंसा करता है। हन धातु के पूर्व नि और प्र ये दोनों उपसर्ग कहीं इकट्ठा कहीं एक एक और कहीं उलट पुलट कर रहते हैं। जैसे। चोरस्य निप्रहन्ति। निहन्ति। प्रहन्ति। प्रणिहन्ति। चोर की हिंसा करता है। खलस्यो-न्नाटयति। खल की हिंसा करता है। दुष्टस्य क्राथयति। दुष्ट की हिंसा करता है। शत्रोः पिनष्टि शत्रु की हिंसा करता है।

यदि वि और अव पूर्वक हृ धातु और पण धातु इन दोनों का अर्थ एक ही हो तो इन के कर्म्म के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जूआ खेलने और बेंचने खरीदने के काम में ये दोनों धातु समानार्थक हैं। जैसे। शतस्य व्यवहरति पणते वा। सौ रुपैयों का व्यवहार करता वा जूआ खेलता है। जहां पूर्वोक्त धातु समानार्थक नहीं रहते वहां षष्ठी नहीं होती। जैसे। शलाका व्यवहरति। शलाकाओं को गिनता है। ब्राह्मणं पणायते। ब्राह्मण की स्तुति करता है।

यदि दिव धातु का भी अर्थ जूआ खेलना और बेंचने खरीद ने का व्यवहार हो तो उस के भी कर्म्म के आगे षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। शतस्य दीव्यति। सौ रुपैयों का व्यवहार करता वा जूआ खेलता है।

यदि दिव धातु उपसर्ग सहित हो तो उस के कर्म्म के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति। सौ रुपैयों का व्यवहार करता वा जूआ खेलता है।

"कृत्वसुच्" प्रत्यय अथवा उस के समानार्थक और किसी प्रत्यय के योग में समय रूप आधार के वाचक शब्द के आगे सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। पञ्च-कृत्वोऽह्नो भुङ्क्ते। दिन भर में पांच बार खाता है। द्विर-ह्नो भुङ्क्ते। दिन भर में दो बार खाता है। यहां पञ्चकृत्वः इस शब्द में पञ्चन् शब्द के आगे कृत्वसुच् प्रत्यय और द्विः इस शब्द में द्वि शब्द के आगे सुच्प्रत्यय आया है और इन दोनों प्रत्ययों के योग में समय रूप आधार के वाचक अहन् शब्द के आगे षष्ठी विभक्ति आई है।

स्मरण रखना चाहिये कि जहां जहां सम्बन्धमात्र की विवक्षा में षष्ठी विभक्ति कही गई है वहां सर्वत्र यदि वह विवक्षा न हो तो उचित विभक्तियां आवेंगी। जैसे। करण के आगे तृतीया इत्यादि।

जिन प्रत्ययों को कृत् संज्ञा होती है वे जिन शब्दों के अन्त में हों उन के योग में कर्ता और कर्म्म दोनों के आगे षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। ब्रह्मणः कृतिः। ब्रह्मा की रचना। जगतः कर्ता ब्रह्मा। जगत का रचने हारा ब्रह्मा। यहां कृत्प्रत्य-यान्त कृति और कर्तृ इन शब्दों के योग में क्रम से ब्रह्मन् और जगत् शब्द के आगे षष्ठी विभक्ति आई है।

कृत्प्रत्ययान्त शब्द के योग में अप्रधान कर्म्म के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। नेताश्वस्य ग्रामं ग्रामस्य वा। घोड़े को गांव लेजानेवाला। यहां कृत्प्रत्ययान्त

नेतृ शब्द के योग में अप्रधान कर्म्म ग्राम के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आई है।

जहां एक ही कृत् प्रत्यय के योग में कर्ता और कर्म्म दोनों के आगे षष्ठी विभक्ति पाई जाय वहां केवल कर्म्म के आगे वह विभक्ति आती है कर्ता के आगे नहीं। जैसे। आश्चर्य्यो गवां दोहोऽगोपेन। गोप भिन्न (पुरुष के हाथ) से गौओं का दूहा जाना आर्य्यश्च है। यहां दोह शब्द में दुह धातु के आगे घञ् प्रत्यय है उस के योग में अगोप और गो इन दोनों शब्दो के आगे षष्ठी विभक्ति पाई थी परन्तु वह केवल गो के आगे हुई अगोप के आगे नहीं हुई।

"स्त्रियां क्तिन्" इस सूत्र के अधिकार में जो अक और अकार प्रत्यय आते हैं उनके योग में उक्त नियम नहीं लगता। जैसे। भेदिका यज्ञदत्तस्य घटस्य। यज्ञदत्त का घड़ा फोरना। यहां भेदिका शब्द में भिद धातु के आगे भाव अर्थ में एवुल् प्रत्यय के स्थान में अक हुआ है। और चिकिर्षा देवदत्तस्य कटस्य। देवदत्त की चटाई बनाने की इच्छा। यहां चिकीर्षा शब्द में सन्नन्त कृ धातु के आगे भाव अर्थ में अकार प्रत्यय आया है। इन दोनों उदाहरणों में उक्त नियम नहीं लगा। अर्थात् केवल कर्म्म ही के आगे षष्ठी विभक्ति नहीं आई किन्तु कर्त्ता और कर्म्म दोनों के आगे आई।

वर्तमानकालिक क्त प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। राज्ञां मतः। राजाओं से माना जाता। राज्ञां बुद्धः राजाओं से जाना जाता। राज्ञां पूजितः। राजाओं से पूजा जाता।

आधार रूप अर्थ के वाचक क्त प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। इदमेषामासितम्। यह इन के बैठने

का स्थान। इदमेषां गतम् । यह इन के जाने का स्थान । इद-मेषां भुक्तम् । यह इन के भोजन का स्थान।

लादेश, उ, उक, अव्यय, निष्ठा खलर्थ और तृन् इन के योग में षष्ठी विभक्ति नहीं आती । लादेश प्रत्यय का उदा० । ओदनं पचन् । ओदनं पचमानः । भात पकाता हुआ। यहां लट् लकार के स्थान में क्रम से शतृ और शानच् प्रत्यय आये हैं । उ प्रत्यय का उदा० । कटं चिकीर्षुः । स्वभाव ही से चटाई बनाने की इच्छा रखने वाला । कन्यामलङ्करिष्णुः । स्वभाव ही से कन्या का अलङ्कार करने वाला । यहां क्रम से उ और इष्णुच् प्रत्यय आये हैं। उ इस अक्षर से उ और इष्णुच् दोनों प्रत्ययों का ग्रहण होता है। उक प्रत्यय का उदा० । दैत्यान् घातुको हरिः । स्वभाव ही से दैत्यों का मारनेवाला हरि । यहां उकञ् प्रत्यय आया है । यदि कम (इच्छा क०) धातु के आगे उकञ् प्रत्यय रहे तो षष्ठी का निषेध नहीं होता अर्थात् षष्ठी आती ही है। जैसे । दास्याः कामुकः । स्वभाव ही से दासी का चाहने वाला । अव्यय का उदा० । कटं कृत्वा । चटाई बना कर । ओदनं भोक्तुम् । भात खाने को । यहां कृत्वा और भोक्तुम् ये दोनों अव्यय हैं । निष्ठा प्रत्यय का उदा० । विष्णुना हता दैत्याः । दैत्यान् हतवान् विष्णुः । विष्णु ने दैत्यों को मारा । यहां क्रम से क्त और क्तवतु प्रत्यय आये हैं। इन्ही दोनों प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं । खलर्थ प्रत्यय का उदा० । ईषत्करः कटो भवता । चटाई बनाना आप को सुगम है । यहां खल् प्रत्यय आया है । तृन् प्रत्यय का उदा० । तृन् प्रत्यय से शानन्, चानश्, शतृ और तृन् इन चार प्रत्ययों का ग्रहण होता है । जैसे । सोमं पवमानः । सोमलता को पवित्र करने वाला । यहां शानन् प्रत्यय आया है । आत्मानं मण्डयमानः । स्वभाव ही से आप को भूषित करने वाला । यहां

चानश् प्रत्यय आया है। वेदमधीयन्। वेद पढ़ने वाला। यहां शतृ प्रत्यय आया है। लोकान् कर्त्ता। स्वभाव ही से लोकों का रचने वाला। यहां तृन् प्रत्यय आया है। यदि द्विष धातु के आगे शतृ प्रत्यय रहे तो उस के योग में षष्ठी विभक्ति का निषेध विकल्प करके होता है। जैसे। मुरस्य मुरं वा द्विषन्। मुर दैत्य से द्वेष रखने वाला। ऊपर लिखे हुए ओदनं पचन् इत्यादि उदाहरणों में कृत् प्रत्यय के योग में कर्त्ता और कर्म्म के आगे षष्ठी विभक्ति पाई रही उस का निषेध हुआ।

भविष्य काल में विहित अक प्रत्यय, और भविष्य काल और अधमर्ण रूप अर्थ में विहित इन् प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति नहीं आती। जैसे। कटं कारको व्रजति। चटाई बनाने वाला जाता है। यहां भविष्य काल में विहित ण्वुल् प्रत्यय के स्थान में अक आदेश हुआ है। ग्रामं गामी। गांव जाने वाला। यहां भविष्य काल में णिनि प्रत्यय आया है। शतं दायी। सौ रुपैये देने वाला। यहां अधमर्ण रूप अर्थ में णिनि प्रत्यय आया है। अधमर्ण ऋण लेने वाले को कहते हैं।

कृत्य प्रत्यय के योग में कर्त्ता के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। त्वया तव वा कटः कर्त्तव्यः। तुझे चटाई बनाना चाहिये।

तुला और उपमा इन दो शब्दों को छोड़कर इतर सकल तुल्यअर्थवाचक शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। देवदत्तस्य देवदत्तेन वा तुल्यः। देवदत्त के तुल्य। देवदत्तस्य देवदत्तेन वा सदृशः। देवदत्त के सदृश। जहां तुला अथवा उपमा शब्द का योग रहता है वहां तृतीया नहीं आती केवल-षष्ठी आती है। जैसे। तुला उपमा वा कृष्णस्य नास्ति। कृष्ण की उपमा नहीं है।

जहां आशिष अर्थ समझा जाय वहां आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अर्थ, और हित इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके आती है। पक्ष में षष्ठी होती है। जैसे। आयुष्यं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा भूयात्। ईश्वर करे देवदत्त को आयुष्य हो। ऐसे ही मद्र भद्र आदि शब्दों के योग्य में भी जानो। यहां आयुष्य आदि शब्दों से उन के समानार्थक और शब्द भी समझे जाते हैं। जैसे। चिरजीवितं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा भूयात्। ईश्वर करे देवदत्त बहुत दिन जीए॥

हिन्दी में कितने एक भेद्यवाचक शब्द ऐसे हैं कि चाहें वे जिस लिङ्ग और जिस बचन के हों परन्तु उन के योग में भेदक के आगे केवल "के" चिह्न आता है। जैसे। यह बालक रामदत्त के सदृश है। यह स्त्री उस के अधीन है। इत्यादि।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द।

रमायाः। रमयोः। रमाणाम्।
रमा का। दोनों रमाओं का।
रमाओं का।
सर्वस्याः सर्वयोः। सर्वासाम्।
तिसृणाम्।
मत्याः। मतेः। मत्योः। मती-
नाम्।
नाद्याः। नद्योः नदीनाम्।
श्रियाः। श्रियः। श्रियोः। श्रीणा-
म्। श्रियाम्।

स्त्रियाः स्त्रियोः। स्त्रीणाम्।
धेन्वाः। धेनोः। धेन्वोः। धेनू-
नाम्।
वध्वाः। वध्वोः वधूनाम्।
भ्रुवाः। भ्रुवः। भ्रुवोः। भ्रूणाम्।
भ्रुवाम्।
दुहितुः। दुहित्रोः। दुहितॄणाम्।
द्योः। द्यवोः। द्यवाम्।
नावः। नावोः। नावाम्।

संस्कृत वाक्य।

रमा विलासः। भूपतिः सर्वासां प्रजानां पिता। तिसृणां विद्यानां पारगः। मतेः स्फूर्त्तिः। नद्या दक्षिणतो ग्रामः। श्रियः

पतिः । स्त्रीणामासितम् । रोचते मह्यं धेनूनां दोहः कृष्णेन । वध्वाः पतिकुले स्थितिः समुचिता भ्रुवः कम्पः । दुहितुर्धनं न ग्राह्यम् । द्योर्नैर्मल्यम् । नावो गुणवत्त्वः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानस्य । ज्ञानयोः । ज्ञानानाम् । दध्नः । दध्नोः । दध्नाम् ।
ज्ञान का । दोनों ज्ञानों का । मधुनः । मधुनोः । मधूनाम् ।
ज्ञानों का ।
वारिणः । वारिणोः । वारीणाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

भक्तिर्ज्ञानस्य कारणम् । वारिणो विभित्सा यज्ञदत्तस्य । दध्नः सारो घृतम् । मधुनो ज्ञानम् ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहः । दुहोः । दुहाम् ।
दूहने वाले का । दोनों दूहने वालों का । दूहने वालों का ।
अनडुहः । अनडुहोः । अनडुहाम् ।
चतुर्णाम् ।
पञ्चानाम् ।
षण्णाम् ।
अष्टानाम् ।
तस्य । तयोः । तेषाम् ।
उस का । उन दोनों का ।
उन का ।

तव । ते युवयोः । वाम् । युष्माकम् । वः ।
तेरा । तुम दोनों का । तुम्हारा ।
मम । मे । आवयोः । नौ ।
अस्माकम् । नः ।
मेरा । हम दोनों का ।
हमारा ।
कस्य । कयोः । केषाम् ।
किस का । किन दोनों का ।
किन का ।
अस्य । अनयोः । एनयोः ।
एषाम् ।

इस का । इन दोनों का । बुधः । बुधोः । बुधाम् ।
इन का । अग्निमथः । अग्निमथोः ।
यस्य । ययोः । येषाम् । अग्निमथाम् ।
जिस का । जिन दोनों का । प्राचः । प्राचोः । प्राचाम् ।
जिन का । प्राञ्चः । प्राञ्चोः । प्राञ्चाम् ।
एतस्य । एतयोः । एनयोः । उदीचः । उदीचोः । उदीचाम् ।
एतेषाम् । महिम्नः । महिम्नोः । महिम्नाम् ।
इस का । इन दोनों का । यज्वनः । यज्वनोः । यज्वनाम् ।
इन का । यूनः । यूनोः । यूनाम् ।
अमुष्य । अमुयोः । अमीषाम् । राज्ञः । राज्ञोः । राज्ञाम् ।
इस का इन दोनों का । इन का । दण्डिनः । दण्डिनोः । दण्डिनाम् ।
उस का । उन दोनों का । उनका । पथः । पथोः । पथाम् ।
सम्राजः । सम्राजोः । सम्राजाम् । वेधसः । वेधसोः । वेधसाम् ।
भूभृतः । भूभृतोः । भूभृताम् । विदुषः । विदुषोः । विदुषाम् ।
धीमतः । धीमतोः । धीमताम् । गरीयसः । गरीयसोः । गरीयसाम् ।
गच्छतः । गच्छतोः । गच्छताम् । पुंसः । पुंसोः । पुंसाम् ।
प्रशामः । प्रशामोः । प्रशामाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

दुहो वेतनत् । अनडुहो बन्धनम् । कस्य हेतोर्गच्छति । सम्राजो विजयः । भूभृतः शृङ्गम् । धीमत ईश्वरः सेव्यः । गच्छतो न किञ्चिद् दूरम् । प्रशाम आदरः कार्य्यः । बुधो ज्ञानम् । अग्निमथ आसनम् । महिम्नो हेतोर्विद्यां पठति । यज्वनः पुण्यम् । यूनः पौरुषम् । राज्ञः पूजितः । दण्डिनः कमण्डलुः । पथो दक्षिणतः क्षेत्रम् । वेधसः सदृशः । विदुषो हितम् । गरीयसो मानः । पुंसो धर्म्मः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवः । दिवोः । दिवाम् । एतस्याः । एतयोः । एनयोः ।
आकाश का । दोनों आकाशों का । एतासाम् ।
आकाशों का । अमुष्याः । अमुयोः । अमूषाम् ।
चतसृणाम् । वाचः । वाचोः । वाचाम् ।
तस्याः । तयोः । तासाम् । स्रजः । स्रजोः । स्रजाम् ।
कस्याः । कयोः । कासम् । त्विषः । त्विषोः । त्विषाम् ।
अस्याः । अनयोः । एनयोः । गिरः । गिरोः । गिराम् ।
आसाम् । आपदः । आपदोः । आपदाम् ।
यस्याः । ययोः । यासाम् । अपाम् ।
दिशः । दिशोः । दिशाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

दिवो गुणः शब्दः । वाचो विस्तरः । स्रजः सूत्रम् । त्विष आश्रयः । गिरां पतिः । आपदां हन्ता । अपां तृप्रः । दिशां स्वामी ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वारः । वारोः । वाराम् । अह्नः । अह्नोः । अह्नाम् ।
जल का । दोनों जलों का । हविषः । हविषोः । हविषाम् ।
जलों का । धनुषः । धनुषोः । धनुषाम् ।
चतुर्णाम्

संस्कृत वाक्य ।

वारां निधिः । अह्नो द्विर्भुक्तिः । हविषो गन्धः । धनुषः प्रत्यञ्चा ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

तीन वेदों का पढ़ने वाला । यहां पण्डितों की मण्डली

है। अयोध्या राम की राजधानी थी। मुनि का कमण्डल। साधु का उपदेश। राजा सब का स्वामी होता है। पति की प्यारी। ब्रह्मा की सृष्टि। बैलों की शाला। मित्र का घर। दाता का पुण्य।

कृष्ण का गौ दूहना मुझे अच्छा लगता है। नदी के दक्खिन गांव। राजा (अपनी) सकल प्रजाओं का पिता होता है। लक्ष्मी का विलास। तीन विद्याओं में पारङ्गत। लक्ष्मी का स्वामी। बहू को (अपने) पति के घर रहना उचित है। स्त्रियों के बैठने का स्थान। बुद्धि की स्फूर्त्ति। नाव का मस्तूल। भौं का हिलना। आकाश की निर्म्मलता। कन्या का धन नहीं लेना चाहिये।

दही का सारांश घी। भक्ति ज्ञान का कारण होती है। सहत से प्रवृत्ति। यज्ञदत्त की जल के (सोते के) फोरने की इच्छा।

बड़ाई के लिये विद्या पढ़ता है। बुद्धिमान को ईश्वर की सेवा करनी चाहिये। दूहने वाले की चाकरी। युवा (पुरुष) की मनुसाई। पहाड़ की चोटी। दण्डी का कमण्डल। पण्डित का हित। शान्त (पुरुष) का आदर किया चाहिये। चक्रवर्त्ती का विजय। आग मथने वाले का आसन। राजा (के हाथ) से पूजा जाता। बैल का पगहा। यज्ञ करने वाले का पुण्य। राह की दक्खिन ओर खेत। चलने वाले को कुछ दूर नहीं है। किस कारण जाता है। पुरुष का धर्म्म। श्रेष्ठ पुरुष का सम्मान। ब्रह्मा के सदृश।

माला का सूत। विपत्तियों का दूर करने वाला। आकाश का गुण शब्द है। जल से तृप्त। कान्ति का आधार। दिशाओं का स्वामी। वचन का विस्तार। वाणियों का स्वामी।

दिन में दो बार भोजन करता है। धनुष की डोरी। जल का निधि। होम की वस्तु का गन्ध।

इन वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

हिन्दी शब्द ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवच·	बहुवच·
बालक का-के की	बालकों का-के की
लड़के का के की	लड़कों का के-की
मुनि का के की	मुनियों का-के-की
माली का के की	मालियों का के-की
साधु का के की	साधुओं का-के की
भालू का-के-की	भालुओं का के की
चौबे का-के-की	चौबेओं का के की
कोदो का के-की	कोदोओं का के की

स्त्रिलिङ्ग ।

बात का-के-की	बातों का-के-की
गैया का-के की	गैयाओं का-के-की
तिथि का-के-की	तिथियों का के-की
नदी का-के की	नदियों का-के-की
धेनु का-के की	धेनुओं का के-की
बहू का के की	बहुओं का-के की
सरसों का-के-की	सरसोंओं का-के-को

सातवां पाठ ।

अधिकरण कारक ।

अधिकरण उसे कहते हैं जो कर्त्ता और कर्म्म के द्वारा उन दोनों की क्रियाओं का आधार हो। जैसे। देवदत्तो गृह ओदनं पचति। देवदत्त घर में भात पकाता है। यहां घर देवदत्त के द्वारा

उसकी पकाना क्रिया का आधार है। और यज्ञदत्त: स्थाल्यामोदनं पचति। यज्ञदत्त बटलोही में भात पकाता है। यहां बटलोही भात के द्वारा उसकी पकना क्रिया का आधार है।

जिस में कोई वस्तु रहे उसे आधार और जो रहे उसे आधेय कहते हैं।

आधार तीन प्रकार का होता है औपश्लेषिक वैषयिक और अभिव्यापक। औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिस के एक अंश में आधेय रहे। जैसे। यज्ञदत्त: कटे आस्ते। यज्ञदत्त चटाई पर बैठा है। यहां चटाई औपश्लेषिक आधार है। क्योंकि यज्ञदत्त उस के एक भाग में रहता है। वैषयिक उस आधार को कहते हैं जिस के विषय में आधेय हो। जैसे। मोक्षे इच्छास्ति। मोक्ष के विषय में इच्छा है। यहां मोक्ष वैषयिक आधार है। क्योंकि इच्छा उस के विषय में होती है। अभिव्यापक उस आधार को कहते हैं जिस के सब अंशों में आधेय रहे। जैसे। तिले तैलमस्ति। तिल में तेल है। यहां तिल अभिव्यापक आधार है। क्योंकि तेल उसके सब अंशो में रहता है। कोई २ वैयाकरण सामीपिक नाम चौथा आधार मानते हैं। जैसे। नद्यां ग्राम:। नदी के समीप गावं है।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में अधिकरण के आगे सप्तमी विभक्ति आती है। संस्कृत में सप्तमी विभक्ति के प्राय "ए" इत्यादि चिह्न हैं। और हिन्दी में उसका "में" चिह्न है। जैसे। गृहेऽस्ति। घर में है। इस उदाहरण में संस्कृत में गृह शब्द के अन्त में ए चिह्न है और हिन्दी में घर शब्द के आगे "में" चिह्न है। कहीं २ "के विषय में" "पर" इत्यादि चिह्न भी आते हैं।

संस्कृत में सप्तमी विभक्ति।

एकव·	द्विव·	बहुव·
ङि	ओस्	सुप्

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामे । रामयोः । रामेषु । सख्यौ । सख्योः । सखिषु ।
राम में । दोनों रामों में । रामों में । कतिषु ।
सर्वस्मिन् । सर्वयोः । सर्वेषु । सुधियि । सुधियोः । सुधीषु ।
त्रिषु । साधौ । साध्वोः साधुषु ।
पूर्वस्मिन् । पूर्वे । पूर्वयोः । पूर्वेषु । स्वयम्भुवि । स्वयम्भुवोः ।
मुनौ । मुन्योः । मुनिषु । स्वयम्भूषु ।
पत्यौ । पत्योः । पतिषु । दातरि । दात्रोः । दातृषु ।
गवि । गवोः । गोषु ।

संस्कृत वाक्य ।

रामेऽनुरागः । सर्वस्मिन्नात्मास्ति । त्रिषु लोकेषु विश्रुतः । मुनौ भक्तिः । पत्यौ प्रीतिः । सख्यौ स्नेहः । सुधियि प्रियवचनम् । साधौ साधुः । दातरि याच्ञा । गवि दया ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

दूर अन्तिक और इन के समानार्थक इतर शब्दों के आगे भी सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । ग्रामस्य दूरे । गावं से दूर । ग्रामस्यान्तिके गांव के पास । ग्रामस्य निकटे गावं के समीप ।

जिस क्त प्रत्ययान्त शब्द के अनन्तर इन् प्रत्यय आवे उस के कर्म्मके आगे सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । व्याकरणे ऽधीती देवदत्तः । व्याकरण पढ़ा हुआ देवदत्त । यहां क्त प्रत्ययान्त । अधीत शब्द के आगे इन् प्रत्यय आया है । इस लिये उस के कर्म्म के वाचक व्याकरण शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आई है ।

साधु और असाधु इन दोनों शब्दों में से प्रत्येक के योग में सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । साधुः कृष्णो मातरि, असाधुर्मातुले । कृष्ण माता के लिये साधु और मामा (कंस) के लिये असाधु (थे) ।

यदि किसी क्रिया के फल के साथ उसके कर्म्म का सम्बन्ध हो तो उस फल के वाचक शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । व्याधश्चर्म्मणि द्वीपिनं हन्ति । व्याध चाम के निमित्त बाघ को मारता है । यहां मारना क्रिया के फल चाम के साथ उस के कर्म्म बाघ का समवाय सम्बन्ध है । इस लिये उस फल के वाचक चर्म्म शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आई है । यहां हेतुवाचक शब्द के आगे तृतीया पाई रही ।

जहां किसी एक पदार्थ की क्रिया से किसी दूसरे पदार्थ की क्रिया समझी जाय वहां उस प्रथम पदार्थ और उस की क्रिया के वाचक शब्दों के आगे सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । गोषु दुह्यमानासु कृष्णदत्तो गतः । जब गाय दूही जाती थीं कृष्णदत्त गया । यहां गायों की दूही जाना क्रिया से कृष्णदत्त की गमन क्रिया समझी जाती है । इस लिये गाय के वाचक गो शब्द और उन की क्रिया के वाचक दुह्यमान शब्द दोनों के आगे सप्तमी विभक्ति आई है ।

जहां एक पदार्थ की क्रिया से दूसरे पदार्थ की क्रिया समझी जाय और उस प्रथम पदार्थ का अनादर भी सूचित हो वहां प्रथम पदार्थ के वाचक शब्द के आगे षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । रुदतो रुदति वा प्राव्राजीत् । रोते हुए पुत्र आदिकों का अनादर करके सन्यासी हो गया ।

स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू, और प्रसूत इन शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । गवां गोषु वा स्वामी । गौओं का स्वामी । गवां गोषु वा ईश्वरः । गौओं का ईश्वर । गवां गोषु वा अधिपतिः । गौओं का अधिपति । गवां गोषु वा दायादः । गौओं का बंटवारा लेने वाला । गवां गोषु वा साक्षी । गौओं का साखी । गवां गोषु वा प्रतिभूः ।

गौओं का जामिन । गवां गोषु वा प्रसूतः । अर्थात् गौओं ही का अनुभव करने के लिये उत्पन्न हुआ ।

यदि तत्पर होना अर्थ प्रकाशित हो तो आयुक्त और कुशल इन दोनों शब्दों में से प्रत्येक के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । आयुक्तो हरिपूजनस्य हरिपूजने वा । हरि की पूजा में आयुक्त अर्थात् नियुक्त । कुशलो हरिपूजनस्य हरिपूजने वा । हरि की पूजा में कुशल अर्थात् निपुण । जहां तत्पर होना अर्थ नहीं प्रकाशित होता वहां षष्ठी नहीं किन्तु केवल सप्तमी आती है । जैसे । आयुक्तो गौः शकटे । छकड़े में कुछ जोता हुआ बैल । यहां तत्पर होना अर्थ नहीं प्रकाशित है । इस लिये आयुक्त शब्द के योग में शकट शब्द के आगे केवल सप्तमी विभक्ति आई है ।

जाति गुण अथवा क्रिया के द्वारा किसी समुदाय से एक वस्तु को अलग समझना निर्द्धारण कहलाता है । जिस समुदाय से निर्द्धारण हो अर्थात् एक वस्तु अलग समझी जाय उस के वाचक शब्द के आगे षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जाति का उदा० । मनुष्याणां मनुष्येषु वा क्षत्रियः शूरतमः । मनुष्यों में क्षत्री बड़े शूर होते हैं । यहां क्षत्रियत्व जाति के द्वारा मनुष्य समुदाय से क्षत्री को अलग समझते हैं । गुण का उदा० । गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा । गौओं में से काली गौ बहुत दुधार होती है । यहां कृष्ण गुण के द्वारा गौ समुदाय से काली गौ को अलग समझते हैं । क्रिया का उदा० । अध्वगानामध्वगेषु वा धावन् शीघ्रः । पथ चलने वालों में धावन शीघ्रगामी होता है । यहां दौड़ना क्रिया के द्वारा बटोही समुदाय से धावन को अलग समझते हैं ।

यदि प्रशंसा अर्थ प्रकाशित हो और प्रति, परि, और अनु

इन अव्ययों में से किसी का योग न हो तो साधु और निपुण इन दोनों शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । मातरि साधुः । माता के विषय में साधु । पितरि निपुणः । पिता के विषय में निपुण । जहां प्रशंसा नहीं किन्तु यथार्थ कथन हो वहां सप्तमी नहीं होती । जैसे । निपुणो राज्ञो भृत्यः । राजा का निपुण भृत्य । और जहां प्रति आदि का योग रहता है वहां भी सप्तमी नहीं होती । जैसे । साधुर्मातरं प्रति । माता के विषय में साधु ।

प्रसित और उत्सुक इन दोनों शब्दों में से प्रत्येक के योग में तृतीया और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । प्रसितो हरौ हरिणा वा । हरि में तत्पर । उत्सुको हरौ हरिणा वा । हरि में उद्योगी ।

यदि किसी नक्षत्रवाचक शब्द के आगे कोई प्रत्यय लाकर उस का लोप लुप् शब्द से किया जाय तो उस प्रत्यय के अर्थ के वाचक शब्द के आगे अधिकरण अर्थ में तृतीया और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । मूलेन मूले वा देवीमावाहयेत् । मूल नक्षत्र में देवी का आवाहन करना चाहिये । यहां मूल शब्द के आगे मूल नक्षत्र युक्त काल अर्थ में "अण्" प्रत्यय लाकर उस का लोप "लुबविशेषे" इस सूत्र से किया गया है । इस लिये मूल नक्षत्र युक्त काल के वाचक मूल शब्द के आगे तृतीया और सप्तमी दोनों विभक्तियां आई हैं ।

यदि कर्तृत्व आदि दो शक्तियों के बीच में कोई समय अथवा पथ रहे तो उस के वाचक शब्द के आगे सप्तमी और पञ्चमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । अद्य भुक्त्वा देवदत्तो द्व्यहे द्व्यहाद्वा भोक्ता । देवदत्त आज भोजन करके दो दिनों के अनन्तर खायगा । यहां दो कर्तृत्व शक्तियों के मध्य में काल

है । और । इह स्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्यति । यह (पुरुष) यहां बैठा हुआ कोस भर पर लक्ष्य बेधता है । यहां कर्तृत्व और कर्मत्व दो शक्तियों के बीच में पथ है । इस लिये क्रम से इह और क्रोश दोनों शब्दों में से प्रत्येक के आगे सप्तमी और पञ्चमी दोनों विभक्तियां आई हैं ॥

अधिक शब्द के योग में सप्तमी और पञ्चमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । लोके लोकाद्वाधिको हरिः । लोक से अधिक हरि ।

जहां अधिकता प्रकाशित हो वहां उप इस अव्यय के योग में जिस वस्तु से कोई वस्तु अधिक समझी जाय उस के वाचक शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । उप परार्द्धे हरेर्गुणाः । हरि के गुण परार्द्ध सङ्ख्या से अधिक हैं । परार्द्ध अन्तिम सङ्ख्या का नाम है ।

जहां स्वस्वामिभाव सम्बन्ध प्रकाशित हो वहां अधि इस अव्यय के योग में स्ववाचक और स्वामिवाचक दोनों शब्दों के आगे पारापारी सप्तमी विभक्ति आती है । जैसे । अधि भुवि रामः । पृथ्वी के राम । यहां स्व (धन) वाचक "भू" शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आई है । अधिरामे भूः । राम की पृथ्वी । यहां स्वामी वाचक राम शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आई है ।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायाम् । रमयोः । रमासु । मत्याम् । मतौ । मत्योः । मतिषु ।
रमा में । दोनों रमाओं में । नद्याम् । नद्योः । नदीषु ।
रमाओं में । श्रियाम् । श्रियि । श्रियोः । श्रीषु ।
सर्वस्याम् । सर्वयोः । सर्वासु । स्त्रियाम् । स्त्रियोः । स्त्रीषु ।
तिसृषु । धेन्वाम् । धेनौ । धेन्वोः । धेनुषु ।

वध्वाम् । वध्वोः । वधूषु । द्यवि । द्यवोः । द्योषु ।
भ्रुवाम् । भ्रुवि । भ्रुवोः । भ्रूषु । नावि । नवोः । नौषु ।
दुहितरि । दुहित्रोः । दुहितृषु ।

धातु ।

रञ्ज. अनुपू. दिवा. उभय. अक=
प्रीति क. ।
अनुरज्यन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

रमायामुत्सुको हरिः । सर्वास्ववस्थासु धर्म्ममाचरेत् । कवीनां मतौ भारती तिष्ठति । नद्यां ग्रामः । श्रियामनुरज्यन्ति लोकाः । स्त्रीषु साध्वी स्वर्गं गच्छति । धेनुषु दुह्यमानास्वागतो देवदत्तः । वधूषु सन्तुष्टासु श्रीरेधते । सम्राजो। भ्रुवि कुटिलायां जगद्बिभेति । दुहितरि स्नेहः । द्यवि परिभ्रमन्ति ग्रहाः । नावि तिष्ठति।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग ।

ज्ञाने । ज्ञानयोः । ज्ञानेषु । वारिणि । वारिणोः । वारिषु ।
ज्ञान में। दोनों ज्ञानों में। ज्ञानों में। दध्नि। दधनि। दध्नोः। दधिषु
मधुनि । मधुनोः । मधुषु ।

संस्कृत वाक्य ।

ज्ञाने मुक्तिर्व्यवस्थिता । वारिणि पद्मानि शोभन्ते । दध्नि घृतं तिष्ठति । मधुनि लुब्धो भ्रमरः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहि । दुहोः । धुक्षु । अनडुहि । अनडुहोः । अनडुत्सु ।
दूहने वाले में । दोनों दूहने चतुर्षु ।
वालों में । दूहने वालों में । पञ्चसु ।

षट्सु । भूभृति । भूभृतोः । भूभृत्सु ।
अष्टसु । अष्टासु । धीमति । धीमतोः । धीमत्सु ।
तस्मिन् । तयोः । तेषु । गच्छति । गच्छतोः । गच्छत्सु ।
उस में । उन दोनों में । उन में । प्रशामि । प्रशामोः । प्रशान्सु ।
त्वयि । युवयोः । युष्मासु । बुधि । बुधोः । भुत्सु ।
तुझ में । तुम दोनों में । तुम में । अग्निमथि । अग्निमथोः । अग्निमत्सु ।
मयि । आवयोः । अस्मासु ।
मुझ में । हम दोनों में । हम में । प्राचि । प्राचोः । प्राक्षु ।
कस्मिन् । कयोः । केषु । प्राञ्चि । प्राञ्चोः । प्राङ्क्षु । प्राङ्खषु । प्राङ्षु ।
किस में । किन दोनों में । किनमें ।
अस्मिन् । अनयोः । एनयोः । एषु । उदीचि । उदीचोः । उदक्षु ।
इस में । इन दोनों में । इन में । महिम्नि । महिम्नोः । महिमसु ।
यस्मिन् । ययोः । येषु । यज्वनि । यज्वनोः । यज्वसु ।
जिस में । जिन दोनों में । जिन में । यूनि । यूनोः । युवसु ।
एतस्मिन् । एतयोः । एनयोः । राज्ञि । राजनि । राज्ञोः । राजसु ।
एतेषु । दण्डिनि । दण्डिनोः । दण्डिषु ।
इस में । इन दोनों में । इन में । पथि । पथोः । पथिषु ।
अमुष्मिन् । अमुयोः । अमीषु । वेधसि । वेधसोः । वेधस्सु ।
इस में । इन दोनों में । इन में । विदुषि । विदुषोः । विद्वत्सु ।
उस में । उन दोनों में । उन में । गरीयसि । गरीयसोः । गरीयस्सु ।
सम्राजि । सम्राजोः । सम्राट्सु । पुंसि । पुंसोः । पुंसु ।

धातु ।

श्रम. विपूर्वक. दिवा. पर. अक.= विश्राम क. ।
विश्राम्यति ।

वस. निपूर्वक. भ्वा पर. अक.= बसना ।
निवसन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

कृष्णो दुहि गावो बहुक्षीरा बभूवुः । शङ्करो ऽनडुहि स्थितः । चतुर्षु वेदेष्वधीती । सम्राट्सु श्रीमती विजयिनी देव्यधिकप्रतापा । भूभृत्सु हिमालयोऽत्युच्चः । धीमति छात्रेऽध्यापकस्य परिश्रमः सफलत्वमेति । गच्छत्सु धावन् शीघ्रः । प्रशाम्यनुरज्यति लोकः । बुध्यागच्छत्यभ्युत्तिष्ठेत । अग्निमथ्यग्निं मथति देवा हृष्यन्ति । महिम्निकस्य नाभिलाषः । यज्वनि प्रीतिः । यूनि पुत्रे वनमाश्रयन्ति विघ्नाः । राजसु स्वामिनी श्रीमती भारतेश्वरी । दण्डिनि मृते तस्य दाहो न भवति । पथि विलङ्घिते विश्राम्यति पथिकः । वेधसि भक्तिः । विदुषि पुत्रे हृष्यति पिता । गरीयसि पुंसि सद्गुणा निवसन्ति ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवि । दिवोः । द्युषु ।
आकाश में । दोनों आकाशों में ।
आकाशों में ।
चतसृषु ।
तस्याम् । तयोः । तासु ।
कस्याम् । कयोः । कासु ।
अस्याम् । अनयोः । एनयोः ।
आसु ।
यस्याम् । ययोः । यासु ।
एतस्याम् । एतयोः । एनयोः ।
एतासु ।
अमुष्याम् । अमुयोः । अमूषु ।
वाचि । वाचोः । वाक्षु ।
स्रजि । स्रजोः । स्रक्षु ।
त्विषि । त्विषोः । त्विट्सु । त्विट्त्सु ।
गिरि । गिरोः । गीर्षु ।
आपदि । आपदोः । आपत्सु ।
अप्सु ।
दिशि । दिशोः । दिक्षु ।

संस्कृत वाक्य ।

दिवि विद्योतन्ते तारकाः । चतसृषु दिक्षु चत्वारो गजाः सन्ति । वाचि तिष्ठन्ति धार्म्मिकाः । स्रजि सूत्रम् । चन्द्रस्य त्विषि

विकसन्ति कुमुदानि । गोषुस्वामी । आपदि धैर्य्यम् । अप्सु निवसन्ति जलजन्तवः ।

इन संस्कृत वाक्यों को हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वारि । वारोः । वार्षु । अह्नि । अहनि । अह्नोः । अहस्सु ।
जल में । दोनों जलों में । जलों में । हविषि । हविषोः । हविष्षु ।
चतुर्षु । धनुषि । धनुषोः । धनुष्षु ।

संस्कृत वाक्य ।

वारि तिष्ठन्ति मण्डूकाः । अहन्यग्निर्न शोभते । हविषि हूयमाने वृष्टिरभूत् । इन्द्रस्य धनुषि दृष्टिं ददाति ।

इन संस्कृत वाक्यों को हिन्दी में अनुवाद करो ।

हिन्दी वाक्य ।

पति में प्रेम । सज्जन के लिये सज्जन । तीनों लोक में प्रसिद्ध । दाता से मांगना । राम में अनुराग । मुनि में भक्ति । आत्मा सर्वत्र है । मित्र में स्नेह । बैल पर दया । पण्डित से प्रिय वचन ।

जब धेनु दूही जाती थीं देवदत्त आया । ग्रह आकाश में घूमते हैं । लोग लक्ष्मी में अनुराग करते हैं । सब अवस्थाओं में धर्म्म करना चाहिये । स्त्रियों में पतिव्रता स्वर्ग जाती है । (घर में) बहू लोग सन्तुष्ट रहें तो लक्ष्मी बढ़ती है । नदी के समीप गांव । लक्ष्मी में उत्कण्ठित हरि । चक्रवर्ती के भौं के टेढ़ी होने पर संसार डरता है । नाव पर बैठा । कन्या में स्नेह । कवियों की बुद्धि पर सरस्वती रहती है ।

जल में कमल शोभित होते हैं । फूल के रस पर लुभाया भौंरा । दही में घी रहता है । मुक्ति ज्ञान पर आश्रित है ।

बुद्धिमान विद्यार्थी में अध्यापक का परिश्रम सफल होता है। बैल पर चढ़े महादेव। चक्रवर्त्तियों में श्रीमती विजयिनी देवी अधिक प्रताप रखती हैं। जब कृष्णा दूहने वाले हुए गाय बहुत दूध देने लगीं। विद्वान को आते (देखकर) उठना चाहिये। बड़ाई में किस की अभिलाषा नहीं होती। चार वेदों का पढ़ने वाला। पहाड़ों में हिमालय अति ऊंचा है। चलने वालों में धावन शीघ्रगामी होता है। शान्त (पुरुष) में लोग अनुराग करते हैं। जब आग मथनेवाला आग मथता है देवता प्रसन्न होते हैं। श्रीमती भारतेश्वरी (सकल) राजाओं की स्वामिनी हैं। पुत्र युवा होने पर बुद्धिमान (पुरुष) वन में चले जाते हैं। दण्डी के मरने पर उस का दाह नहीं होता। यज्ञ करनेवाले में प्रीति। पुत्र के पण्डित होने पर पिता प्रसन्न होता है। श्रेष्ठ पुरुष में गुण बसते हैं। पथ समाप्त होने पर पथिक विश्राम करता है। ब्रह्म में भक्ति।

चन्द्र के प्रकाश में कुमुदिनी के फूल फूलते हैं। आकाश में तारा चमकते हैं। पानी में जल के जीव रहते हैं। विपत्ति में धीरता। धार्म्मिक लोग (अपने) वचन में स्थिर रहते हैं। चार दिशाओं में चार हाथी हैं। माला में सूत। वाणी का स्वामी।

दिन में अग्नि की शोभा नहीं होती। इन्द्र के धनुष में दृष्टि देता है। जल में मेड़क रहते हैं। (आग में) होम की वस्तु हुने जाने पर वृष्टि हुई।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

हिन्दी शब्द।

पुल्लिङ्ग।

एकव॰	बहुव॰
बालक में-पर	बालकों में-पर
लड़के में-पर	लड़कों में-पर

मुनि में-पर	मुनियों में-पर
माली में-पर	मालियों में-पर
साधु में-पर	साधुओं में-पर
भालू में-पर	भालुओं में-पर
चौबे में-पर	चौबेओं में-पर
कोदो में-पर	कोदोओं में-पर

स्त्रीलिङ्ग ।

बात में-पर	बातों में-पर
गैया में-पर	गैयाओं में-पर
तिथि में-पर	तिथियों में-पर
नदी में-पर	नदियों में-पर
धेनु में-पर	धेनुओं में-पर
बहू में-पर	बहुओं में-पर
सरसों में-पर	सरसोंओं में-पर

आठवां पाठ ।

सम्बोधन ।

सम्बोधन का अर्थ अभिमुख करना है । जैसे । जब कोई पुरुष अपने लड़के से कहता है कि "हे पुत्र त्वं व्याकरणं पठ । हे बेटा तूं व्याकरण पढ़ । तो वह उसको अपने अभिमुख करके व्याकरण पढ़ने की आज्ञा देता है । इस अभिमुख करने को सम्बोधन और जो अभिमुख किया जाय उसे सम्बोध्य कहते हैं ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में सम्बोध्य के आगे सम्बोधन अर्थ में प्रथमा विभक्ति आती है । संस्कृत में इस

प्रथमा के कहीं २ विसर्ग आदि चिह्न रहते हैं। हिन्दी में इस का कहीं भी कुछ चिह्न नहीं रहता।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में सम्बोध्य के साथ सम्बोधन रूप अर्थ के प्रकाश करने के लिये हे, अरे, इत्यादि शब्द जोड़े जाते हैं। जैसे। उक्त उदाहरण में हे शब्द है। कहीं नहीं भी जोड़े जाते। जैसे। राम मां पाहि। राम मेरी रक्षा करो। इत्यादि।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द।

हे राम। हे रामौ। हे रामाः। हे सखे। हे सखायौ। हे सखायः।
हे राम। हे दोनों रामो।
हे रामो।
हे सुधीः। हे सुधियौ। हे सुधियः।
हे सर्व। हे सर्वौ। हे सर्वे।
हे साधो। हे साधू। हे साधवः।
हे चयः।
हे पूर्व। हे पूर्वौ। हे पूर्वे। पूर्वाः।
हे स्वयम्भूः। हे स्वयम्भुवौ। हे स्वयम्भुवः।
हे मुने। हे मुनी। हे मुनयः। हे दातः। हे दातारौ। हे दातारः।
हे पते। हे पती। हे पतयः। हे गौः। हे गावौ। हे गावः।

कृष्ण मुकुन्द आदि शब्द राम शब्द के, विश्व आदि अकारान्त शब्द सर्व शब्द के, पर आदि शब्द पूर्व शब्द के, अग्नि रवि कवि आदि शब्द मुनि शब्द के, विष्णु वायु भानु आदि शब्द साधु शब्द के, धातृ आदि शब्द दातृ शब्द के समान होते हैं।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द।

हे रमे। हे रमे। हे रमाः। हे सर्वे। हे सर्वे। हे सर्वाः।
हे रमा। हे दोनों रमाओ। हे तिस्रः।
हे रमाओ।
हे मते। हे मती। हे मतयः।

हे नदि । हे नद्यौ । हे नद्यः । हे भ्रूः । हे भ्रूवौ । हे भ्रुवः ।
हे श्रीः । हे श्रियौ । हे श्रियः । हे दुहितः । हे दुहितरौ । हे
हे स्त्रि । हे स्त्रियौ । हे स्त्रियः । दुहितरः ।
हे धेनो । हे धेनू । हे धेनवः । हे द्यौः । हे द्यावौ । हे द्यावः ।
हे वधु । हे वध्वौ । हे वध्वः । हे नौः । हे नावौ । हे नावः ।

दुर्गा आदि शब्द रमा शब्द के, विश्वा आदि आबन्त शब्द सर्वा शब्द के, श्रुति स्मृति आदि शब्द मति शब्द के, गौरी वाणी आदि शब्द नदी शब्द के तुल्य होते हैं ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

हे ज्ञान । हे ज्ञाने । हे ज्ञानानि । हे दधे । हे दधि । हे दधिनी ।
हे ज्ञान । हे दोनों ज्ञानो । हे दधीनि ।
हे ज्ञानो । हे मधो । हे मधु । हे मधुनी ।
हे वारे । हे वारि । हे वारिणी । हे मधूनि ।
हे वारीणि ।

धन वन फल इत्यादि शब्द ज्ञान शब्द के, अस्थि सक्थि अक्षि शब्द दधि शब्द के, अम्बु आदि शब्द मधु शब्द के समान होते हैं ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

हे धुक् । हे धुग् । हे दुहौ । हे षट् ।
हे दुहः । हे अष्टौ । हे अष्ट ।
हे दूहने वाले । हे दोनों दूहने वालो । हे दूहने वालो । हे सम्राट् । हे सम्राड् । हे सम्राजौ । हे सम्राजः ।
हे अनड्वन् । हे अनड्वाहौ । हे अनड्वाहः । हे भूभृत् । हे भूभृतौ । हे भूभृतः ।
हे धीमन् । हे धीमन्तौ । हे धीमन्तः ।
हे चत्वारः ।
हे पञ्च ।

हे गच्छन् । हे गच्छगन्तौ । हे गच्छन्तः ।

हे प्रशान् । हे प्रशामौ । हे प्रशामः ।

हे भुत् । हे बुधौ । हे बुधः ।

हे अग्निमत् । हे अग्निमथौ । हे अग्निमथः ।

हे प्राङ् । हे प्राञ्चौ । हे प्राञ्चः । पूर्ववत् ।

हे उदङ् । हे उदञ्चौ । हे उदञ्चः ।

हे महिमन् । हे महिमानौ । हे महिमानः ।

हे यज्वन् । हे यज्वानौ हे यज्वानः ।

हे युवन् । हे युवानौ । हे युवानः ।

हे राजन् । हे राजानौ । हे राजानः ।

हे दण्डिन् । हे दण्डिनौ । हे दण्डिनः ।

हे पन्थाः । हे पन्थानौ । हे पन्थानः ।

हे वेधः । हे वेधसौ । वेधसः ।

हे विद्वान् । हे विद्वांसौ । हे विद्वांसः ।

हे गरीयन् । हे गरीयांसौ । हे गरीयांसः ।

हे पुमन् । हे पुमांसौ । हे पुमांसः ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

हे द्यौः । हे दिवौ । हे दिवः ।

हे अकाश । हे दोनों आकाशो । हे अकाशो ।

हे चतस्रः ।

हे वाक् । हे वाग् । हे वाचै । हे वाचः ।

हे स्रक् । हे स्रग् । हे स्रजौ । हे स्रजः ।

हे त्विट् । हे त्विड् । हे त्विषौ । हे त्विषः ।

हे गीः । हे गिरौ । हे गिरः ।

हे आपत् । हे आपदौ । हे आपदः ।

हे आपः ।

हे दिक् । हे दिग् । हे दिशौ । हे दिशः ।

पुर् शब्द गिर् शब्द के तुल्य होता है ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

हे वाः । हे वारी । हे वारि । हे अहः । हे अह्नी । हे अहनी ।
हे जल । हे दोनों जलो । हे अहानी ।
हे जलो । हे हविः । हे हविषी । हे हवींषि ।
हे चत्वारि । हे धनुः । हे धनुषी । हे धनूंषि ।

चक्षुस् शब्द धनुस् शब्द के समान आता है ।

हिन्दी शब्द ।

हिन्दी में सम्बोधन की प्रथमा के एक वचन में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द ज्यों के त्यों बने रहते हैं । केवल आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त आकार को एकार होता है । और बहुवचन में ह्रस्व अकारान्त और दीर्घ अकारान्त शब्दों के अन्त स्वरों को ओकार, और ह्रस्व इकारान्त शब्दों के अन्त इकार के आगे यो और दीर्घ ईकारान्त शब्दों के अन्त ईकार के ह्रस्व इकार और उस के आगे यो, और ह्रस्व उकारान्त शब्दों के अन्त उकार के आगे ओ, और दीर्घ ऊकारान्त शब्दों के अन्त ऊकार को ह्रस्व उकार और उस के आगे ओ, और एकारान्त और ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त आकार के आगे ओ का आगम होता है ।

पुल्लिङ्ग ।

एकव॰	बहुवच॰
हे बालक	हे बालको
हे लड़के	हे लड़को
हे मुनि	हे मुनियो
हे माली	हे मालियो

हे साधु	हे साधुश्रो
हे भालू	हे भालुश्रो
हे चौबे	हे चौबोश्रो
हे कोदो	हे कोदोश्रो

स्त्रीलिङ्ग ।

हे बात	हे बातो
हे गैया	हे गैयाश्रो
हे तिथि	हे तिथिश्रो
हे नदी	हे नदियो
हे धेनु	हे धेनुश्रो
हे बहू	हे बहुश्रो
हे सरसों	हे सरसोंश्रो

इति ।





